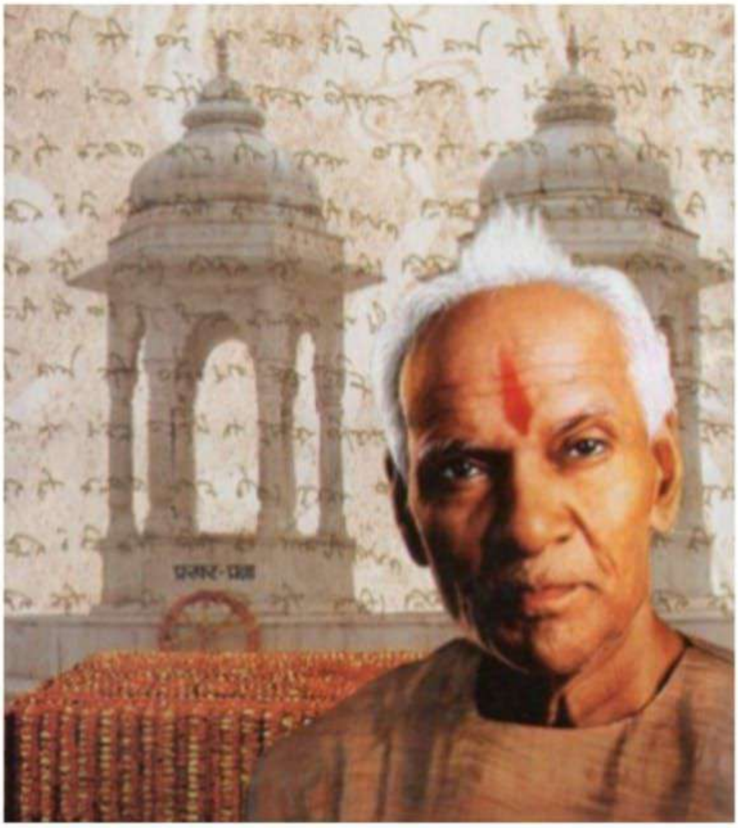
ISBN: 978-93-5937-222-8

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में योगदानः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन



• डॉ. राजीव अग्रवाल

• सुशील कुमार

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में योगदानः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. राजीव अग्रवाल

संकायाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

सुशील कुमार

बी०एल०एड०, एम०ए० (राजनीति विज्ञान)

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में योगदानः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. राजीव अग्रवाल
सुशील कुमार

E-book संस्करण: जून 2026
मूल्य: ₹ 112
ISBN: 978-93-5937222-8

प्रकाशक-
सुशील कुमार
ग्राम एवं पोस्ट- भरुआ सुमेरपुर, जिला- हमीरपुर
(उत्तर प्रदेश)- 210502
Mob- 8840943835
E-mail: Sushilkumarsahu0111@gmail.com

प्राक्कथन

“मनुष्य भटके नहीं, उसे सही राह मिले; समाज बिखरे नहीं, उसे सुदृढ़ संस्कार मिलें–यही शिक्षा का वास्तविक ध्येय है।“

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य तकनीकी और भौतिक रूप से जितना उन्नत दिखाई देता है, नैतिक और मानवीय मूल्यों के धरातल पर उतना ही गंभीर संकट झेल रहा है। आज की शिक्षा प्रणाली सूचनाओं और कौशलों का हस्तांतरण तो सफलतापूर्वक कर रही है, परंतु ‘सा विद्या या विमुक्तये’ और ‘चरित्र निर्माण’ के मूल आदर्शों से कहीं न कहीं विमुख होती प्रतीत हो रही है। नई शिक्षा नीति (NEP 2020) ने इस शून्यता को समझा है और भारतीय ज्ञान परंपरा तथा मूल्यपरक शिक्षा को पुनः केंद्र में लाने का प्रयास किया है।

प्रस्तुत पुस्तक “पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में योगदान: वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता” इसी महती आवश्यकता की पूर्ति की दिशा में एक विनम्र अकादमिक प्रयास है।

युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने न केवल विचार क्रांति का शंखनाद किया, बल्कि बाल शिक्षा और संस्कार निर्माण के व्यावहारिक मॉडलों (जैसे–बाल संस्कार शाला और प्रज्ञा शिशु मंदिर) के माध्यम से समाज को एक नई दिशा दी। उनका मानना था कि बालक समाज की नींव हैं; यदि नींव में ही ‘बीज और वृक्ष की अवधारणा’ के अनुरूप सुदृढ़ संस्कारों का सिंचन किया जाए, तो एक सुसंस्कृत राष्ट्र और ‘युग निर्माण’ का स्वप्न स्वतः साकार हो सकता है।

शोध की रूपरेखा एवं संरचना

इस प्रस्तुत पुस्तक कार्य को व्यवस्थित तार्किक परिणति तक पहुँचाने के लिए इसे सात प्रमुख अध्यायों में विभाजित किया गया है:

प्रथम अध्याय (समस्या एवं उसकी पृष्ठभूमि): इसमें शोध की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि (मूल्यपरक शिक्षा, सामाजिक अधिगम, बाल विकास एवं संस्कार सिद्धांत) को रेखांकित

करते हुए अध्ययन के उद्देश्य, परिकल्पनाओं, पूर्वधारणाओं और शोध प्रविधि के स्वरूप को स्पष्ट किया गया है।

द्वितीय अध्याय (संबन्धित साहित्य का सर्वेक्षण): आचार्य जी के मूल साहित्य, उन पर हुए पूर्व शोधों और चरित्र निर्माण से संबंधित उपलब्ध वांग्मय का व्यापक विश्लेषण कर 'शोध-अंतर' (Research Gap) को खोजा गया है।

तृतीय अध्याय (पं० श्रीराम शर्मा आचार्य: जीवन परिचय एवं कृतित्व): इसमें आचार्य जी के बहुआयामी व्यक्तित्व–एक राष्ट्रभक्त, गृहस्थ, समाज-सुधारक, पत्रकार और शांतिकुंज व ब्रह्मवर्चस जैसी महान संस्थाओं के संस्थापक के रूप में उनके जीवन वृत्त को प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय (पंडित श्रीराम शर्मा का बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण सम्बन्धी साहित्य): इस अध्याय में आचार्य जी द्वारा रचित उन ४० से अधिक विशिष्ट लघु-पुस्तकों, जीवनियों और नीति-कथाओं का विस्तृत विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है जो बालकों के मानसिक व नैतिक विकास के लिए लिखी गई हैं।

पंचम अध्याय (बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में योगदान): यहाँ आचार्य जी के परिवार और विद्यालय आधारित संस्कार निर्माण मॉडलों तथा बाल संस्कार शालाओं की कार्यप्रणाली का वैज्ञानिक व व्यावहारिक मूल्यांकन किया गया है।

षष्ठ अध्याय (वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता): यह अध्याय वर्तमान शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों के मध्य नई शिक्षा नीति (NEP 2020) और आचार्य जी के शैक्षिक विचारों का एक तुलनात्मक व व्यावहारिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

सप्तम अध्याय (निष्कर्ष एवं सुझाव): शोध के अंतिम चरण में प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों और शिक्षा नीति निर्माताओं के लिए अत्यंत व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं, जो भविष्य के शोधार्थियों के लिए नए मार्ग प्रशस्त करेंगे।

यह प्रस्तुत पुस्तक शिक्षाविदों, शिक्षकों, अभिभावकों और नीति निर्माताओं के लिए बालकों के सर्वांगीण चरित्र निर्माण और एक सुसंस्कृत समाज की स्थापना में सहायक सिद्ध होगा, ऐसी मेरी दृढ़ निष्ठा है। सहृदय पाठकों और विद्वानों के रचनात्मक सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

दिनांक- 13/06/2026 **डॉ. राजीव अग्रवाल**

स्थान- भरुआ सुमेरपुर (हमीरपुर) **सुशील कुमार**

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय

समस्या एवं उसकी पृष्ठभूमि

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि
1.2 सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य
1.3 समस्या का प्रादुर्भाव
1.4 समस्या कथन
1.5 प्रमुख पदों का परिभाषीकरण
1.6 अध्ययन का औचित्य
1.7 अध्ययन के उद्देश्य
1.8 परिकल्पनाएँ
1.9 पूर्वधारणाएँ
1.10 अध्ययन का परिसीमांकन
1.11 शोध प्रविधि
1.12 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

प्रथम अध्याय

समस्या एवं उसकी पृष्ठभूमि

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का सबसे सशक्त साधन है। यह केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास का आधार है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसके नागरिकों के चरित्र, संस्कार, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व पर निर्भर करती है। इन सभी गुणों की आधारशिला बाल्यावस्था में रखी जाती है। इसलिए बाल शिक्षा को शिक्षा व्यवस्था का सबसे संवेदनशील और निर्णायक चरण माना जाता है।

भारतीय शिक्षा परंपरा में प्रारंभ से ही विद्या और संस्कार को एक-दूसरे का पूरक माना गया है। प्राचीन गुरुकुल व्यवस्था में शिक्षा का उद्देश्य केवल विषय ज्ञान देना नहीं था, बल्कि बालक के भीतर सत्य, अनुशासन, सेवा, सहिष्णुता, संयम, गुरु-भक्ति और राष्ट्रनिष्ठा जैसे गुणों का विकास करना था। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में यद्यपि ज्ञान और तकनीकी दक्षता का अत्यधिक विकास हुआ है, परंतु मूल्य, नैतिकता और संस्कार के क्षेत्र में गिरावट स्पष्ट रूप से अनुभव की जा रही है। इसी कारण आज के समय में बालकों में अनुशासनहीनता, आक्रामकता, असंवेदनशीलता, पारिवारिक विघटन, डिजिटल व्यसन और सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रतिस्पर्धा, परीक्षा-केंद्रित अधिगम और व्यवसायिकता पर अधिक बल दिए जाने के कारण बालकों के चरित्र निर्माण और मूल्यपरक विकास की उपेक्षा हुई है। नई शिक्षा नीति 2020 ने भी इस तथ्य को स्वीकार करते हुए शिक्षा को समग्र विकास, जीवन कौशल, नैतिक मूल्यों और भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ने पर बल दिया है। इस संदर्भ में ऐसे शिक्षाविदों और चिंतकों के विचारों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है, जिन्होंने शिक्षा को संस्कार और जीवन निर्माण का माध्यम माना हो।

इसी वैचारिक परिप्रेक्ष्य में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का शिक्षा दर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने शिक्षा को केवल जानकारी प्राप्त करने का माध्यम न मानकर "मनुष्य निर्माण की प्रक्रिया" कहा। उनका स्पष्ट मत था कि शिक्षा तभी सार्थक है जब वह बालक में सद्गुण, सदाचार, आत्मानुशासन,

सेवा-भाव, राष्ट्रप्रेम और आध्यात्मिक चेतना का विकास करे। उनके शिक्षा दर्शन का विद्यार्थियों के मूल्य-उन्मुखीकरण पर सकारात्मक प्रभाव शोधों में भी पाया गया है।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने अपने साहित्य, युग निर्माण आंदोलन, शांतिकुंज, प्रज्ञा शिशु मंदिरों, बाल संस्कार शालाओं तथा देव संस्कृति आधारित शैक्षिक संस्थानों के माध्यम से बाल शिक्षा को संस्कारमूलक आधार प्रदान किया। उन्होंने विशेष रूप से इस बात पर बल दिया कि बालक का व्यक्तित्व गर्भावस्था से ही निर्माण होना प्रारंभ हो जाता है, इसलिए परिवार, माता-पिता, विद्यालय और सामाजिक वातावरण की भूमिका अत्यंत निर्णायक होती है। उनके विचारों के आधार पर स्थापित शैक्षिक संस्थानों का उद्देश्य छात्रों को नैतिक, संवेदनशील, आत्मानुशासित और समाजोपयोगी व्यक्तित्व के रूप में विकसित करना है।

आचार्य जी ने परिवार को बालक का प्रथम विद्यालय तथा माता-पिता को प्रथम शिक्षक माना। उनका विश्वास था कि बालक अपने प्रारंभिक जीवन में अनुकरण के माध्यम से सीखता है, इसलिए घर का वातावरण, पारिवारिक व्यवहार, धार्मिक-सांस्कृतिक परंपराएँ, प्रार्थना, कथा-कहानियाँ और दैनिक अनुशासन संस्कार निर्माण में अत्यंत प्रभावी होते हैं। इसी दृष्टि से उन्होंने षोडश संस्कारों, बाल संस्कार शालाओं, नैतिक कथाओं, प्रार्थना, योग, स्वाध्याय और सेवा कार्यों को बाल शिक्षा का आवश्यक अंग माना।

वर्तमान समय में जब शिक्षा के क्षेत्र में मूल्य संकट (Value Crisis) और चरित्र ह्रास (Character Erosion) जैसी समस्याएँ गंभीर रूप से उभर रही हैं, तब पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के विचार अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होते हैं। उनका शिक्षा दर्शन भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता, आधुनिक मनोविज्ञान और व्यवहारिक जीवन मूल्यों का समन्वित स्वरूप प्रस्तुत करता है। इसलिए बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के क्षेत्र में उनके योगदान का अध्ययन वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को नई दिशा प्रदान कर सकता है।

अतः प्रस्तुत शोध की पृष्ठभूमि इस तथ्य पर आधारित है कि बालकों में बढ़ती संस्कारहीनता, सामाजिक असंतुलन, नैतिक मूल्यों के ह्रास तथा शिक्षा के यांत्रिक स्वरूप के बीच पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का संस्कारमूलक शिक्षा दर्शन एक प्रभावी वैकल्पिक मॉडल के रूप में उभरता है। यह अध्ययन उनके शैक्षिक विचारों, व्यावहारिक योगदान और वर्तमान शिक्षा में उनकी उपयोगिता को समझने का प्रयास है।

1.2 सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य (Theoretical Perspective)

प्रस्तुत अध्ययन का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य **मूल्यपरक शिक्षा, चरित्र निर्माण, सामाजिक अधिगम, बाल विकास तथा भारतीय शिक्षा दर्शन** के सिद्धांतों पर आधारित है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का शिक्षा दर्शन इन सभी आयामों का समन्वित रूप प्रस्तुत करता है।

1.2.1 मूल्यपरक शिक्षा का सिद्धांत

शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य बालक में **सत्य, ईमानदारी, अनुशासन, सहिष्णुता, सेवा और करुणा** जैसे मूल्यों का विकास करना है। आचार्य जी ने स्पष्ट कहा कि शिक्षा तभी सार्थक है जब वह व्यक्ति के व्यवहार और चरित्र में परिवर्तन लाए। विद्यार्थियों के मूल्य-उन्मुखीकरण पर उनके शिक्षा दर्शन का सकारात्मक प्रभाव शोधों में भी पाया गया है।

1.2.2 सामाजिक अधिगम सिद्धांत (Social Learning Theory)

बालक अनुकरण द्वारा सीखता है। परिवार, शिक्षक, सहपाठी और सामाजिक वातावरण उसके व्यवहार को प्रभावित करते हैं। आचार्य जी ने परिवार को **प्रथम विद्यालय** तथा माता-पिता को **प्रथम शिक्षक** माना। यह दृष्टिकोण सामाजिक अधिगम सिद्धांत से मेल खाता है, जिसमें बालक **observational learning** के माध्यम से मूल्य और व्यवहार सीखता है।

1.2.3 बाल विकास सिद्धांत

बाल्यावस्था में व्यक्तित्व की नींव रखी जाती है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों जैसे पियाजे, विगोत्स्की और एरिक्सन ने भी प्रारंभिक अनुभवों को निर्णायक माना है। आचार्य जी का यह विचार कि **बालक का निर्माण गर्भावस्था और प्रारंभिक परिवेश से प्रारंभ हो जाता है**, आधुनिक developmental psychology से साम्य रखता है।

1.2.4 भारतीय शिक्षा दर्शन

भारतीय परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य **विद्या, विनय, चरित्र और आत्मबोध** रहा है। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा ज्ञान और संस्कार दोनों का माध्यम थी। आचार्य जी ने इसी परंपरा को आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित करते हुए **बाल संस्कार शालाएँ, प्रज्ञा शिशु मंदिर और देव संस्कृति आधारित शिक्षा मॉडल** प्रस्तुत किया।

1.2.5 संस्कार सिद्धांत

संस्कार व्यक्ति के व्यक्तित्व को दिशा देने वाले स्थायी प्रभाव हैं। आचार्य जी ने **षोडश संस्कारों के वैज्ञानिक पुनर्व्याख्यान** तथा आधुनिक परिस्थितियों के अनुरूप उनके व्यवहारिक उपयोग पर विशेष बल दिया।

1.3 समस्या का प्रादुर्भाव (Emergence of the Problem)

वर्तमान युग विज्ञान, तकनीक, सूचना एवं संचार का युग है। शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान, सूचना, तकनीकी दक्षता तथा प्रतियोगी दृष्टिकोण का तीव्र विकास हुआ है। विद्यालयों में आधुनिक शिक्षण विधियाँ, डिजिटल संसाधन, स्मार्ट कक्षाएँ तथा कौशल आधारित अधिगम को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके बावजूद यह देखा जा रहा है कि बालकों में **नैतिक मूल्यों, अनुशासन, सामाजिक संवेदनशीलता, कर्तव्यबोध और चारित्रिक दृढ़ता** का स्तर अपेक्षाकृत कम होता जा रहा है।

आज समाज में बढ़ती **अनुशासनहीनता, हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ, असहिष्णुता, पारिवारिक विघटन, डिजिटल व्यसन, आत्मकेन्द्रितता और सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी** जैसी समस्याएँ इस बात का संकेत देती हैं कि शिक्षा के वर्तमान स्वरूप में **संस्कार निर्माण का पक्ष कमजोर पड़ गया है।** यही स्थिति इस शोध समस्या के प्रादुर्भाव का मूल कारण है।

बालक राष्ट्र की भावी शक्ति होता है। उसका व्यक्तित्व, आचरण और जीवन-दृष्टि बाल्यावस्था में ही निर्मित होती है। यदि इस अवस्था में उसे केवल सूचनात्मक ज्ञान दिया जाए और **चरित्र, मूल्य एवं संस्कार** की उपेक्षा की जाए, तो उसके व्यक्तित्व का विकास एकांगी हो जाता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में यही समस्या स्पष्ट दिखाई देती है कि **अकादमिक उपलब्धि पर अत्यधिक बल है, परंतु व्यक्तित्व निर्माण और नैतिक विकास अपेक्षाकृत उपेक्षित हैं।**

इसी संदर्भ में शोधकर्ता ने अनुभव किया कि भारतीय चिंतन परंपरा में ऐसे शिक्षाविदों और दार्शनिकों के विचारों का अध्ययन आवश्यक है, जिन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि **जीवन निर्माण और संस्कार निर्माण** का माध्यम माना। इस दृष्टि से **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य** का शिक्षा दर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। उन्होंने शिक्षा का उद्देश्य **"मनुष्य में देवत्व का विकास"**, **चरित्र निर्माण**, **संस्कार संवर्धन** तथा **राष्ट्र निर्माण** माना।

आचार्य जी का मत था कि बाल्यावस्था में दिए गए संस्कार ही भविष्य के व्यक्तित्व को स्थायी दिशा देते हैं। परिवार, विद्यालय और समाज यदि संयुक्त रूप से बालक को **सत्य, अनुशासन, सेवा, करुणा,**

सहिष्णुता, राष्ट्रप्रेम और आध्यात्मिक चेतना से जोड़ें, तो वह एक आदर्श नागरिक बन सकता है। परंतु वर्तमान सामाजिक परिवेश में परिवारों का विघटन, अभिभावकों की व्यस्तता, डिजिटल माध्यमों का अत्यधिक प्रभाव तथा प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा ने बालकों के संस्कार निर्माण को चुनौतीपूर्ण बना दिया है।

शोधकर्ता ने यह भी देखा कि नई शिक्षा नीति 2020 में **समग्र विकास, मूल्य शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा और जीवन कौशल** पर विशेष बल दिया गया है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक शिक्षा भी अब केवल सूचना आधारित न रहकर **मूल्य एवं संस्कार आधारित शिक्षा** की आवश्यकता को स्वीकार कर रही है। ऐसे समय में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा संबंधी विचार और संस्कार निर्माण की अवधारणा का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

समस्या का प्रादुर्भाव इस तथ्य से भी जुड़ा है कि यद्यपि आचार्य जी के साहित्य, युग निर्माण योजना, बाल संस्कार शालाओं तथा शैक्षिक संस्थानों पर सामान्य अध्ययन उपलब्ध हैं, फिर भी **बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के विशिष्ट संदर्भ में केंद्रित शोध अपेक्षाकृत कम** दिखाई देते हैं। यह **शोध-अंतर (Research Gap)** भी इस समस्या के चयन का एक महत्वपूर्ण कारण है।

अतः वर्तमान शिक्षा में बढ़ती **मूल्यहीनता, चरित्र संकट, अनुशासनहीनता और संस्कारहीनता** की समस्याओं को देखते हुए यह शोध समस्या स्वाभाविक रूप से उभरकर सामने आती है कि–

"पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण संबंधी विचारों एवं योगदान का अध्ययन किस प्रकार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को दिशा प्रदान कर सकता है?"

यही प्रश्न इस शोध समस्या के प्रादुर्भाव का मूल आधार है।

1.4 समस्या कथन (Statement of the Problem)

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में ज्ञान, सूचना, तकनीकी दक्षता तथा प्रतियोगी दृष्टिकोण को अत्यधिक महत्त्व दिया जा रहा है। विद्यालयों में बालकों के बौद्धिक विकास, विषयगत उपलब्धि और परीक्षा-उन्मुख अधिगम पर विशेष बल है, परंतु इसके साथ-साथ यह भी देखा जा रहा है कि **नैतिक मूल्य, अनुशासन, चरित्र निर्माण, सामाजिक संवेदनशीलता और संस्कार विकास** जैसे पक्ष अपेक्षाकृत उपेक्षित होते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बालकों में अनुशासनहीनता, आक्रामकता, असहिष्णुता, सामाजिक उत्तरदायित्व की कमी, पारिवारिक मूल्यों से दूरी तथा डिजिटल प्रभाव के कारण व्यवहारगत असंतुलन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं।

बाल्यावस्था व्यक्ति के जीवन का वह आधारभूत चरण है जिसमें उसकी आदतें, दृष्टिकोण, मूल्य, व्यवहार, व्यक्तित्व और जीवन-दर्शन की नींव रखी जाती है। यदि इस अवस्था में बालक को केवल पुस्तक-आधारित ज्ञान दिया जाए और **संस्कार, नैतिकता तथा चारित्रिक विकास** की उपेक्षा की जाए, तो उसके व्यक्तित्व का समग्र विकास बाधित हो सकता है। यही कारण है कि आधुनिक शिक्षा के संदर्भ में **मूल्यपरक एवं संस्कारमूलक शिक्षा** की आवश्यकता अत्यधिक अनुभव की जा रही है।

भारतीय शिक्षा परंपरा में सदैव शिक्षा को **विद्या और संस्कार का समन्वित माध्यम** माना गया है। गुरुकुल प्रणाली में बालकों को ज्ञान के साथ-साथ अनुशासन, सेवा, संयम, कर्तव्यपरायणता और सामाजिक उत्तरदायित्व के संस्कार दिए जाते थे। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में इस परंपरा का क्षय होने से मूल्य संकट की स्थिति उत्पन्न हुई है। ऐसी परिस्थिति में उन शिक्षाविदों और विचारकों के योगदान का अध्ययन आवश्यक हो जाता है, जिन्होंने शिक्षा को **जीवन निर्माण और चरित्र निर्माण** का माध्यम माना।

इसी संदर्भ में **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य** का शिक्षा दर्शन विशेष महत्त्व रखता है। उन्होंने शिक्षा को केवल सूचना प्राप्ति की प्रक्रिया न मानकर **"मनुष्य निर्माण की साधना"** के रूप में देखा। उनके अनुसार बाल शिक्षा का उद्देश्य बालक के भीतर **सत्य, अनुशासन, सेवा, करुणा, आत्मसंयम, राष्ट्रप्रेम और आध्यात्मिक चेतना** का विकास करना है। उन्होंने परिवार को प्रथम विद्यालय, माता-पिता को प्रथम शिक्षक तथा विद्यालय को संस्कार निर्माण की प्रयोगशाला माना।

आचार्य जी के द्वारा स्थापित **बाल संस्कार शालाएँ, प्रज्ञा शिशु मंदिर, युग निर्माण योजना तथा देव संस्कृति आधारित शैक्षिक संस्थान** उनके विचारों के व्यवहारिक स्वरूप को प्रस्तुत करते हैं। इन संस्थानों का उद्देश्य बालकों को केवल विषय ज्ञान देना नहीं, बल्कि उन्हें **संस्कारवान, अनुशासित, नैतिक और समाजोपयोगी व्यक्तित्व** के रूप में विकसित करना है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बढ़ती मूल्यहीनता, चरित्र संकट और सामाजिक असंतुलन को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण संबंधी विचारों और योगदान का गहन अध्ययन किया जाए, ताकि यह समझा जा सके कि उनके शैक्षिक सिद्धांत आज की शिक्षा समस्याओं के समाधान में किस प्रकार उपयोगी हो सकते हैं।

अतः प्रस्तुत शोध की समस्या को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है–

"बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के संदर्भ में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक विचारों, सिद्धांतों, संस्थागत प्रयासों तथा वर्तमान शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता का समालोचनात्मक अध्ययन।"

1.5 प्रमुख पदों की परिभाषीकरण

किसी भी शोध में प्रयुक्त प्रमुख शब्दों की स्पष्ट परिभाषा देना आवश्यक होता है, ताकि उनके अर्थ शोध के संदर्भ में निश्चित और सीमित हो सकें। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त प्रमुख शब्दों की कार्यात्मक परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं–

1.5.1 पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य

इस अध्ययन में **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य** से आशय आधुनिक भारत के प्रसिद्ध युगदृष्टा, शिक्षाविद्, दार्शनिक एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक से है, जिन्होंने शिक्षा को **मानव निर्माण, चरित्र निर्माण और संस्कार विकास** का माध्यम माना तथा बाल शिक्षा के क्षेत्र में संस्थागत एवं वैचारिक योगदान दिया।

1.5.2 बाल शिक्षा

इस शोध में **बाल शिक्षा** से आशय बाल्यावस्था में बालक के **शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास** हेतु दी जाने वाली औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा से है। इसमें परिवार, विद्यालय और सामाजिक वातावरण के माध्यम से प्राप्त अधिगम भी सम्मिलित है।

1.5.3 संस्कार

प्रस्तुत अध्ययन में **संस्कार** से तात्पर्य उन स्थायी नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रभावों से है, जो बालक के व्यक्तित्व, व्यवहार, दृष्टिकोण और जीवन-मूल्यों को दिशा प्रदान करते हैं। इसमें सत्य, अनुशासन, सेवा, करुणा, सहिष्णुता, राष्ट्रप्रेम और आत्मसंयम जैसे गुण सम्मिलित हैं।

1.5.4 संस्कार निर्माण

इस शोध में **संस्कार निर्माण** से आशय बालक में श्रेष्ठ आदतों, नैतिक मूल्यों, अनुशासन, चारित्रिक दृढ़ता और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास की सुनियोजित प्रक्रिया से है, जो परिवार, विद्यालय और समाज के संयुक्त प्रयासों से संपन्न होती है।

1.5.5 योगदान

यहाँ **योगदान** से आशय पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के क्षेत्र में दिए गए **वैचारिक, साहित्यिक, संस्थागत और व्यवहारिक प्रयासों** से है।

1.5.6 मूल्यपरक शिक्षा

इस अध्ययन में **मूल्यपरक शिक्षा** का अर्थ ऐसी शिक्षा से है, जो बालकों में सत्य, ईमानदारी, अनुशासन, सहयोग, सहानुभूति, सेवा और नैतिकता जैसे मूल्यों का विकास करे।

1.5.7 चरित्र निर्माण

चरित्र निर्माण से आशय बालक में सदाचार, आत्मसंयम, सत्यनिष्ठा, कर्तव्यपरायणता और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे स्थायी गुणों के विकास से है।

1.6 अध्ययन का औचित्य (Rationale / Justification of the Study)

प्रस्तुत अध्ययन का औचित्य वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में उत्पन्न **मूल्य संकट, नैतिक पतन और चरित्र ह्रास** की समस्याओं से जुड़ा हुआ है।

आज की शिक्षा में–

- परीक्षा-केंद्रित अधिगम
- तकनीकी दक्षता
- प्रतिस्पर्धा
- करियर उन्मुखता पर अत्यधिक बल है, जबकि **संस्कार, चरित्र, अनुशासन और सामाजिक उत्तरदायित्व** की उपेक्षा हो रही है।

इसी कारण बालकों में–

- अनुशासनहीनता
- आक्रामकता
- डिजिटल व्यसन
- पारिवारिक दूरी
- सामाजिक असंवेदनशीलता
- नैतिक भ्रम जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं।

ऐसी परिस्थिति में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के विचार अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं, क्योंकि उन्होंने शिक्षा को **मानव निर्माण और व्यक्तित्व परिष्कार** का माध्यम माना। उनके द्वारा विकसित **बाल संस्कार शाला मॉडल, परिवार आधारित शिक्षा, योग, प्रार्थना, स्वाध्याय, नैतिक कथा और सेवा कार्य** आज के शिक्षा संकट का व्यवहारिक समाधान प्रस्तुत करते हैं।

इस अध्ययन का औचित्य निम्न बिंदुओं में निहित है–

1.6.1 मूल्य संकट के समाधान हेतु

आधुनिक शिक्षा में नैतिक मूल्यों के ह्रास को देखते हुए उनके संस्कारमूलक शिक्षा दर्शन का अध्ययन आवश्यक है।

1.6.2 बाल शिक्षा के वैकल्पिक मॉडल हेतु

उनका बाल संस्कार शाला एवं परिवार आधारित मॉडल शिक्षा के लिए प्रभावी विकल्प प्रस्तुत करता है।

1.6.3 नई शिक्षा नीति 2020 की प्रासंगिकता

NEP 2020 में **समग्र विकास, भारतीय ज्ञान परंपरा और मूल्य शिक्षा** पर बल दिया गया है, जो उनके विचारों से मेल खाता है।

1.6.4 शिक्षक-शिक्षा में उपयोगिता

B.Ed./M.Ed. स्तर पर भावी शिक्षकों के लिए यह अध्ययन मूल्य-आधारित शिक्षण की दिशा देता है।

1.6.5 शोध-अंतर (Research Gap)

आचार्य जी के शिक्षा दर्शन पर सामान्य अध्ययन उपलब्ध हैं, परंतु **बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के विशिष्ट संदर्भ में केंद्रित अध्ययन अपेक्षाकृत कम** हैं। यही इस शोध का औचित्य सिद्ध करता है।

1.7 अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

किसी भी शोध का उद्देश्य उस अध्ययन की दिशा, सीमा और अपेक्षित निष्कर्षों को स्पष्ट करना होता है। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण संबंधी विचारों, सिद्धांतों तथा व्यावहारिक योगदान का अध्ययन करना** है।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यहीनता, अनुशासनहीनता, चारित्रिक संकट और सामाजिक असंतुलन जैसी समस्याओं को देखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि ऐसे शिक्षाविदों के विचारों का अध्ययन किया जाए, जिन्होंने शिक्षा को **व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक विकास और संस्कार संवर्धन** का माध्यम माना हो। इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

प्रमुख उद्देश्य

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में योगदान का शैक्षिक अध्ययन करना।

विशिष्ट उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा संबंधी विचारों का अध्ययन करना।
2. संस्कार निर्माण में उनके योगदान का विश्लेषण करना।
3. परिवार एवं विद्यालय की भूमिका संबंधी उनके दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
4. बाल संस्कार शालाओं एवं संस्थागत प्रयासों का मूल्यांकन करना।
5. वर्तमान शिक्षा में उनके विचारों की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
6. मूल्यपरक शिक्षा में उनके योगदान के शैक्षिक निहितार्थ स्पष्ट करना।

1.8 परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

परिकल्पना किसी भी शोध का एक महत्वपूर्ण घटक होती है। यह शोधकर्ता द्वारा समस्या के संबंध में पूर्वानुमानित कथन होता है, जिसकी सत्यता का परीक्षण अध्ययन के माध्यम से किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाएँ इस आधार पर निर्मित की गई हैं कि **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का शिक्षा दर्शन बाल शिक्षा को संस्कार, नैतिकता और चरित्र निर्माण से जोड़ता है।**

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बढ़ती मूल्यहीनता, अनुशासनहीनता तथा सामाजिक असंतुलन को देखते हुए यह माना जाता है कि आचार्य जी के विचार आज भी बाल शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

मुख्य परिकल्पना

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण संबंधी विचार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यपरक शिक्षा, चरित्र निर्माण और बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रभावी एवं प्रासंगिक हैं।

विशिष्ट परिकल्पनाएँ (Specific Hypotheses)

परिकल्पना - 1

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा संबंधी विचार बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक हैं।

व्याख्या:

यह परिकल्पना इस धारणा पर आधारित है कि आचार्य जी ने बाल शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रखा, बल्कि शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास पर बल दिया। इसलिए यह अनुमान लगाया जाता है कि उनके विचार holistic development को बढ़ावा देते हैं।

परिकल्पना - 2

संस्कार निर्माण संबंधी उनके सिद्धांत बालकों के चरित्र निर्माण और नैतिक विकास में सकारात्मक भूमिका निभाते हैं।

व्याख्या:

आचार्य जी ने सत्य, अनुशासन, सेवा, सहिष्णुता, करुणा, राष्ट्रप्रेम और आत्मसंयम जैसे मूल्यों को बाल शिक्षा का आधार माना। इसलिए यह परिकल्पना स्थापित की जाती है कि उनके संस्कार सिद्धांत बालकों में नैतिक गुणों के विकास में सहायक हैं।

परिकल्पना - 3

परिवार को प्रथम विद्यालय और माता-पिता को प्रथम शिक्षक मानने का उनका दृष्टिकोण बाल संस्कार निर्माण में प्रभावी है।

व्याख्या:

इस परिकल्पना का आधार यह विचार है कि बालक सबसे पहले परिवार से व्यवहार, भाषा, अनुशासन और नैतिकता सीखता है। अतः यदि परिवार आचार्य जी के बताए संस्कारमूलक सिद्धांतों का पालन करे, तो बालक का व्यक्तित्व अधिक संतुलित और मूल्यनिष्ठ होगा।

परिकल्पना - 4

विद्यालय को संस्कार निर्माण की प्रयोगशाला मानने की अवधारणा वर्तमान शिक्षा में मूल्य संकट के समाधान हेतु उपयोगी है।

व्याख्या:

विद्यालयी प्रार्थना, योग, प्रेरक कथाएँ, सेवा कार्य, स्वच्छता अभियान और सामूहिक गतिविधियाँ बालकों में अनुशासन तथा सामाजिक उत्तरदायित्व विकसित करती हैं। इसलिए यह माना जाता है कि विद्यालय आधारित उनका मॉडल आज भी प्रासंगिक है।

परिकल्पना - 5

बाल संस्कार शालाएँ, प्रज्ञा शिशु मंदिर तथा अन्य संस्थागत प्रयास बालकों में नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास में प्रभावी हैं।

व्याख्या:

यह परिकल्पना आचार्य जी के व्यावहारिक शैक्षिक प्रयासों पर आधारित है। उनके संस्थानों में प्रार्थना, योग, नैतिक कथा, समूह कार्य और सेवा गतिविधियाँ संस्कार निर्माण का सशक्त माध्यम मानी जाती हैं।

परिकल्पना - 6

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक विचार नई शिक्षा नीति 2020 के समग्र विकास, मूल्य शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपरा के उद्देश्यों से साम्य रखते हैं।

व्याख्या:

नई शिक्षा नीति में experiential learning, value education, Indian ethos और holistic development पर बल दिया गया है, जो आचार्य जी के विचारों से मेल खाते हैं। इसलिए यह परिकल्पना शोध में विशेष रूप से उपयोगी होगी।

परिकल्पना - 7

आचार्य जी के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण संबंधी विचार आधुनिक शिक्षा में बढ़ती अनुशासनहीनता, मूल्यहीनता और डिजिटल प्रभाव की समस्याओं के समाधान में सहायक हैं।

व्याख्या:

आज की शिक्षा में moral crisis को देखते हुए यह माना जाता है कि उनके विचार व्यवहारिक समाधान प्रदान कर सकते हैं।

कार्यपरक परिकल्पना (Working Hypothesis)

"पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण संबंधी सिद्धांत वर्तमान शिक्षा में मूल्यपरकता, अनुशासन, चरित्र निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास हेतु प्रभावी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।"

1.9 पूर्वधारणाएँ (Assumptions)

1.9.1 बीज और वृक्ष की अवधारणा (Seed and Tree Concept)

इस अध्ययन की मुख्य पूर्वधारणा यह है कि बालक राष्ट्र की आधारशिला है। पंडित श्रीराम शर्मा का मानना था कि यदि नींव (बचपन) को संस्कारों से सींचा जाए, तो भविष्य का समाज स्वतः ही श्रेष्ठ बनेगा।

पूर्वधारणा: बालक एक 'कोरी पट्टी' (Tabula Rasa) न होकर एक 'जीवंत बीज' है, जिसमें अनंत क्षमताएं सुशुप्त हैं।

1.9.2 शिक्षा और विद्या का समन्वय

अध्ययन इस आधार पर टिका है कि केवल साक्षरता (Information) पर्याप्त नहीं है। पंडित जी ने 'शिक्षा' (जीविकोपार्जन हेतु) और 'विद्या' (आत्मिक विकास हेतु) के समन्वय पर जोर दिया।

पूर्वधारणा: आधुनिक शिक्षा प्रणाली केवल मस्तिष्क का विकास करती है, जबकि संस्कार निर्माण हृदय को परिष्कृत करता है।

1.9.3 अभिभावक और वातावरण की भूमिका

अध्ययन यह मानकर चलता है कि बालक का निर्माण केवल स्कूल में नहीं, बल्कि घर के वातावरण में होता है।

पूर्वधारणा: "शिक्षण नहीं, आचरण" अधिक प्रभावी है। माता-पिता का व्यक्तित्व ही बालक के लिए सबसे बड़ी पाठ्यपुस्तक है।

1.9.4 मनोवैज्ञानिक रूपांतरण (Psychological Transformation)

पंडित जी ने बालकों के लिए 'बाल निर्माण की कहानियों' और 'सचित्र साहित्य' का सृजन किया।

पूर्वधारणा: उपदेशों की तुलना में कहानियों, खेल और मनोरंजन के माध्यम से दिए गए संस्कार अवचेतन मन (Subconscious mind) पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

1.9.5 युग निर्माण योजना का अंग

यह अध्ययन इस विचार पर आधारित है कि "व्यक्ति निर्माण" से ही "विश्व परिवर्तन" संभव है।

पूर्वधारणा: यदि नई पीढ़ी का वैचारिक और नैतिक नव-निर्माण कर दिया जाए, तो समाज की अधिकांश कुरीतियों का अंत स्वतः हो जाएगा।

1.10 अध्ययन का परिसीमांकन (Delimitation of the Study)

किसी भी शोध को वैज्ञानिकता, स्पष्टता एवं व्यवस्थितता प्रदान करने के लिए उसका एक निश्चित परिसीमन आवश्यक होता है। परिसीमांकन से शोध का क्षेत्र, विषय-वस्तु, स्रोत, समय और पद्धति स्पष्ट हो जा1ती है। प्रस्तुत अध्ययन **"पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में योगदान"** से संबंधित है, अतः इसे निम्न सीमाओं में परिसीमित किया गया है–

1.10.1 विषयगत परिसीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन केवल **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण संबंधी विचारों, सिद्धांतों तथा योगदान** तक सीमित रहेगा।

उनके संपूर्ण दर्शन, आध्यात्मिक साधना, सामाजिक आंदोलन, राष्ट्र निर्माण संबंधी व्यापक विचारों या धार्मिक गतिविधियों का विस्तृत अध्ययन इसमें सम्मिलित नहीं किया जाएगा, जब तक कि उनका प्रत्यक्ष संबंध **बाल शिक्षा और संस्कार निर्माण** से न हो।

1.10.2 वैचारिक परिसीमांकन

यह अध्ययन विशेष रूप से निम्न वैचारिक पक्षों तक सीमित रहेगा–

1. बाल शिक्षा की अवधारणा
2. संस्कार निर्माण की प्रक्रिया

3. नैतिक एवं चारित्रिक विकास
4. परिवार की भूमिका
5. विद्यालय की भूमिका
6. मूल्यपरक शिक्षा
7. बाल संस्कार शालाओं का योगदान

1.10.3 स्रोत संबंधी परिसीमांकन

अध्ययन मुख्यतः निम्न स्रोतों तक सीमित रहेगा–

(क) प्राथमिक स्रोत

- पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के मूल ग्रंथ
- युग निर्माण योजना साहित्य
- शांतिकुंज प्रकाशन
- बाल संस्कार शाला सामग्री
- भाषण, प्रवचन एवं लेख

(ख) द्वितीयक स्रोत

- शोध प्रबंध
- शोध पत्र
- शिक्षा दर्शन संबंधी पुस्तकें
- जर्नल एवं पत्रिकाएँ
- संस्थागत दस्तावेज

1.10.4 संस्थागत परिसीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन में आचार्य जी द्वारा स्थापित या प्रेरित निम्न संस्थागत प्रयासों का अध्ययन किया जाएगा–

- **बाल संस्कार शालाएँ**
- **प्रज्ञा शिशु मंदिर**
- **शांतिकुंज, हरिद्वार**
- **देव संस्कृति विश्वविद्यालय से संबंधित शैक्षिक गतिविधियाँ**

1.10.5 समयगत परिसीमांकन

यह अध्ययन मुख्यतः **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के जीवनकाल में विकसित शैक्षिक विचारों** तथा **वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में उनकी प्रासंगिकता** तक सीमित रहेगा।

अर्थात इसमें उनके विचारों का ऐतिहासिक विकास और आधुनिक शिक्षा में उपयोगिता दोनों सम्मिलित होंगे, परंतु अत्यधिक व्यापक सामाजिक-राजनीतिक विस्तार नहीं किया जाएगा।

1.10.6 पद्धतिगत परिसीमांकन

यह शोध **गुणात्मक, दार्शनिक एवं ऐतिहासिक शोध पद्धति** तक सीमित रहेगा। इसमें–

- सांख्यिकीय सर्वेक्षण
- प्रश्नावली आधारित डेटा
- प्रयोगात्मक अध्ययन
- मात्रात्मक विश्लेषण

का उपयोग नहीं किया जाएगा।

1.10.7 शैक्षिक परिसीमांकन

यह अध्ययन केवल **बाल शिक्षा (प्रारंभिक एवं आधारभूत स्तर)** तथा उससे संबंधित **संस्कार निर्माण के आयामों** तक सीमित रहेगा। उच्च शिक्षा, वयस्क शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा को इसमें शामिल नहीं किया जाएगा।

1.10.8 भाषागत परिसीमांकन

यह अध्ययन केवल पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा हिन्दी भाषा में लिखित साहित्य तक सीमित रहेगा। अन्य भारतीय भाषाओं एवं अंग्रेजी में लिखित साहित्य को अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया जायेगा।

1.11 शोध प्रविधि (Research Methodology)

किसी भी शोध की सफलता उसकी उपयुक्त शोध प्रविधि पर निर्भर करती है। शोध प्रविधि वह वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शोधकर्ता समस्या का अध्ययन कर तथ्य एकत्रित करता है, उनका विश्लेषण करता है और निष्कर्ष तक पहुँचता है। प्रस्तुत अध्ययन **"पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में योगदान"** से संबंधित है, जो मुख्यतः उनके **शैक्षिक विचारों, साहित्य, संस्थागत प्रयासों तथा वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता** के अध्ययन पर आधारित है। इसलिए इस शोध के लिए **गुणात्मक (Qualitative), दार्शनिक (Philosophical) एवं ऐतिहासिक (Historical) शोध प्रविधि** का चयन किया गया है।

1.11.1 शोध का प्रकार (Type of Research)

प्रस्तुत अध्ययन **गुणात्मक शोध (Qualitative Research)** की श्रेणी में आता है। इसमें संख्यात्मक आँकड़ों की अपेक्षा **विचारों, सिद्धांतों, साहित्य, मूल्यों, शैक्षिक अवधारणाओं और संस्थागत योगदान** का विश्लेषण किया गया।

यह शोध निम्न प्रकार का है–

1. **दार्शनिक शोध** - शिक्षा, संस्कार और चरित्र निर्माण संबंधी विचारों का अध्ययन
2. **ऐतिहासिक शोध** - आचार्य जी के जीवन, साहित्य और संस्थागत विकास का अध्ययन
3. **वर्णनात्मक शोध** - बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में योगदान का व्यवस्थित वर्णन
4. **विश्लेषणात्मक शोध** - वर्तमान शिक्षा में उपयोगिता एवं प्रासंगिकता का अध्ययन

1.11.2 शोध प्रविधि का स्वरूप (Nature of Research Methodology)

इस अध्ययन में मुख्यतः निम्न शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है–

(क) दार्शनिक प्रविधि

इस प्रविधि के अंतर्गत पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के **शिक्षा दर्शन, बाल शिक्षा संबंधी विचार, संस्कार निर्माण की अवधारणा, नैतिकता एवं चरित्र निर्माण** के सिद्धांतों का अध्ययन किया गया है।

इसमें उनके ग्रंथों, लेखों और वैचारिक साहित्य का विश्लेषण किया गया है।

(ख) ऐतिहासिक प्रविधि

ऐतिहासिक शोध का उद्देश्य अतीत के तथ्यों के आधार पर वर्तमान को समझना होता है। दियाइस प्रविधि के माध्यम से आचार्य जी के जीवन, युग निर्माण योजना, शांतिकुंज, बाल संस्कार शालाओं, प्रज्ञा शिशु मंदिरों तथा अन्य शैक्षिक संस्थागत प्रयासों का अध्ययन किया गया है।

(ग) विषयवस्तु विश्लेषण प्रविधि

इसमें उनके साहित्य, पुस्तकों, भाषणों, शोध-पत्रों, संस्थागत दस्तावेजों तथा शिक्षा संबंधी लेखों का **Content Analysis** किया गया है।

1.11.3 डेटा संकलन के स्रोत (Sources of Data Collection)

(क) प्राथमिक स्रोत

1. पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के मूल ग्रंथ
2. युग निर्माण योजना साहित्य
3. शांतिकुंज प्रकाशन
4. बाल संस्कार शाला सामग्री
5. देव संस्कृति विश्वविद्यालय के दस्तावेज
6. भाषण, प्रवचन एवं लेख

(ख) द्वितीयक स्रोत

1. शोध प्रबंध
2. शोध पत्र
3. शिक्षा दर्शन की पुस्तकें
4. जर्नल
5. विश्वविद्यालय शोध सामग्री
6. ऑनलाइन शैक्षिक स्रोत

1.11.4 अध्ययन की प्रविधिगत प्रक्रिया (Research Procedure)

इस शोध की कार्यविधि निम्न चरणों में संपन्न की गयी है–

चरण 1 - समस्या का चयन

बाल शिक्षा में मूल्य संकट और संस्कारहीनता की वर्तमान समस्या को ध्यान में रखते हुए विषय का चयन किया गया।

चरण 2 - संबंधित साहित्य का अध्ययन

आचार्य जी के ग्रंथों, शोध-पत्रों, शिक्षा दर्शन और संस्कार साहित्य का गहन अध्ययन किया गया।

चरण 3 - सामग्री संकलन

प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से सामग्री एकत्रित की गयी।

चरण 4 - वर्गीकरण

संकलित सामग्री को निम्न शीर्षकों में वर्गीकृत किया गया है–

- बाल शिक्षा
- संस्कार
- परिवार की भूमिका
- विद्यालय की भूमिका
- संस्थागत योगदान
- वर्तमान प्रासंगिकता

चरण 5 - विश्लेषण

सामग्री का दार्शनिक, ऐतिहासिक एवं विषयवस्तु विश्लेषण किया गया है।

चरण 6 - निष्कर्ष

विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत किए गए हैं।

1.11.5 विश्लेषण की तकनीक (Techniques of Analysis)

1. विषयवस्तु विश्लेषण (Content Analysis)
2. व्याख्यात्मक विश्लेषण (Interpretative Analysis)
3. तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis)
4. समालोचनात्मक विश्लेषण (Critical Analysis)

1.12 अध्ययन का महत्त्व एवं सार्थकता (Importance and Significance of the Study)

1.12.1 अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन **"पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में योगदान"** वर्तमान शिक्षा व्यवस्था, सामाजिक परिस्थितियों तथा मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता के संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक है। आज के समय में शिक्षा का स्वरूप तेजी से **ज्ञान, तकनीकी दक्षता, प्रतिस्पर्धा और करियर उन्मुखता** की ओर बढ़ रहा है। यद्यपि इससे विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास और व्यावसायिक कौशल में वृद्धि हुई है, परंतु साथ ही **नैतिक मूल्यों, अनुशासन, चरित्र निर्माण, सामाजिक संवेदनशीलता और संस्कार विकास** के क्षेत्र में कमी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

ऐसी परिस्थितियों में यह अध्ययन विशेष महत्त्व रखता है, क्योंकि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का माध्यम न मानकर **व्यक्तित्व परिष्कार, चरित्र निर्माण, मूल्य संवर्धन और राष्ट्र निर्माण** का साधन माना। उनका शिक्षा दर्शन बालकों के सर्वांगीण विकास, परिवार-विद्यालय समन्वय तथा संस्कार निर्माण के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

1 शैक्षिक महत्त्व

प्रस्तुत अध्ययन का सबसे बड़ा महत्त्व शिक्षा के क्षेत्र में है। वर्तमान समय में विद्यालयी शिक्षा अधिकतर **परीक्षा-केंद्रित, अंक-उन्मुख और विषय ज्ञान तक सीमित** होती जा रही है। इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में व्यवहारगत समस्याएँ, अनुशासनहीनता और मूल्यहीनता बढ़ रही है।

यह अध्ययन निम्न शैक्षिक महत्त्व रखता है–

1. बाल शिक्षा को **मूल्यपरक एवं संस्कारमूलक दिशा** प्रदान करता है।
2. शिक्षा के उद्देश्य को **सर्वांगीण विकास** से जोड़ता है।

3. चरित्र निर्माण को शिक्षा का केंद्रीय लक्ष्य बनाता है।

4. विद्यालयों में प्रार्थना, योग, सेवा-कार्य और नैतिक शिक्षा के महत्त्व को स्पष्ट करता है।

5. नई शिक्षा नीति 2020 के holistic development दृष्टिकोण को मजबूत आधार देता है।

2 बाल शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्व

बाल्यावस्था व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला होती है। इस अध्ययन का महत्त्व इस दृष्टि से विशेष है कि यह बालकों में प्रारंभिक स्तर से ही–

- अनुशासन
- सत्यनिष्ठा
- सहयोग
- आत्मसंयम
- सामाजिक उत्तरदायित्व
- राष्ट्रप्रेम

जैसे गुणों के विकास पर बल देता है।

आचार्य जी का विचार कि **बालक को प्रारंभ से ही संस्कारयुक्त वातावरण मिलना चाहिए**, आज की शिक्षा के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

3 शिक्षक शिक्षा में महत्त्व

B.Ed., M.Ed. तथा शिक्षक-प्रशिक्षण के क्षेत्र में यह अध्ययन अत्यंत उपयोगी है। यह भावी शिक्षकों को यह समझने में सहायता करता है कि शिक्षा केवल पाठ्यवस्तु का संप्रेषण नहीं, बल्कि **बालक के व्यक्तित्व निर्माण की जिम्मेदारी** भी है।

यह अध्ययन शिक्षक को–

- आदर्श व्यवहार
- मूल्य-आधारित शिक्षण
- बाल मनोविज्ञान

- अनुशासन निर्माण
- विद्यालयी वातावरण निर्माण

की दिशा देता है।

4 परिवार एवं अभिभावकों के लिए महत्त्व

आचार्य जी ने परिवार को **प्रथम विद्यालय** तथा माता-पिता को **प्रथम शिक्षक** माना। यह अध्ययन परिवारों को यह समझने में सहायता करता है कि बालक का संस्कार निर्माण केवल विद्यालय की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि परिवार की भी समान भूमिका है।

यह अभिभावकों को–

1. आदर्श व्यवहार अपनाने
2. नियमित संवाद
3. प्रार्थना एवं दिनचर्या
4. प्रेरक कथा-कहानियाँ
5. डिजिटल अनुशासन

जैसे पक्षों पर जागरूक बनाता है।

5 सामाजिक महत्त्व

समाज में बढ़ती हिंसा, असहिष्णुता, अपराध, नशा, डिजिटल व्यसन और सामाजिक असंवेदनशीलता जैसी समस्याओं का मूल कारण कहीं न कहीं **संस्कारहीनता और मूल्य संकट** है।

यह अध्ययन समाज के लिए इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह बालकों में–

- सहिष्णुता
- सेवा-भाव
- करुणा
- सहयोग
- सामाजिक न्याय

- सामूहिक उत्तरदायित्व

जैसे मूल्यों के विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।

6 नीति निर्माण में महत्त्व

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में **भारतीय ज्ञान परंपरा, नैतिक शिक्षा, जीवन कौशल और समग्र विकास** पर बल दिया गया है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं के लिए एक वैचारिक आधार प्रस्तुत करता है कि बाल शिक्षा में संस्कार निर्माण को किस प्रकार व्यवहारिक रूप से लागू किया जा सकता है।

1.12.2 शोध की सार्थकता

इस अध्ययन की सार्थकता निम्न आधारों पर स्पष्ट होती है–

(क) वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

आज के समय में शिक्षा में मूल्य संकट के कारण यह अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है।

(ख) वैकल्पिक शैक्षिक मॉडल

आचार्य जी का **बाल संस्कार शाला मॉडल** आधुनिक शिक्षा के लिए एक प्रभावी विकल्प प्रस्तुत करता है।

(ग) भारतीय शिक्षा दर्शन का पुनर्स्थापन

यह अध्ययन भारतीय ज्ञान परंपरा और गुरुकुल के मूल्य आधारित स्वरूप को आधुनिक शिक्षा से जोड़ता है।

(घ) व्यावहारिक उपयोगिता

विद्‍यालय, परिवार, शिक्षक शिक्षा और नीति निर्माण–सभी स्तरों पर इसका व्यावहारिक उपयोग संभव है।

(ङ) शोध-अंतर की पूर्ति

बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के विशेष संदर्भ में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के योगदान पर केंद्रित शोध अपेक्षाकृत कम हैं, इसलिए यह अध्ययन एक महत्त्वपूर्ण शोध-अंतर को भरता है।

द्वितीय अध्याय

संबधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

2.2 पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के मूल्य साहित्य का अध्ययन

2.3 पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, शिक्षा दर्शन एवं मूल्य-उन्मुखीकरण पर पूर्व शोध

2.4 चरित्र निर्माण और मूल्य शिक्षा सम्बन्धी साहित्य

2.5 परिवार एवं बाल संस्कार पर साहित्य

2.6 संस्थागत साहित्यः बाल संस्कार शाला एवं प्रज्ञा शिशु मंदिर

2.7 भारतीय शिक्षा दर्शन से सम्बन्धित साहित्य

2.8 शोध-अन्तर

द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्ययन **"पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में योगदान"** से संबंधित है। इस विषय की पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने हेतु शोधकर्ता ने पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के साहित्य, शिक्षा दर्शन, मूल्यपरक शिक्षा, बाल संस्कार शालाओं, भारतीय शिक्षा दर्शन तथा समकालीन शोध अध्ययनों का अवलोकन किया। संबंधित साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि आचार्य जी के विचार **मूल्यपरक शिक्षा, चरित्र निर्माण और सर्वांगीण विकास** पर विशेष बल देते हैं।

2.2 पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के मूल साहित्य का अध्ययन

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने शिक्षा, परिवार, बाल मनोविज्ञान, संस्कार, चरित्र निर्माण, जीवन प्रबंधन और भारतीय संस्कृति पर हजारों पृष्ठों का साहित्य प्रस्तुत किया। उनके **वाङ्मय**, अखंड ज्योति, युग निर्माण योजना साहित्य तथा प्रज्ञा पुराण में बाल शिक्षा और संस्कार निर्माण से संबंधित विचार व्यापक रूप से मिलते हैं।

उनके साहित्य में यह स्पष्ट रूप से प्रतिपादित है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि **मनुष्य निर्माण, देवत्व जागरण और समाजोपयोगी व्यक्तित्व का विकास** है। बालकों में **अनुशासन, सत्यनिष्ठा, सेवा, आत्मसंयम और राष्ट्रप्रेम** के विकास को उन्होंने शिक्षा का अनिवार्य अंग माना। उनके जीवन और साहित्य को सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण माना गया है। (edu.dsvv.ac.in

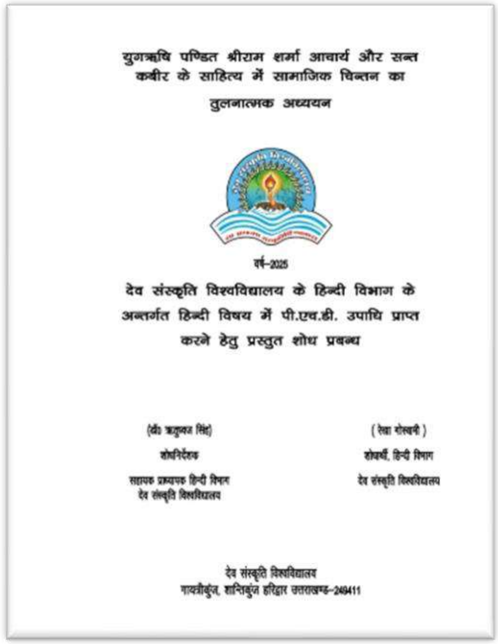
2.3 पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, शिक्षा दर्शन एवं मूल्य-उन्मुखीकरण पर पूर्व शोध

2.3.1 नम्रता बिहारिया एवं अविनाश बिहारिया (2012) द्वारा किए गए अध्ययन **"पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन का मूल्य-उन्मुखीकरण पर प्रभाव"** में 100 विद्यार्थियों पर X-post facto डिजाइन के माध्यम से अध्ययन किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि आचार्य जी के शिक्षा दर्शन का

विद्यार्थियों के **धार्मिक, सामाजिक, ज्ञान, आनंद और शक्ति मूल्यों** पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। (dsiij.dsvv.ac.in)

2.3.2 रेखा गोस्वामी (2025) ने **"युगऋषि पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य और सन्त कबीर के साहित्य में सामाजिक चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन"** शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

1. संत कबीर और पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य दोनों ने समाज सुधार को अपने साहित्य का केंद्र बनाया। दोनों का उद्देश्य समाज से अंधविश्वास, रूढ़िवाद और कुरीतियों को दूर करना था।


युगऋषि पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य और सन्त कबीर के साहित्य में सामाजिक चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन

वर्ष–2025

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अन्तर्गत हिन्दी विषय में पी.एच.डी. उपाधि प्राप्त करने हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

(डॉ. [illegible]) — शोधनिर्देशक — सहायक प्राध्यापक हिन्दी विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय

(रेखा गोस्वामी) — शोधार्थी, हिन्दी विभाग — देव संस्कृति विश्वविद्यालय

देव संस्कृति विश्वविद्यालय
गायत्रीकुंज, शान्तिकुंज हरिद्वार उत्तराखण्ड–249411

2. दोनों महापुरुषों ने **धार्मिक आडंबर, कर्मकांड और बाह्य प्रदर्शन** का विरोध किया। कबीर ने दोहों के माध्यम से और आचार्य श्रीराम ने युग निर्माण साहित्य के माध्यम से समाज को जागृत किया।

3. दोनों विचारकों ने **जाति, वर्ग, ऊँच-नीच और भेदभाव का विरोध** करते हुए मानवता और समता को सर्वोच्च मूल्य माना।

4. दोनों के साहित्य में यह समानता पाई गई कि **समाज परिवर्तन की शुरुआत व्यक्ति के आत्म-सुधार से होती है।** कबीर ने *"मन के हारे हार है"* जैसी चेतना दी, जबकि आचार्य जी ने *"हम बदलेंगे, युग बदलेगा"* का सिद्धांत दिया।

5. दोनों ने **सत्य, ईमानदारी, श्रम, सेवा, सदाचार और आत्मानुशासन** को सामाजिक जीवन का आधार माना।

6. दोनों ने अपने साहित्य को **जनजागरण और सामाजिक चेतना का प्रभावी साधन** बनाया। कबीर ने लोकभाषा में दोहे लिखे, जबकि आचार्य जी ने सरल हिंदी में व्यापक साहित्य रचा।

7. दोनों चिंतकों के साहित्य में **परिवार और स्त्री की सामाजिक भूमिका** को महत्वपूर्ण माना गया। विशेषकर आचार्य जी ने परिवार निर्माण को समाज निर्माण का आधार माना।

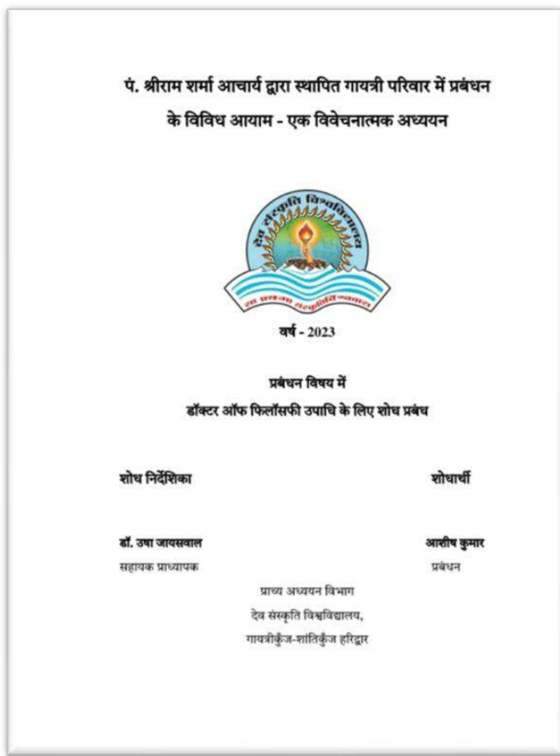
8. आध्यात्मिकता का सामाजिक रूप दोनों ने आध्यात्मिकता को केवल व्यक्तिगत साधना न मानकर **सामाजिक नैतिकता और लोकमंगल** से जोड़ा।

9. सामाजिक एकता और भाईचारा दोनों साहित्यकारों ने समाज में **सौहार्द, प्रेम, सहयोग और भाईचारे** की भावना को विकसित करने पर बल दिया, जो वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है।

10. कबीर और आचार्य श्रीराम का सामाजिक चिंतन आज के समय में **मूल्य संकट, सामाजिक विघटन, धार्मिक कट्टरता और नैतिक पतन** के समाधान हेतु अत्यंत उपयोगी है।

2.3.3 आशीष कुमार (2023) ने "पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा स्थापित गायत्री परिवार में प्रबंधन के विविध आयाम - एक विवेचनात्मक अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

1. गायत्री परिवार का प्रबंधन अत्यंत संगठित, मूल्य-आधारित और मिशन-केंद्रित है। इसका आधार व्यक्ति निर्माण से समाज निर्माण की प्रक्रिया है, जो बाल संस्कार मॉडल के लिए भी उपयोगी है।


पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा स्थापित गायत्री परिवार में प्रबंधन
के विविध आयाम - एक विवेचनात्मक अध्ययन

वर्ष - 2023

प्रबंधन विषय में
डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी उपाधि के लिए शोध प्रबंध

शोध निर्देशिका — शोधार्थी

डॉ. उषा जायसवाल, सहायक प्राध्यापक — आशीष कुमार, प्रबंधन

प्राच्य अध्ययन विभाग
देव संस्कृति विश्वविद्यालय,
गायत्रीकुंज-शांतिकुंज हरिद्वार

2. पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा स्थापित नेतृत्व मॉडल **सेवा, अनुशासन, नैतिकता और आदर्श व्यवहार** पर आधारित है। यह बाल शिक्षा में शिक्षक-नेतृत्व और role model concept को मजबूत करता है।

3. गायत्री परिवार का संचालन **परिवार इकाई मॉडल** पर आधारित पाया गया, जिसमें परिवार को समाज परिवर्तन की मूल इकाई माना गया।

4. संगठन में विभिन्न **प्रशिक्षण शिविर, व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम, संस्कार सत्र और प्रज्ञा अभियान** प्रभावी प्रबंधन उपकरण के रूप में कार्य करते हैं। यही मॉडल बाल संस्कार शालाओं में भी लागू होता है।

5. गायत्री परिवार का प्रबंधन **human resource development** पर आधारित है, जहाँ व्यक्ति के आंतरिक विकास, नैतिक प्रशिक्षण और जिम्मेदारी बोध पर विशेष ध्यान दिया जाता है। बाल शिक्षा में यह **व्यक्तित्व विकास** के लिए महत्वपूर्ण है।

6. संगठन की शाखाएँ **स्थानीय स्तर पर स्वायत्तता के साथ कार्य करती हैं**, जबकि केंद्रीय मूल्य एवं दिशा एक समान रहती है। यह विद्यालयी प्रबंधन और संस्कार शाला संचालन के लिए उपयोगी मॉडल है।

7. गायत्री परिवार में **महिला और युवा नेतृत्व की सक्रिय भागीदारी** प्रबंधन का महत्वपूर्ण आयाम है। इससे बालकों में gender equality, responsibility sharing और leadership values विकसित करने की प्रेरणा मिलती है.

8. आचार्य जी के साहित्य, वाङ्मय, पत्रिकाएँ, अखंड ज्योति और डिजिटल माध्यम संगठन के **communication management system** को मजबूत बनाते हैं। बाल शिक्षा में यह **नैतिक कहानी, प्रार्थना और प्रेरक सामग्री** के रूप में उपयोगी है।

9. संगठन का संचालन बाहरी नियंत्रण से अधिक **आंतरिक प्रेरणा, आत्मानुशासन और स्वयंसेवी भावना** पर आधारित है। यही सिद्धांत बाल संस्कार निर्माण में अत्यंत प्रभावी माना जाता है।

10. गायत्री परिवार का management model केवल संगठन संचालन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे **बाल शिक्षा, मूल्यपरक शिक्षा, विद्यालयी वातावरण निर्माण और संस्कार शालाओं के संचालन** में भी सफलतापूर्वक लागू किया जा सकता है।

2.3.4 सन्दीप कुमार (2022) ने "वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (श्रीराम शर्मा आचार्य के विशेष सन्दर्भ में)"" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

1. सत्य, अहिंसा, अनुशासन, सहिष्णुता, कर्तव्य, सेवा और आध्यात्मिकता जैसे भारतीय संस्कृति के मूल तत्व वर्तमान शिक्षा के उद्देश्यों से सीधे जुड़े हुए हैं।

2. आचार्य जी ने शिक्षा को केवल सूचना का माध्यम न मानकर **संस्कृति संरक्षण, मूल्य निर्माण और व्यक्तित्व विकास** का साधन माना।

3. भारतीय संस्कृति का सबसे प्रभावी पक्ष **संस्कार प्रणाली** है, जो बालक के नैतिक और सामाजिक विकास में निर्णायक भूमिका निभाती है।


"वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (श्रीराम शर्मा आचार्य के विशेष सन्दर्भ में)"

"Analytical Study of the Basic Elements of Indian Culture in Current Educational Perspective. (In the Special Reference of Shriram Sharma Acharya)"

शोध प्रबन्ध

पीएच० डी० (शिक्षा) उपाधि की पूर्ति हेतु

आई०ए०एस०ई०(मानित विश्वविद्यालय) गाँधी विद्या मंदिर,

सरदारशहर (राजस्थान)

शिक्षा विभाग को प्रस्तुत

शोधकर्ता

सन्दीप कुमार

iase (deemed to be university)

निर्देशिका

डॉ०सरिता शर्मा

रीडर, सी० टी० ई०

वर्ष 2022

4. आधुनिक शिक्षा में बढ़ती **अनुशासनहीनता, भौतिकवाद और मूल्यहीनता** को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के समावेश से कम किया जा सकता है।

5. परिवार बच्चों में संस्कृति, नैतिकता और आचरण के मूल गुण विकसित करने का पहला और सबसे प्रभावी केंद्र है। यह आपके बाल शिक्षा topic को सीधे support करता है।

6. आचार्य जी के अनुसार विद्यालय प्रार्थना, योग, कथा, सामूहिक गतिविधियों और सेवा-कार्य के माध्यम से भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों को व्यवहार में ला सकता है।

7. आचार्य जी के विचार **समग्र विकास, भारतीय ज्ञान परंपरा, मूल्य शिक्षा और जीवन कौशल** जैसे आधुनिक शैक्षिक उद्देश्यों से मेल खाते हैं।

8. इस शोध में character building को भारतीय संस्कृति का मूल शैक्षिक उद्देश्य माना गया, जो श्रीराम शर्मा आचार्य के "मनुष्य निर्माण" दर्शन से पूरी तरह जुड़ता है।

9. शिक्षक केवल ज्ञानदाता नहीं बल्कि **संस्कृति, मूल्य और नैतिक व्यवहार के संवाहक** होते हैं। इसलिए teacher education में भी इस मॉडल की उपयोगिता है।

10. वर्तमान शिक्षा में **भारतीय संस्कृति आधारित मूल्यपरक मॉडल** अपनाना समय की आवश्यकता है, और इस दिशा में श्रीराम शर्मा आचार्य का योगदान अत्यंत उपयोगी है।

2.3.5 रवीश कुमार (2022) ने "श्रीराम शर्मा आचार्य एवं डॉ. सिग्मंड फ्रायड के मनोवैज्ञानिक विचारों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

1. पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का व्यक्तित्व दृष्टिकोण समग्र (Holistic) है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक सभी पक्ष शामिल हैं; जबकि **फ्रायड का दृष्टिकोण मुख्यतः मनोविश्लेषणात्मक (Psychoanalytic)** है।



"श्रीराम शर्मा आचार्य एवं डॉ. सिग्मंड फ्रायड के
मनोवैज्ञानिक विचारों का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के संबंध में तुलनात्मक अध्ययन"
"Comparative Study of Psychological Thoughts of Shriram Sharma Acharya and
Dr. Sigmund Freud, in Reference to The Personality of Students"

शोध प्रबन्ध
पीएच० डी० (शिक्षा) उपाधि की पूर्ति हेतु
आई० ए० एस० ई० (मानित विश्वविद्यालय) गाँधी विद्या मंदिर,
सरदारशहर (राजस्थान)
शिक्षा विभाग को प्रस्तुत

शोधकर्ता
रवीश कुमार

निर्देशिका
डॉ० सरिता शर्मा
रीडर, सी० टी० ई०
वर्ष 2022

2. दोनों विचारकों ने व्यक्तित्व निर्माण में **अवचेतन (Unconscious Mind)** की भूमिका को महत्त्वपूर्ण माना।

- फ्रायड ने इसे **id, ego, superego** के रूप में समझाया।
- आचार्य जी ने इसे **संस्कार, चित्त और अंतर्मन** से जोड़ा।

3. दोनों विचारकों के अनुसार **बाल्यावस्था व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला** है। फ्रायड ने psychosexual stages पर बल दिया, जबकि आचार्य जी ने **प्रारंभिक संस्कार, परिवार और वातावरण** को निर्णायक माना।

4. आचार्य जी के विचारों में **नैतिकता, आत्मसंयम और चरित्र निर्माण** विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के केंद्रीय तत्व हैं, जबकि फ्रायड का जोर **आंतरिक संघर्ष और drives** पर अधिक है।

5. दोनों दृष्टिकोणों में परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण पाई गई।

- फ्रायड: माता-पिता के साथ प्रारंभिक संबंध personality shaping करते हैं।
- आचार्य: परिवार **प्रथम विद्यालय** है, जहाँ संस्कारों की नींव पड़ती है।

6. विद्यार्थियों के व्यवहार, अनुशासनहीनता, anxiety, aggression आदि को समझने में **फ्रायड का मॉडल diagnostic understanding देता है**, जबकि **आचार्य जी का मॉडल corrective and developmental दिशा देता है।**

7. आचार्य जी का दृष्टिकोण शिक्षा को **व्यक्तित्व परिष्कार और संस्कार निर्माण** का माध्यम मानता है। यह विद्यार्थियों के **positive personality development** के लिए अधिक उपयोगी पाया गया।

8. दोनों विचार विद्यार्थियों के **mental health** से जुड़े हैं–

- फ्रायड: repression, conflict, defence mechanisms
- आचार्य: प्रार्थना, आत्मचिंतन, योग, स्वाध्याय

इनके माध्यम से भावनात्मक संतुलन विकसित होता है।

9. आचार्य जी का मनोवैज्ञानिक चिंतन **भारतीय आध्यात्मिक मनोविज्ञान** का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि फ्रायड **पाश्चात्य मनोविश्लेषणात्मक मनोविज्ञान** का। दोनों का तुलनात्मक अध्ययन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को समझने के लिए समृद्ध आधार देता है।

10. विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास हेतु **फ्रायड के विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण और आचार्य जी के संस्कारात्मक दृष्टिकोण का समन्वय** आधुनिक शिक्षा में अत्यंत उपयोगी हो सकता है।

2.3.6 अशोक कुमार ढोके (2017) ने "समकालीन भारतीय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में आचार्य पं. श्रीराम शर्मा का मूल्य दर्शन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

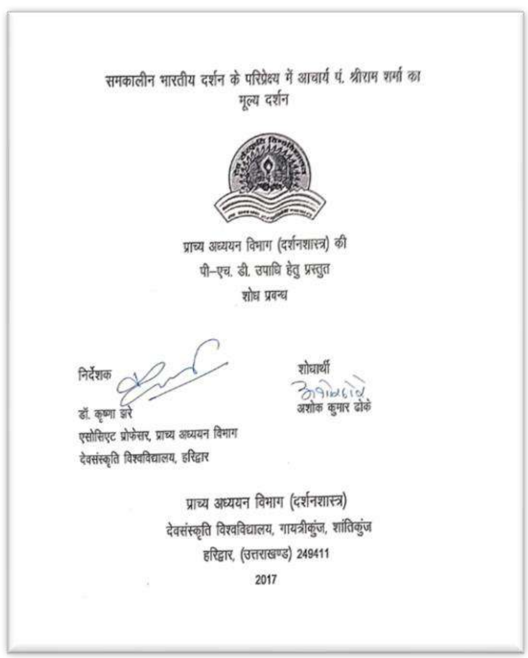
1. आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा का मूल्य-दर्शन **मानव निर्माण और आत्मोत्कर्ष** पर आधारित है।

2. उन्होंने **सत्य, अनुशासन, सेवा, संयम, करुणा और सहिष्णुता** को मूल जीवन मूल्य माना।

3. उनका मूल्य-दर्शन **भारतीय दर्शन, वेद, उपनिषद और गीता** से गहराई से प्रभावित है।

4. शिक्षा को उन्होंने **मूल्य-संवर्धन और चरित्र निर्माण का प्रमुख साधन** माना।

5. परिवार को मूल्य निर्माण का **प्रथम केंद्र** तथा माता-पिता को प्रथम शिक्षक माना गया।


समकालीन भारतीय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में आचार्य पं. श्रीराम शर्मा का
मूल्य दर्शन

प्राच्य अध्ययन विभाग (दर्शनशास्त्र) की
पी–एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध

निर्देशक
डॉ. कृष्णा झरे
एसोसिएट प्रोफेसर, प्राच्य अध्ययन विभाग
देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

शोधार्थी
अशोक कुमार ढोके

प्राच्य अध्ययन विभाग (दर्शनशास्त्र)
देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुंज, शांतिकुंज
हरिद्वार, (उत्तराखण्ड) 249411
2017

6. उनके विचार **समाजोपयोगी, उत्तरदायी और राष्ट्रनिष्ठ नागरिक** के निर्माण पर बल देते हैं।

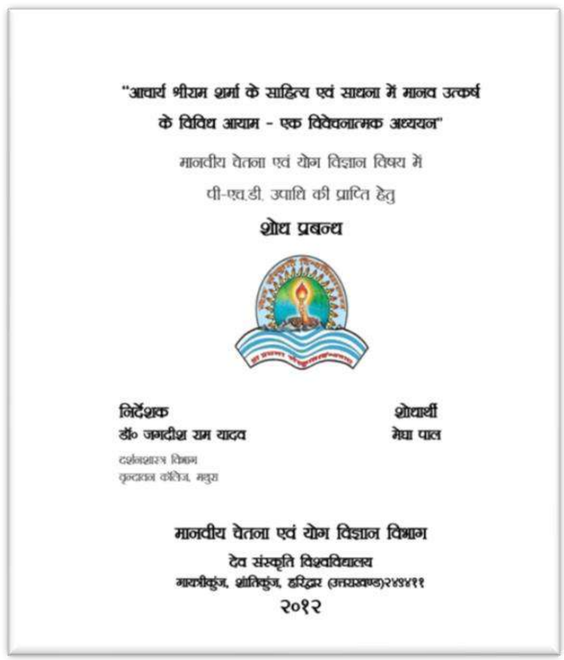
7. उन्होंने मूल्य-दर्शन में **अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय** प्रस्तुत किया।

8. वर्तमान शिक्षा में बढ़ती **मूल्यहीनता और अनुशासन संकट** के समाधान में उनका दर्शन उपयोगी पाया गया।

9. बालकों के **चरित्र निर्माण, अनुशासन और आत्मसंयम** में उनके मूल्य सिद्धांत प्रभावी सिद्ध हुए।

10. समकालीन भारतीय दर्शन में उनका मूल्य-दर्शन **व्यावहारिक, शैक्षिक और जीवनोपयोगी** माना गया।

2.3.7 मेघा पाल (2012) ने "आचार्य श्रीराम शर्मा के साहित्य एवं साधना में मानव उत्कर्ष के विविध आयाम एक विवेचनात्मक अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–



"आचार्य श्रीराम शर्मा के साहित्य एवं साधना में मानव उत्कर्ष के विविध आयाम - एक विवेचनात्मक अध्ययन"

मानवीय चेतना एवं योग विज्ञान विषय में

पी-एच.डी. उपाधि की प्राप्ति हेतु

शोध प्रबन्ध

निर्देशक
डॉ० जगदीश राम यादव
दर्शनशास्त्र विभाग
वृन्दावन कॉलेज, मथुरा

शोधार्थी
मेघा पाल

मानवीय चेतना एवं योग विज्ञान विभाग

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

गायत्रीकुंज, शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)२४९४११

२०१२

1. पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने **मानव उत्कर्ष को बहुआयामी प्रक्रिया** माना, जिसमें शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक विकास का समन्वय है।

2. आचार्य जी के साहित्य और साधना दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। उनका साहित्य केवल सैद्धांतिक न होकर **व्यवहारिक जीवन-साधना का मार्गदर्शक** है।

3. आचार्य जी का संपूर्ण चिंतन **व्यक्तित्व परिष्कार** पर केंद्रित है। आत्मसंयम, अनुशासन, सदाचार और स्वाध्याय को मानव विकास का आधार माना गया।

4. आचार्य जी ने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि **मानव निर्माण और चरित्र निर्माण** का प्रभावी माध्यम माना। यही बिंदु आपके बाल शिक्षा विषय से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ता है।

5. अध्ययन में संस्कारों को मानव उत्कर्ष का मुख्य आधार माना गया है। बाल्यावस्था में दिए गए संस्कार व्यक्ति के भविष्य, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व को निर्धारित करते हैं।

6. आचार्य जी ने **परिवार को संस्कारों की प्रथम प्रयोगशाला** माना। सामाजिक वातावरण और सत्संग को भी मानव उत्कर्ष का महत्त्वपूर्ण साधन बताया गया।

7. साधना, स्वाध्याय, जप, ध्यान और यज्ञ व्यक्ति के आंतरिक विकास, भावनात्मक शुद्धि और चेतना के उत्कर्ष में सहायक हैं।

8. आचार्य जी का साहित्य व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं, बल्कि **परिवार निर्माण, समाज निर्माण और युग निर्माण** तक विस्तृत है। व्यक्ति सुधार से समाज सुधार की अवधारणा प्रमुख निष्कर्ष के रूप में सामने आती है।

9. आचार्य जी ने भारतीय संस्कृति, वैदिक परंपरा, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक विज्ञान को आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित किया। यह शिक्षा में मूल्यपरकता को मजबूत आधार देता है।

10. मानव उत्कर्ष के विविध आयामों में बाल शिक्षा और संस्कार निर्माण की आधारभूत भूमिका स्पष्ट रूप से निहित है। बालक में प्रारंभिक स्तर पर विकसित मूल्य ही भविष्य के व्यक्तित्व को दिशा देते हैं।

2.3.8 प्रज्ञा सिंह लोधी (2011) ने "पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के चिंतन में व्यक्तित्व के सम्प्रत्यय एवं प्रारुप का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

1. पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने व्यक्तित्व को केवल मनोवैज्ञानिक गुणों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि **शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आयामों** का समन्वित स्वरूप माना।

2. आचार्य जी के चिंतन में **चरित्र निर्माण व्यक्तित्व विकास का केंद्रीय तत्व** है। सत्य, अनुशासन, आत्मसंयम और सेवा-भाव को व्यक्तित्व के मूल आधार के रूप में देखा गया।

3. व्यक्तित्व निर्माण में **बाल्यावस्था के संस्कारों और पारिवारिक वातावरण** की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रारंभिक जीवन के अनुभव भविष्य के व्यक्तित्व को स्थायी दिशा देते हैं।

4. आचार्य जी ने परिवार को **व्यक्तित्व विकास की प्रथम प्रयोगशाला** माना। माता-पिता के व्यवहार और घर के वातावरण का सीधा प्रभाव बालक के व्यक्तित्व पर पड़ता है।

5. शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि **व्यक्तित्व का समग्र विकास** करना है। विद्यालय बालक के व्यवहार, अनुशासन और नेतृत्व क्षमता को विकसित करने का माध्यम है।

6. आचार्य जी ने व्यक्तित्व विकास में **आध्यात्मिक चेतना, स्वाध्याय, प्रार्थना और आत्मनिरीक्षण** को अत्यंत प्रभावी माना। इससे व्यक्ति में संतुलन और आत्मनियंत्रण विकसित होता है।


पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के चिंतन में व्यक्तित्व के सम्प्रत्यय एवं प्रारुप का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

MODEL AND CONCEPT OF PERSONALITY IN THE THOUGHTS OF PT. SHRIRAM SHARMA ACHARYA IN MODERN PERSPECTIVE

वैदानिक मनोविज्ञान विषय में पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध प्रबन्ध

निर्देशक
प्रो. जितेन्द्र तिवारी
देव संस्कृति विश्वविद्यालय
हरिद्वार

शोध छात्रा
प्रज्ञा सिंह लोधी
एम.एस-सी. (वैदानिक मनोविज्ञान)

वैदानिक मनोविज्ञान विभाग
स्कूल ऑफ योग एण्ड हेल्थ
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुञ्ज,
शांतिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) - 249411
2011

7. आदर्श व्यक्तित्व वही है जो **समाजोपयोगी, सेवा-भावी और उत्तरदायी** हो। आचार्य जी के अनुसार व्यक्तित्व विकास का अंतिम उद्देश्य समाज और राष्ट्र के प्रति योगदान है।

8. आधुनिक समय में बढ़ती **मूल्यहीनता, तनाव, प्रतिस्पर्धा और सामाजिक विघटन** के बीच आचार्य जी का व्यक्तित्व मॉडल अत्यंत प्रासंगिक है।

9. व्यक्तित्व विकास की वास्तविक शुरुआत **बाल शिक्षा और संस्कार निर्माण** से होती है। इसलिए उनके व्यक्तित्व संबंधी विचार बाल शिक्षा में सीधे उपयोगी हैं।

10. आचार्य जी का व्यक्तित्व मॉडल वर्तमान शिक्षा में **value-based holistic education model** के रूप में अपनाया जा सकता है।

2.3.9 इन्द्राणी निषाद (2011) ने "पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा वर्णित मनोमय कोश की साधनाओं का किशोर व किशोरियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं नेतृत्व क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

1. मनोमय कोश की साधनाओं के अभ्यास से किशोर एवं किशोरियों के **मानसिक स्वास्थ्य स्तर में स्पष्ट सकारात्मक सुधार** पाया गया। तनाव, चिंता और मानसिक असंतुलन में कमी देखी गई।



"पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा वर्णित मनोमय कोश की साधनाओं का किशोर व किशोरियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं नेतृत्व क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

मानव चेतना एवं योग विज्ञान विभाग में
पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध

निर्देशक
डॉ० ईश्वर भारद्वाज
प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष-योग विभाग
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार, (उत्तराखण्ड)

सहनिर्देशिका
प्रो० लता गैरोला
विभागाध्यक्ष-मनोविज्ञान विभाग
हे०नं०ब०ग० विश्वविद्यालय
श्रीनगर (गढ़वाल)

शोधार्थी
इन्द्राणी निषाद

मानव चेतना एवं योग विज्ञान विभाग
(स्कूल ऑफ योग एण्ड हेल्थ)
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज,
हरिद्वार-249411(उत्तराखण्ड)
2011

2. साधना अभ्यास के बाद प्रतिभागियों में **आत्मविश्वास, आत्म-स्वीकृति और आत्म-नियंत्रण** के स्तर में वृद्धि पाई गई, जो नेतृत्व क्षमता के लिए आधारभूत तत्व है।

3. किशोरावस्था में भावनात्मक उतार-चढ़ाव सामान्य होते हैं। इस अध्ययन में पाया गया कि मनोमय कोश साधनाओं से **भावनात्मक स्थिरता और संतुलन** बढ़ा।

4. नियमित साधना से प्रतिभागियों की **ध्यान क्षमता, एकाग्रता, निर्णय शक्ति और सकारात्मक चिंतन** में वृद्धि हुई। यह शैक्षिक और नेतृत्व दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है।

5. साधना अभ्यास के बाद **निराशा, क्रोध, भय, असुरक्षा और नकारात्मक सोच** में कमी आई।

6. किशोरों में **समूह नेतृत्व, निर्णय लेने की क्षमता, जिम्मेदारी ग्रहण करने की प्रवृत्ति और समस्या समाधान कौशल** में उल्लेखनीय वृद्धि पाई गई।

7. साधनाओं से प्रतिभागियों के **सामाजिक व्यवहार, सहयोग, सहानुभूति और समूह सहभागिता** में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई दिया।

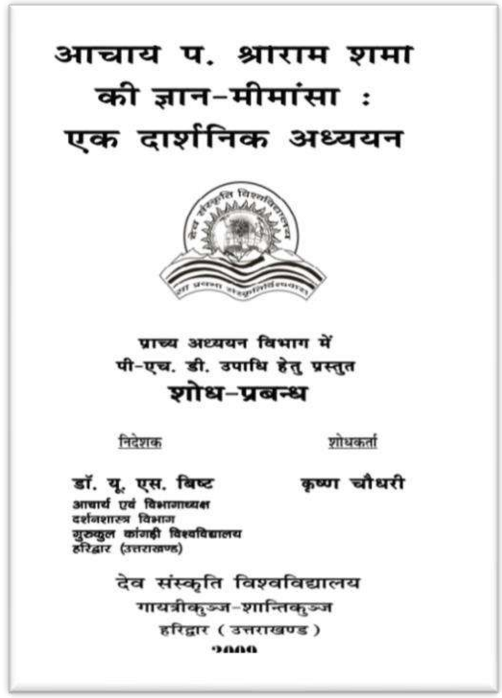
8. किशोरियों में **भावनात्मक परिपक्वता और आत्म-अभिव्यक्ति** पर इसका विशेष रूप से अच्छा प्रभाव पड़ा।

9. मनोमय कोश साधनाओं ने किशोरों के **समग्र व्यक्तित्व विकास**—विशेषकर आत्म-अनुशासन, सकारात्मक दृष्टिकोण और लक्ष्यबोध—में सहायक भूमिका निभाई।

10. ऐसी साधनाएँ विद्यालयी शिक्षा में शामिल की जाएँ तो विद्यार्थियों के **mental health, leadership skills, classroom behaviour और life skills** में सुधार संभव है।

2.3.10 कृष्ण चौधरी (2009) ने "आचार्य पं. श्रीराम शर्मा की ज्ञान-मीमांसा : एक दार्शनिक अध्ययन" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–

1. आचार्य श्रीराम शर्मा का ज्ञानमीमांसा दृष्टिकोण **आध्यात्मिकता और तर्कसंगतता का समन्वय** प्रस्तुत करता है।



आचार्य पं. श्रीराम शर्मा की ज्ञान-मीमांसा : एक दार्शनिक अध्ययन

प्राच्य अध्ययन विभाग में
पी-एच. डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध

निदेशक — डॉ. यू. एस. बिष्ट, आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

शोधकर्ता — कृष्ण चौधरी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय
गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)
२००९

2. उन्होंने ज्ञान को केवल बौद्धिक प्रक्रिया न मानकर **आत्मानुभूति एवं आंतरिक जागरण** से जुड़ा माना है।

3. आचार्य जी के अनुसार वास्तविक ज्ञान वही है जो **व्यवहार में परिवर्तन और चरित्र निर्माण** लाए।

4. उनकी ज्ञानमीमांसा में **विज्ञान और अध्यात्म का संतुलन** देखने को मिलता है, जो आधुनिक शिक्षा के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

5. आचार्य जी ने **श्रुति, तर्क, अनुभव और साधना** को ज्ञान के प्रमुख स्रोत माना है।

6. उनके विचारों में ज्ञान का उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि **मानव जीवन का उत्कर्ष और आत्म-विकास** है।

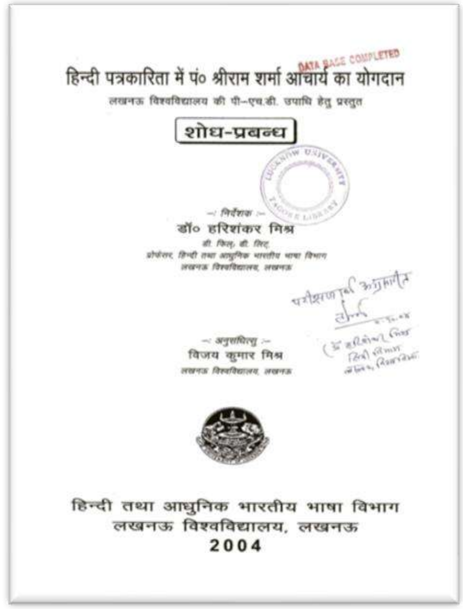
7. ज्ञान और संस्कार के बीच गहरा संबंध स्थापित करते हुए उन्होंने शिक्षा को **संस्कार निर्माण का आधार** माना है।

8. उनकी ज्ञानमीमांसा **नैतिकता, अनुशासन और आत्मसंयम** को ज्ञान का अनिवार्य अंग मानती है।

9. आचार्य जी का ज्ञान-दर्शन **सामाजिक कल्याण, लोकमंगल और मानवता की सेवा** की दिशा में उन्मुख है।

10. उनका ज्ञानमीमांसा दृष्टिकोण **समग्र (Holistic) शिक्षा प्रणाली** के निर्माण में सहायक है, जो आधुनिक मूल्य संकट का समाधान प्रस्तुत करता है।

2.3.11 विजय कुमार मिश्र (2004) ने "हिन्दी पत्रकारिता में पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का योगदान" शीर्षक पर शोध कार्य किया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि–



हिन्दी पत्रकारिता में पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का योगदान
लखनऊ विश्वविद्यालय की पी–एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध
-: निर्देशक :-
डॉ० हरिशंकर मिश्र
डी. फिल्, डी. लिट्
प्रोफेसर, हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
-: अनुसंधित्सु :-
विजय कुमार मिश्र
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
2004

1. पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने हिंदी पत्रकारिता को केवल समाचार प्रसारण तक सीमित न रखकर **विचार जागरण, सामाजिक सुधार और नैतिक पुनर्निर्माण** का प्रभावी माध्यम बनाया।

2. उनकी पत्रिका **"अखंड ज्योति"** हिंदी पत्रकारिता में मूल्यपरक, आध्यात्मिक और समाजोपयोगी पत्रकारिता का अनूठा उदाहरण है। इस पत्रिका ने करोड़ों पाठकों में **नैतिक चेतना और आत्मविकास** की भावना जगाई।

3. आचार्य जी की पत्रकारिता की सबसे बड़ी विशेषता उनकी **सरल, सहज, प्रेरक और लोकबोधगम्य हिंदी** थी, जिससे सामान्य पाठक भी गूढ़ विचारों को आसानी से समझ सके।

4. उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को **सत्य, नैतिकता, राष्ट्रप्रेम, मानवीयता और संस्कार** से जोड़ा। यह आधुनिक व्यावसायिक पत्रकारिता से भिन्न एक आदर्श मॉडल प्रस्तुत करता है।

5. उनकी पत्रकारिता **"विचार क्रांति अभियान"** का प्रमुख साधन बनी, जिसके माध्यम से व्यक्ति, परिवार और समाज में सकारात्मक परिवर्तन का संदेश फैलाया गया।

6. उन्होंने अपने संपादकीय और लेखों में–

- अंधविश्वास
- जातिवाद
- दहेज
- नशा
- रूढ़िवादिता
- नैतिक पतन

जैसी समस्याओं पर तीखा वैचारिक प्रहार किया।

7. आचार्य जी ने पत्रकारिता को **राष्ट्र निर्माण, सांस्कृतिक पुनर्जागरण और नागरिक उत्तरदायित्व** से जोड़ा। उनके लेखों में भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीय चरित्र और युवा जागरण पर विशेष बल मिलता है।

8. उन्होंने हिंदी पत्रकारिता में **आध्यात्मिकता, विज्ञान और सामाजिक सरोकारों** का समन्वय कर एक नई पत्रकारिता परंपरा स्थापित की, जिसे "रचनात्मक पत्रकारिता" कहा जा सकता है।

9. उनकी पत्रकारिता केवल रिपोर्टिंग नहीं थी, बल्कि **साहित्यिक, दार्शनिक और प्रेरक लेखन** का सशक्त रूप थी। यही कारण है कि उनकी पत्रकारिता का प्रभाव दीर्घकालिक और संस्कारपरक रहा।

10. पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की पत्रकारिता आज की मीडिया दुनिया के लिए **उत्तरदायी, मूल्यपरक और समाजोपयोगी पत्रकारिता का आदर्श मॉडल** प्रस्तुत करती है।

2.4 चरित्र निर्माण और मूल्य शिक्षा संबंधी साहित्य

आचार्य जी के साहित्य में **चरित्र निर्माण को युग निर्माण का आधार** माना गया है। उनके अनुसार शिक्षा तभी सार्थक है जब वह बालक में **सदाचार, अनुशासन, आत्मसंयम, कर्तव्यपरायणता और सेवा-भाव** विकसित करे।

समकालीन शोधों में भी यह पाया गया है कि उनकी शिक्षा-दृष्टि **भावनात्मक परिपक्वता, सहानुभूति, सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मनियंत्रण** को मजबूत करती है। 2025 के एक अध्ययन में उनके "Dev Sanskaras" को बच्चों में **empathy और emotional maturity** विकसित करने वाला माना गया। (IJCRT)

2.5 परिवार एवं बाल संस्कार पर साहित्य

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने परिवार को **प्रथम विद्यालय** और माता-पिता को **प्रथम शिक्षक** माना। उनके *परिवार निर्माण* और *गृहस्थ जीवन* संबंधी साहित्य में बालकों के संस्कार निर्माण हेतु–

- पारिवारिक अनुशासन
- प्रार्थना
- प्रेरक कथाएँ
- आदर्श व्यवहार
- दिनचर्या

- सांस्कृतिक परंपराएँ

पर विशेष बल दिया गया है।

संबंधित साहित्य से स्पष्ट होता है कि बालक के प्रारंभिक संस्कार परिवार से निर्मित होते हैं, जिसे विद्यालय आगे विकसित करता है।

2.6 संस्थागत साहित्य: बाल संस्कार शाला एवं प्रज्ञा शिशु मंदिर

आचार्य जी के संस्थागत योगदान में **बाल संस्कार शालाएँ, प्रज्ञा शिशु मंदिर, शांतिकुंज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय** विशेष महत्त्व रखते हैं। इन संस्थानों का उद्देश्य छात्रों को **नैतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से परिपक्व बनाना** है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के शैक्षिक मॉडल पर उपलब्ध संपादकीय और संस्थागत साहित्य में स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा का उद्देश्य **"noble and enlightened human beings"** का निर्माण है।

2.7 भारतीय शिक्षा दर्शन से संबंधित साहित्य

भारतीय शिक्षा दर्शन में शिक्षा को सदैव **विद्या और संस्कार** का समन्वित माध्यम माना गया है। गुरुकुल परंपरा, उपनिषद, गीता, विवेकानंद, गांधी, टैगोर और श्री अरविंद के विचारों में भी बाल शिक्षा को मूल्य-आधारित स्वरूप दिया गया है।

आचार्य जी का शिक्षा दर्शन इन्हीं भारतीय आदर्शों का आधुनिक पुनर्संयोजन प्रतीत होता है, जिसमें **विज्ञान और अध्यात्म, ज्ञान और संस्कार, परिवार और विद्यालय** का समन्वय मिलता है।

2.8 शोध-अंतर (Research Gap)

संबंधित साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि–

1. आचार्य जी के **साहित्य, संस्कृति और मूल्य शिक्षा** पर पर्याप्त अध्ययन उपलब्ध हैं।
2. उनके शिक्षा दर्शन के **मूल्य-उन्मुख प्रभाव** पर भी कुछ शोध हुए हैं।
3. संस्थागत योगदान पर सीमित साहित्य उपलब्ध है।

परंतु विशेष रूप से "बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण" के संयुक्त संदर्भ में उनके योगदान का केंद्रित शैक्षिक अध्ययन अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है।

यही शोध-अंतर प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता और मौलिकता को सिद्ध करता है।

समीक्षा का निष्कर्ष

उपरोक्त साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का शिक्षा दर्शन **मूल्यपरक शिक्षा, बाल संस्कार, परिवार-विद्यालय समन्वय, चरित्र निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व** पर आधारित है। पूर्व शोध उनके विचारों की उपयोगिता सिद्ध करते हैं, परंतु **बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण के विशिष्ट संदर्भ में एक समग्र शोध की आवश्यकता अभी भी विद्यमान है।**

अतः प्रस्तुत शोध इसी अंतर को भरने का प्रयास है।

तृतीय अध्याय

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य: जीवन परिचय एवं कृतित्व

3.1 जीवन परिचय

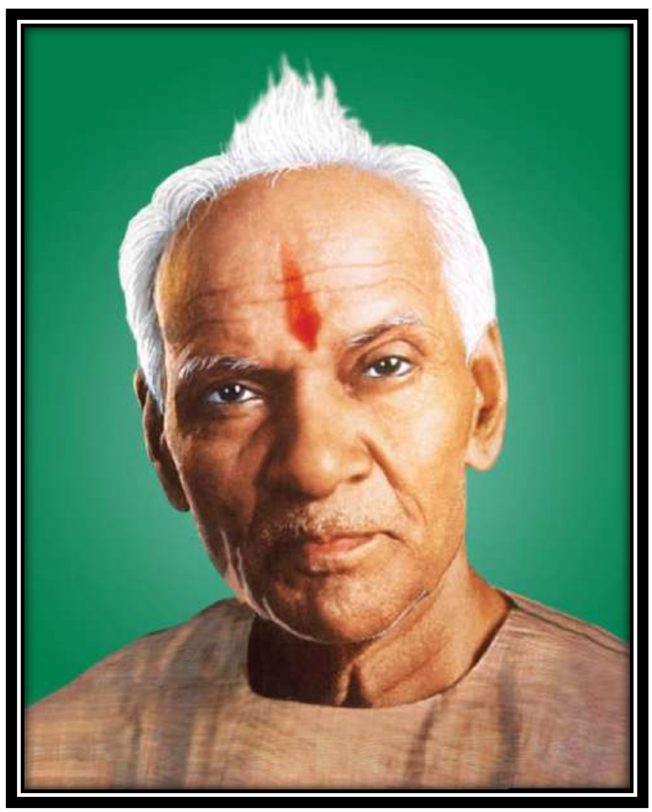
3.2 आचार्य श्रीराम शर्मा का कृतित्व

तृतीय अध्याय

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य: जीवन परिचय एवं कृतित्व

3.1 जीवन परिचय

विश्व के प्रकाश स्तम्भ महामानवों और देवदूतों की श्रृंखला में एक नई कड़ी के रूप में परम पूज्य गुरुदेव का उदय हुआ। भारत ही नहीं सारे विश्व की विषम परिस्थितियों के निवारण एवं अनुकूल परिस्थितियों को लाने के लिए ही उन्हें भेजा गया था। अन्यथा एक साधनहीन व्यक्ति उन विषम परिस्थितियों में उतना कार्य नहीं कर पाता, जितना युगद्रष्टा आचार्य श्री ने कर दिखाया। युगद्रष्टा, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं० श्री राम शर्मा आचार्य का आगमन इस धरा पर दूब हुआ जब सम्पूर्ण भारत अंग्रेजों की गुलामी की वैड़ियों से मुक्त होने के लिए व्याकुल हो रहा था। चारों ओर विभिन्न कुरीतियां पनप रही थीं, समाज के ऊर्ध्वगामी सुधारक इसका उन्मूलन करने में लगे थे। धार्मिक बाह्य आडम्बर, जाति प्रथा, बालविवाह, सती प्रथा, पर्दाप्रथा, बहुविवाह आदि प्रथाएं समाज को खोखला करने लगी थी। अंग्रेजी शासक अपनी जड़ जमाने में लगे थे। अपनी संस्कृति को भारतीय संस्कृति और सभ्यता की तुलना में श्रेष्ठ सिद्ध करने में लगे थे। साधारण जनता इस कुवक के गिरफ्त में आ गई पर देश के मूर्धन्यों ने अपनी जागृत चेतना के बल पर देश को सुप्तावस्था से जागृतवस्था में लाने का प्रयास किया। इन मूर्धन्यों की श्रृंखला में आचार्य श्री भी शामिल थे,



जिनका उद्देश्य भारत की खोई हुई गरिमा को पुनः प्रतिष्ठित करना था तथा वैचारिक क्रांति के शंखनाद से जनमानस की चेतना को झकझोरना था। जन आंदोलन के इस महासागर में स्त्रियां भी कूद पड़ीं। इन समाज सुधारकों में राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, महादेव गोविन्द रानाडे, स्वामी दयानंद सरस्वती, डॉ० महर्षि कर्वे, श्री मति ऐनी बेसेण्ट, महात्मा गाँधी, ज्योतिबा फूले, केशवचन्द्र सेन विशेष उल्लेखनीय हैं। इन्हीं के प्रयासों से सती प्रथा, बाल-विवाह, विधवा विवाह, पर्दा प्रथा, स्त्री शिक्षा, शिशु हत्या आदि प्रश्नों का कुछ समाधान होना प्रारम्भ हुआ।" फलतः ल स्त्रियां अपनी स्थिति और अधिकार के प्रति जागरूक हुई।

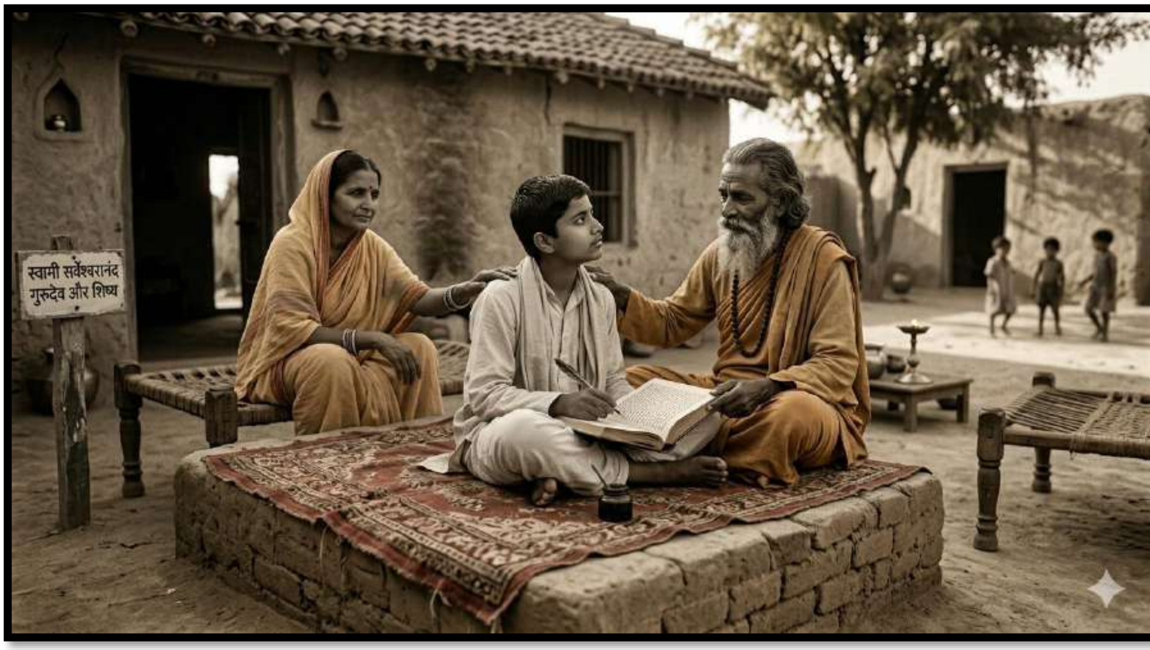
3.1.1 जन्म

विश्व के प्रेरक अग्रदूत के रूप में पं. श्री राम शर्मा आचार्य का जन्म आश्विन कृष्ण त्रयोदशी



संवत् 1962 (20 सितम्बर 1911 ई.) आंवलखेड़ा में एक जमींदार परिवार में हुआ। लेकिन आचार्य जी अपना वास्तविक जन्म वसंत पंचमी के दिन मानते थे। इसका कारण केवल इतना था कि इसी दिन 15 वर्ष की आयु में उनकी मार्गदर्शक सत्ता (स्वामी सर्वेश्वरानंद) ने दर्शन देकर उनके जीवन का मार्गदर्शन किया। उन्हीं के शब्दों में- "यो शरीर आश्विन को जन्म हुआ था, पर उस हाड़-मांस के थैले को पाकर कौन सौभाग्यशाली हुआ है। पर सौभाग्य

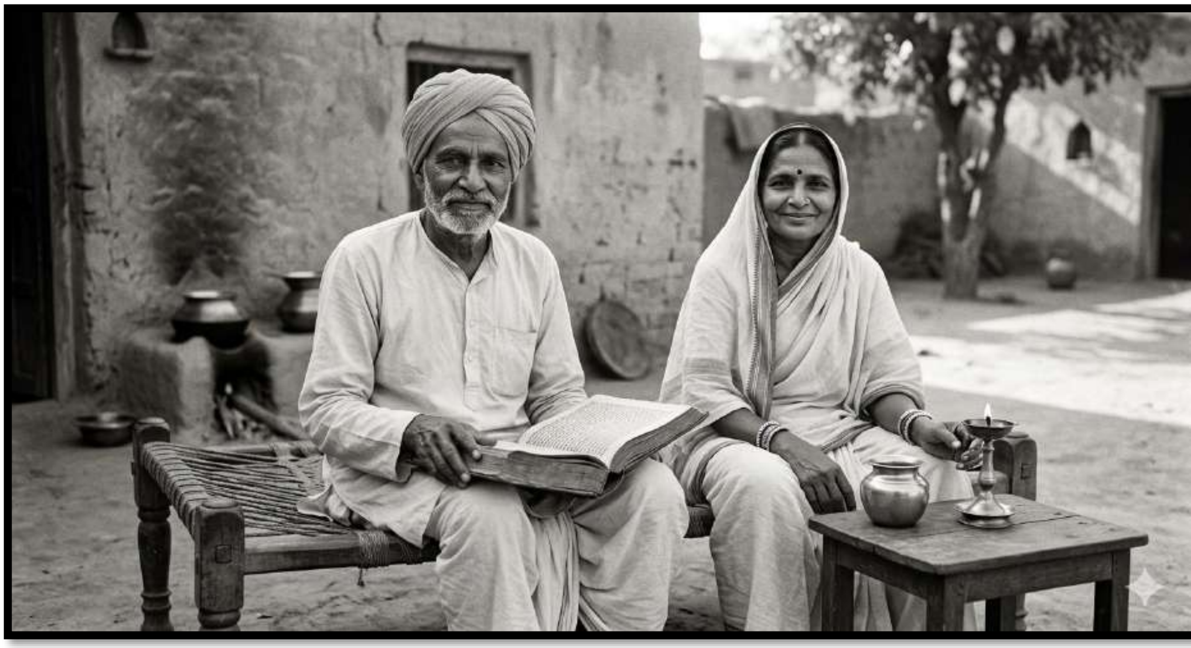
न जाने कहाँ से आ गया। जिसने मनुष्य शरीर में चेतना का विकास भर दिया। यह सौभाग्य हमें बसंत पंचमी के दिन मिला। केवल हमारा आत्मिक जन्म ही इस दिन नहीं हुआ, वरन हर महत्वपूर्ण कार्य हमने इसी दिन शुभ किये हैं। इस प्रकार हमारा वास्तविक जन्म वसंत पंचमी है।"



3.1.2 वंश परिचय

पं. श्री राम शर्मा आचार्य की माताजी का नाम श्रीमती दानकुंवरि और पिता जी का नाम पं० रूपकिशोर शर्मा है। माताजी श्रीमती दानकुंवरि एक सरल, सीधी, निष्ठावान और श्रद्धालु महिला थीं। पं० रूपकिशोर शर्मा अपने समय के प्रख्यात ज्योतिषी वैद्य, समाजसेवी तथा सद्गृहस्थ तपस्वी थे। पं० रूपकिशोर शर्मा की तीन संतानें हुई- प्रथम थे मानवता के अनन्य पुजारी, ब्रह्मर्षि गायत्री माता के वरद पुत्र, प्राणीमात्र के सहज सहचर, युगपुरुष, युगद्रष्टा, युगप्रवर्तक, विश्वबंधुत्व के एवं शांति के समर्थक, पोषक, अभिनव विश्वामित्र, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं० श्री राम शर्मा आचार्य। इसके उपरांत दो पुत्रियां और हुईं- प्रथम किरण देवी

और द्वितीय रामदेवी। दैवयोग से आचार्य जी पिता का स्नेह कम प्राप्त कर सके। पं० रूपकिशोर जी की मृत्यु आचार्य जी की बारह वर्ष की आयु के अवसर पर 66 वर्ष की उम्र



में ही हो गई थी। लालन पालन वात्सल्यमयी माता, दानकुंवरि देवी की स्नेहिल छाया में सम्पन्न होता रहा। माँ के त्याग, तप तथा पिता के तपस्वी रूप का संस्कार बीज के रूप में आचार्य जी को प्राप्त हुआ जो कालान्तर में वट वृक्ष के रूप में विकसित हुआ।

3.1.3 शिक्षा

पं० श्री राम शर्मा आचार्य के शिक्षा के विषय में कहा जाए तो उनके पास सैद्धांतिक डिग्री की अपेक्षा व्यावहारिक ज्ञान अधिकतम मात्रा में विद्यमान थी। हमारी वसीयत और विरासत के में अपनी शिक्षा के विषय में लिखा है कि ‘जन्मभूमि के गांव में प्राथमिक पाठशाला थी। सरकारी स्कूल की दृष्टि से इतना ही पढ़ा है, संस्कृत हमारी वंश परंपरा में घुसी हुई है, पिता जी संस्कृत के असाधारण प्रकाण्ड विद्वान थे, हमारा पैतृक व्यवसाय पुराणों की कथा कहना तथा पौराहित्य रहा है। सो उस कारण उसका भी समुचित ज्ञान हो गया। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने 12 साल की उम्र में बाल सेना का निर्माण किया और इसके माध्यम से स्वतंत्रता सेनानी के रूप में स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेना शुरू किया। आचार्य श्री ने अपनी ही उम्र के आठ-दस बच्चों को एक इस प्रकार आचार्य जी के पास डिग्री की दृष्टि

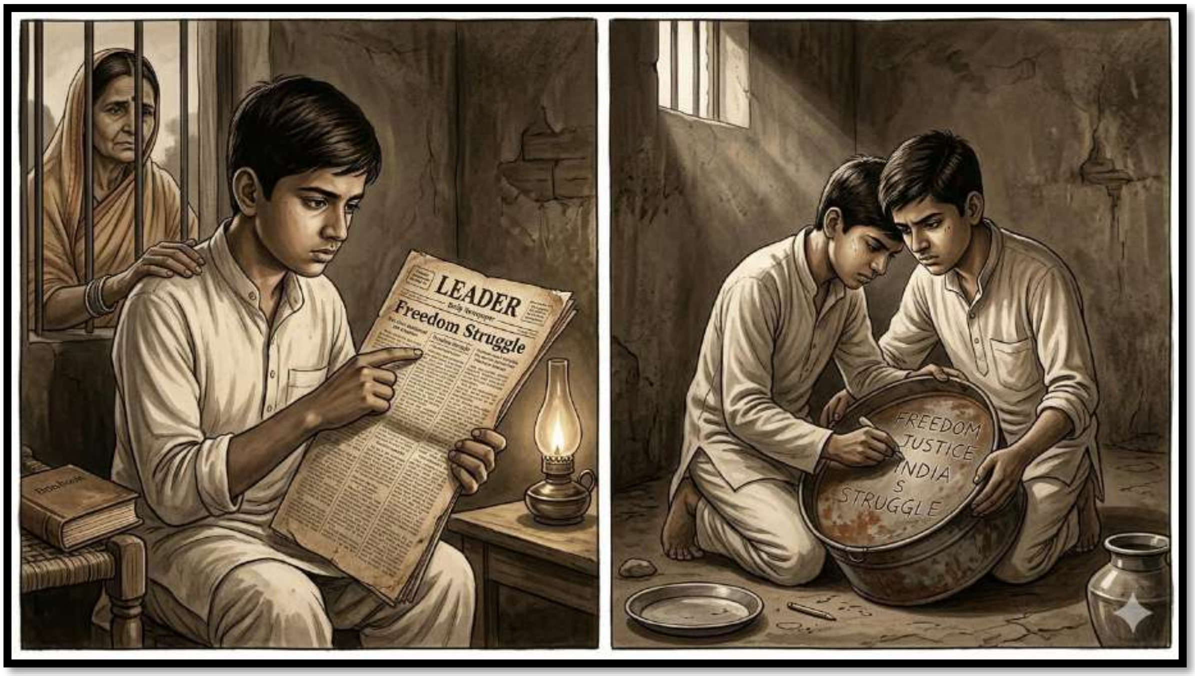
से भले ही कम डिग्री हों, पर ज्ञान का कोई भी कोना उनसे अछूता न रहा, उन्होंने अपनी लेखनी में भी हर विषय को स्पर्श किया है।



बहुमुखी ज्ञान के साथ-साथ कई भाषाओं की जानकारी भी थी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जेल में दैनिक अखबार 'लीडर' उनके हाथ लग गया उसी से अंग्रेजी पढ़ना शुरू किया। लोहे के तसले पर कंकड़ की पेन्सिल से अंग्रेजी लिखना शुरू किया। इस प्रकार जेल से छूटते ही उन्हें अंग्रेजी की अच्छी जानकारी हो गई। अन्य भाषाओं की पत्रिकाएं तथा शब्दकोश अपने आधार रहे हैं और ऐसे ही रास्ता चलते अन्यान्य भाषाएं पढ़ ली हैं।

इस प्रकार आचार्य श्री की शैक्षणिक रुचि, और आध्यात्मिक रुचि उनके व्यक्तित्व को पराकाष्ठा पर ले गई।

किसी भी मनुष्य के व्यक्तित्व के सौभाग्य का सूर्योदय तब होता है, जब उसके जीवन की अनगढ़ता को उसके गुरु सुगढ़ता में परिवर्तित करते हैं, और गुरु जब योग्य, मूर्धन्य और तेजस्वी होहो, तब यह स्थिति सोने में सुहागा का कार्य करती है। किंतु इसके लिए वह पात्रता भी होनी चाहिए, जो आचार्य जी में थी। आचार्य जी के पहले गुरु पं० मदन मोहन मालवीय जी हुए। आचार्य जी के पिता बनारस में मालवीय जी के पास उन्हें ले गए, जहाँ दीक्षा एवं यज्ञोपवीत संस्कार कराया। उन्होंने बालक श्री राम को गायत्री मंत्र की दीक्षा दी



और कहा कि गायत्री ब्राह्मण की कामधेनू है, इससे सब कुछ मिल सकता है। भौतिक जगत का भी और आध्यात्मिक जगत का भी। इस तथ्य की पुष्टि पूजनीया भगवती देवी शर्मा जी की उक्ति से होती है- “आचार्य के सांसारिक गुरु मदनमोहन मालवीय थे, यज्ञोपवीत और गायत्री मंत्र इन्हीं ने दे दिया था। आचार्य जी के सांसारिक गुरु तो पं० मदन मोहन मालवीय जी रहे किंतु उनके आध्यात्मिक गुरु योगीराज श्री सर्वेश्वरानंद रहे. इन्हें दादा गुरु के नाम से जाना जाता है। किसी महामानव के जीवन में दिव्य सत्ता के आगमन का उद्देश्य उसमें मानव मात्र का कल्याण करना होता है। ऐसी समष्टिगत चेतना जब किसी मानव जीवन में अवतरित होती है तो वह सामान्य मानव न होकर असामान्य अवतारी पुरुष हो जाता है। पूज्य गुरुदेव के बाल्यकाल में ही पन्द्रह वर्ष की आयु के बाद आए वसंत पर्व के ब्रह्ममुहुर्त में पूजा की कोठरी में एक प्रकाशपुंज प्रकट हुआ। उस दिव्य प्रकाश में सारी कोठरी जगमगा उठी। प्रकाश के मध्य एक योगीराज का सूक्ष्म छाया शरीर उभरा। यह सूक्ष्म छाया धारी योगीराज स्वामी सर्वेश्वरानंद ही थे, जो दिव्य प्रकाश के रूप में गुरु के समक्ष आए और उनके विस्मित कौतुहल को समाप्त करते हुए बोले- ‘हमारे तुम्हारे जन्म जन्मान्तरों के संबंध है तुम्हारे पिछले जन्म एक से एक बढ़कर रहे हैं, किन्तु प्रस्तुत जीवन और भी विलक्षण है। इस जन्म में समस्त अवतारी सत्ताओं के समतुल्य पुरुषार्थ

करना है, भारतीय संस्कृति के नवोन्मेष हेतु एक विशाल संगठन देवमान्यों का खड़ा करना है तथा इसके लिए प्रचण्ड तप और पुरुषार्थ करना है।

उनका मार्गदर्शन करते हुए उन्होंने कहा कि यह तुम्हारा दिव्य जन्म है, तुम्हारे इस जन्म में भी हम तुम्हारे सहायक रहेंगे और शरीर से वह करवायंगे जो समय की दृष्टि से आवश्यक है।" आचार्य श्री राम शर्मा-हमारी वसीयत और विरासत- इस प्रकार आचार्य जी के जीवन का उत्कर्ष उनके सांसारिक और आध्यात्मिक गुरु के मार्गदर्शन से हुआ। उनके गुरु ने उन्हें न केवल आध्यात्मिकता की ओर निर्देशित किया बल्कि समय की पुकार को सुनते हुए देश की जनचेतना को जागृत करने के लिए भी प्रेरित किया।

3.1.4 राष्ट्रभक्त के रूप में भूमिका

संत, सुधारक और शहीद इन तीनों व्यक्तित्व का समन्वय आचार्य जी में देखने को मिलता है। वे संत प्रवृत्ति के होने के साथ-साथ स्वतंत्रता सेनानी भी थे। देश को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त करने के लिए आचार्य जी भी स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। राजनीति में आचार्य जी राष्ट्रसंत पं० श्री राम शर्मा आचार्य उर्फ श्री राम मत्त के नाम से जाने जाते थे। हमारी वसीयत और विरासत के बारे में आचार्य जी कहते हैं- "देश के लिए हमने क्या किया? कितने कष्ट सहे, सौंपे गए काम को कितनी खूबी से निभाया? इसकी चर्चा करना यहां सर्वथा अप्रासंगिक होगा। उसे जानने की आवश्यकता प्रतीत होती हो तो परिजन पाठक उत्तर प्रदेश सरकार के सूचना विभाग द्वारा प्रकाशित आगरा संभाग के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पुस्तक पढ़ें। उसमें अनेकों महत्वपूर्ण कार्यों के साथ हमारा उल्लेख हुआ है। श्री राम मत्त हमारा उन दिनों का प्रचलित नाम है।' पूज्य आचार्य जी के सक्रिय राजनीतिक जीवन का भी श्री गणेश, दैनिक अखबार सैनिक में सौपे गये उत्तरदायित्व से हुआ। श्री कृष्ण दत्त पालीवाल ने इन्हें प्रेस का कार्य कम्पोजिंग, पुफरीडिंग और लेखन आदि कार्य सौपा, इनके क्रांतिकारी गीत विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में भी सैनिक, विद्यार्थी, दैनिक विश्वामित्र, किस्मत मस्ताना आदि में छपनें लगी, जो सम्पूर्ण देश की चेतना को झंकृत करने, का कार्य की, उन्होंने देशवासियों के मनोबल को बढ़ाने के साथ-साथ उनमें क्रांति की ज्वाला भी बढ़ाने का कार्य किया। आचार्य जी दैनिक सैनिक में मत्तप्रलाप शीर्षक से नियमित रूप से गीत लिखते थे. सन् 1935, 39 में छपें कुछ गीत निम्न रूप में है।

"देख देखकर बाधाओं को पथिक न घबरा जाना।

सब कुछ करना सहन किन्तु मत पीछे पैर हटाना।।

माता व्यथित हुई कैसे ? जल आंखों में भर आया।

रोती है, जननी यह कैसा संकट जननी तुझ पर आया।।

कोई भी हो दुश्मन तेरा निश्चय मिट जायेगा।

तीस कोटि हुँकारो से नभ मण्डल फट जावेगा।।

मलय मरूत हो बन्द, बवंडर के प्रचण्ड झोके आगे!

परिवर्तन निश्चय है, बहिरे सुने आंख अन्ये खोलें!

शांत हिमालय फटे शिलाएं उड़े चूर हो टकरावें।।

सोने वाले उठे, सिपाही जागे, सावधान हो ले।।



आचार्य जी देश प्रेम में मग्न मतवाले होने के कारण मत जी के नाम से जाने गए। सत्याग्रह आन्दोलन में पुलिस अधिकारियों उन्हें इतना पीटा कि वे बेहोश हो गए, फिर भी

झण्डा अपने मुंह से नहीं छोड़ा। इसी घटना के पश्चात् आचार्य जी मत्त के नाम से जाने गए।

‘नशाखोरी के विरुद्ध पिकेटिंग, चौकीदारों, मुखियाओं से इस्तीफे दिलाने, कॉलेजों पर धरना करने. बाल भारत सभा, ग्राम-ग्राम प्रचार और समानान्तर सरकारों की स्थापना तथा किरावली काण्ड में आचार्य जी की भूमिका एक तपे हुए सैनिक की थी। इन आन्दोलनों में सक्रियता के कारण उन्हें 5 अप्रैल 1932 को गिरफ्तार किया गया। 19 को उन्हें छः माह की कैद और 25 रुपये जुर्माने की सजा सुनाई गई।“

“15 अगस्त 1922 ई० को आई० ए० एस० माननीय श्री हरिशचन्द्र जी, प्रभारी जिलाधीश सहारनपुर ने स्वयं शांतिकुंज हरिद्वार पहुंचकर पूज्य गुरुदेव पं० श्रीराम शर्मा आचार्य को विभिन्न लोगों की उपस्थिति में ताम्रपत्र भेट किया। स्वाधीनता संग्राम सेनानी प्रमाणपत्र व पेन्शन के परिपत्र प्रदान किए।“



अनासक्त स्वतंत्रता सेनानी आचार्य श्री ने निस्वार्थ भाव से दी गई सुविधाओं की तिलांजली दे दी। सबका आभार व्यक्त करते हुए तत्कालीन स्वाधीनता संग्राम सेनानी पेन्शन अनुसचिव श्री अम्बिका प्रसाद मिश्रा जी को पत्र भी लिखा तथा पेंशन राशि को देशहित के लिए समर्पित कर दी।

"पेंशन राशि 401 है, इसे आप किसी सरकारी हरिजन सहायता कोष में समर्पित करा दे, यदि ऐसा कोई कानून न हो, तो मुख्यमंत्री राहत कोष में उसे दिला दें। शुभाकांक्षी - हस्ताक्षर श्रीराम शर्मा आचार्य।

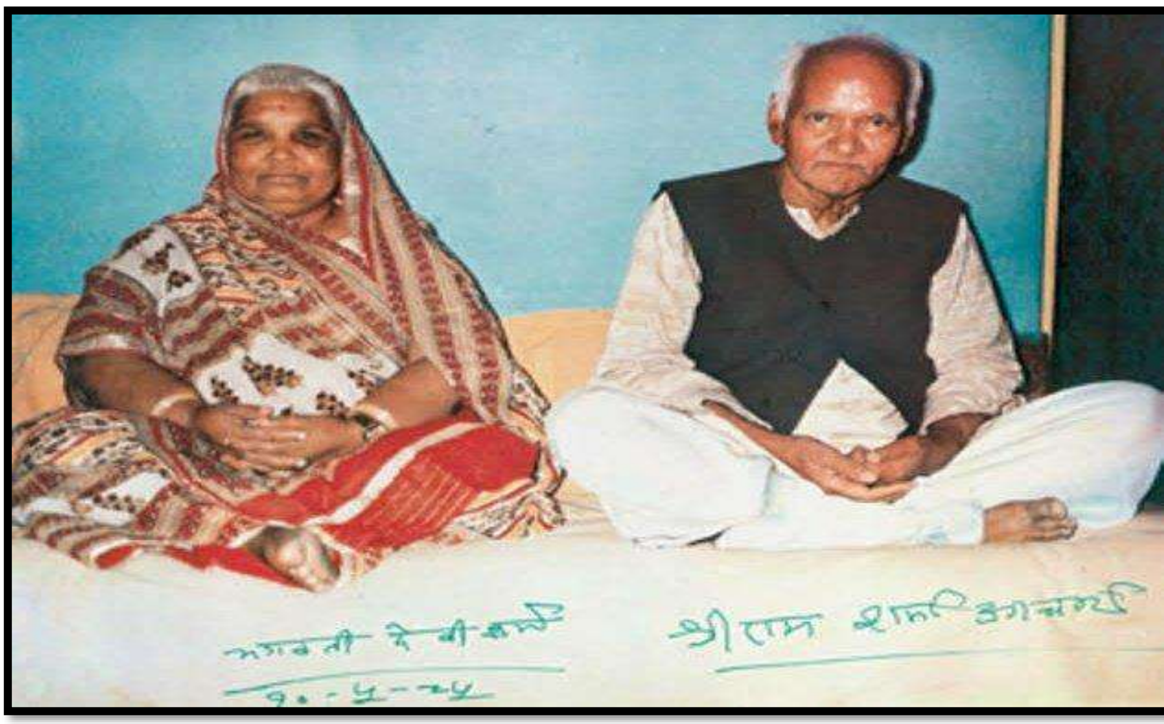
देश की इस महान सपूत की प्रथम पुण्यतिथि पर 29 जुन 1991 को भारत सरकार ने उनके सम्मान में एक रुपया का रंगीन डाक टिकट प्रसारित किया, जिसका विमोचन तत्कालीन उपराष्ट्रपति महामहिंग डॉ० शंकर दयाल शर्मा ताल फटोरा स्टेडियम नई दिल्ली में किया। (14) आचार्य जी ने देश की स्वाधीनता के लिए जो संघर्ष किया यह अवर्णनीय है उसे शब्दों में व्यक्त कर पाना सम्भव नहीं है। इरा निस्वार्थ स्वतंत्रता सेनानी को युगों तक हर पीढी स्मरण करती रहेगी।



3.1.5 विवाह एवं सन्तान (गृहस्थ जीवन)

मदन मोहन मालवीय द्वारा आचार्य जी को 11 वर्ष की अवस्था में गायत्री दीक्षा दी गई और यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। इसके कुछ वर्ष पश्चात् ही परम पूज्य गुरुदेव 'पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का प्रथम विवाह श्री रूप शर्मा, बरसौली (अलीगढ़) की कन्या सरस्वती देवी से हुआ था। इनसे गुरुदेव की तीन सन्तानें हुई: श्री ओमप्रकाश शर्मा, दयावती उपाध्याय,

श्रद्धावती (विवाहोपरान्त निधन) प्रथम विवाह के कुछ वर्ष पश्चात् 15 वर्ष की आयु में दादा गुरु श्री स्वानी सर्वेश्वरानन्द ने प्रथम साक्षात्कार में ही इनके दूसरे विवाह का संकेत देते हुए कहा था कि "तुम्हारे विवाहित होने से मैं प्रसन्न हूँ। इसमें बीच में व्यवधान आ सकता है, पर पुनः तुम्हें पूर्व जन्म में तुम्हारे साथ रही सहयोगिनी पत्नी के रूप में मिलेगी, जो आजीवन तुम्हारे साथ रहकर महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। युगद्रष्टा का जीवन दर्शन वन्दनीया माता सरस्वती देवी जी की मृत्यु के पश्चात् आचार्य जी का दूसरा विवाह पूजनीया भगवती देवी शर्मा के साथ हुआ। इनसे इन्हें एक और पुत्र एक पुत्री मृत्युंजय शर्मा और शैलबाला हुए, मृत्युंजय शर्मा की तीन पुत्रियों हैं- मंदाकिनी, मनीषा और मृणालिनी। श्रीमती शैलबाला पण्डया के पुत्र डॉ. चिन्मय पण्डया हैं। आचार्य पुत्री शैलबाला, जिनका विवाह परमपूज्य गुरुदेव ने डॉ. प्रणव पण्डया, आत्मज श्री सत्यनारायण पण्डया के साथ सम्पन्न कर दिया। वर्तमान में डॉ. प्रणव पण्डया ब्रहावर्चस शोध संस्थान के निदेशक हैं। डॉ. मृत्युंजय



शर्मा 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के प्रकाशक हैं। आचार्य जी का जीवन सुखमय, त्यागमय रहा; गृहस्थ जीवन के विषय में उनका कहना है- "गृहस्थ जीवन एक तपोवन है, जिसमें संयम, सेवा और सहिष्णुता की आवश्यकता पड़ती है।" इस तथ्य को उन्होंने निजी जीवन में भी चरितार्थ कर दिखाया। आचार्य जी ने अपनी पत्नी भगवती देवी के विषय में लिखा

है- “यों वे रिश्ते में हमारी धर्म पत्नी लगती हैं, पर वस्तुतः वे अन्य सभी की तरह हमें भी माता की भाँति दुलारती रही। उनमें मातृत्व की इतनी उदात्त गरिमा भरी पड़ी है कि अपने वर्तमान परिवार को भरपूर स्नेह दे सकें।“ अपनी पारिवारिक भूमिका के निर्वाह के साथ-साथ उन्होंने सामाजिक भूमिका भी भलीभाँति निभाई।



3.1.6 सामाजिक भूमिका- सद्गृहस्थ होने के साथ-साथ आचार्य जी समाज सुधारक भी थे। जिन्होंने समाज में व्याप्त नाना प्रकार की कुरीतियों, को दूर करने का बीड़ा उठाया। छुआछूत, जाति-पांति, भेद-भाव, बलि प्रथा, अशिक्षा, पर्दाप्रथा, भ्रूण हत्या की कड़ी आलोचना की। वे समाज में एकता, समता, मातृत्व के सुत्र स्थापित ‘करना चाहते थे। स्त्रियों के प्रति हीनता की ग्रंथि को “नर-नारी एक समान” सूत्र में स्थापित किया तथा उसकी वैदिक गरिमा को प्रतिष्ठित किया।

3.1.7 महानुभावों का सान्निध्य- आचार्य जी आरम्भ से ही विशिष्ट व्यक्तियों के सम्पर्क में रहे। डॉ. मदन मोहन मालवीय, महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, अरविन्द घोष, रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि महानुभावों का सान्निध्य इन्हें प्राप्त हुआ। उन्हीं के शब्दों में-

"अनेक मूर्धन्य प्रतिभाओं से सम्पर्क साधने के अवसर अनायास ही आते रहे हैं। सदा विनम्र और अनुशासनरत स्वयंसेवक की अपनी हैसियत रखी, इसलिए मूर्धन्य नेताओं की सेवा में किसी विनम्र स्वयंसेवक की जरूरत पड़ती तो हमें भेज दिया जाता। आयु भी इसी योग्य थी। इसी सम्पर्क में हमने बड़ी से बड़ी विशेषताएं सीखी। अवसर मिला तो उनके साथ रहने का सुयोग मिला। साबरमती आश्रम में गाँधी जी के साथ और पवनार आश्रम में विनोबा जी के साथ रहने का लाभ मिला है। इन महानुभावों के अतिरिक्त आचार्य जी का सम्पर्क आध्यात्मिक ऋषि-मुनियों तथा विशिष्ट दिव्यात्माओं से भी



रहा। महात्मा आनन्द स्वामी (प्रमुख आर्य समाज), संत पवन दीवान, कांचीकाम कोटि पीठ के शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती के अलावा लाहिड़ी महाशय, मोहन साईं, हातोसान और अशोक गिरि हिमालयवासी गुरु सर्वेश्वरानन्द के सान्निध्य में विशिष्ट सूक्ष्म सत्ता के भी दर्शन हुए। इनके अलावा वे गर्ग मुनि, ऋषि धौम्य, सन्त पुण्डलीक, बाबा नरहरिदास, जीवानन्द, सिद्धेश्वर गिरी, पवहारी तथा स्वामी कृष्णानन्द के घनिष्ठ सम्पर्क में रहे। इनके अलावा और भी दो दर्जन से ज्यादा सिद्ध सान्निध्य प्राप्त हुआ। इन सिद्ध रान्तों के अलावा इन्हें हिमालय की दिव्य सूक्ष्म सत्ता का सामीप्य भी प्राप्त हुआ। आध्यात्मिक गुरु सर्वेश्वरानन्द, लाहिड़ी महाशय, मोहन साईं, हातोसान और अशोक गिरि का नाम भी

विशेष उल्लेखनीय है। इन दिव्य सन्तों के सान्निध्य से इनके जीवन में उल्लेखनीय घटनाएँ घटी।

3.1.8 साधक के रूप में भूमिका

मदन मोहन मालवीय के द्वारा ही हुई गायत्री दीक्षा के उपरान्त आचार्य श्री राम शर्मा ने इसे अपने जीवन में शिरोधार्य किया तथा 'साधना से सिद्धि' के सूत्र में अपनाया। 124 लक्ष महापुरश्चरण समाप्त करने के पश्चात् इन्होंने अन्य लोगों को भी गायत्री दीक्षा दी तथा इसे सार्वजनिक रूप में प्रतिष्ठित किया। ज्येष्ठ सुदी 10 'गायत्री जयन्ती 1953 संवत् 20 को आचार्य जी ने गुरु शिष्य परम्परा के अन्तर्गत पहली दीक्षा तीस साधकों को देकर एक महान शुरुआत की।आज उनके शिष्यों, अनुगामियों की संख्या तीस से बढ़कर करोड़ों तक पहुँच गई है तथा यह अखिल विश्व गायत्री परिवार के रूप में वटवृक्ष की भाँति फल-फूल रहा है।

3.1.9 जन्मभूमि तथा कर्मक्षेत्र- सत्याग्रह आन्दोलन 1934 ई०, के पश्चात् आचार्य जी आगरा से मथुरा सपरिवार आ गए। धीयामण्डी, मथुरा से 1940 ई० में "अखण्ड ज्योति" पत्रिका के प्रकाशन की शुरुआत हुई, जो आज अखण्ड ज्योति संस्थान के नाम से प्रसिद्ध है। 1953 ई० में मथुरा में गायत्री तपोभूनि की स्थापना की 1953 ई० से 1971 तक गायत्री तपोभूमि उनका कर्मक्षेत्र बना रहा। साधना के लिए 1971 ई० में आचार्य जी हिमालय चले गए तथा हिमालय से आने के पश्चात् हरिद्वार आए तथा 1972 ई० में वैज्ञानिक आध्यात्मवाद के सिद्धांत को प्रतिपादित करने हेतु उन्होंने ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान की स्थापना की। उनके द्वारा स्थापित शांतिकुंज ही उनकी अन्तिम कार्य स्थली रही। आचार्य जी की जीवनयात्रा एक ब्रह्मकमल के समान पुष्पित-पल्लवित थी। अपने अन्तिम घड़ी की घोषणा करते हुए परिवर्तन के महान क्षण में कहा था- "अस्सी वर्ष जी। लेने के उपरान्त और अधिक जीने की इच्छा तो तनिक भी नहीं है।



3.1.10 मृत्यु

2 जून 1990 ई० को गायत्री जयन्ती के दिन आचार्य जी महासत्ता में विलीन हो गए किन्तु सूक्ष्म रूप में अपने शिष्यों का सरक्षण करते हैं। प्रखर प्रज्ञा के रूप में आज भी शांतिकुंज में अपने करोड़ों अनुयायियों को अपने स्नेहिल संरक्षण से आश्वस्त करते हैं।



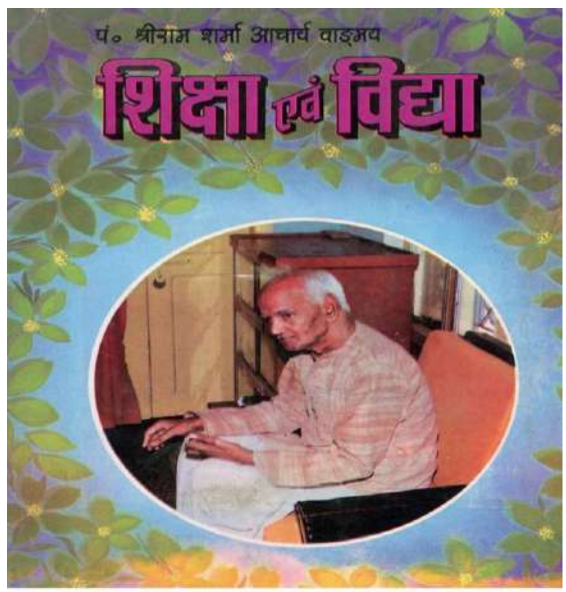
3.2 आचार्य श्रीराम शर्मा का कृतित्व

3.2.1 पत्रकार के रूप में भूमिका- श्री कृष्णवत पालीवाल की पत्रिका 'सैनिक' में आचार्य जी ने 1928 में पत्रकार के रूप में शुभारम्भ किया। इन्होंने प्रेस का कार्य कम्पोजिंग, प्रुफ रीडिंग और लेखन आदि आरम्भकिया। सैनिक' प्रेस में कम्पोजिंग, पुफ रीडिंग एवं सम्पादन का काम सम्भाल लिया। कई बार प्रेस पर छापा पड़ता, क्योंकि श्री कृष्णदत्त जी पालीवाल इसके मालिक थे और सभी सेनानी उन्हीं के पास रह रहे थे। ऐसे में नियमित रूप से संयत भाषा में सेंसर से बचाते हुए पत्र निकालने का काम एक कुशल स्तर का सम्पादक ही कर सकता था. जिसे पूज्यवर ने बखूबी किया। इस प्रकार आचार्य जी ने पत्रिकाओं का नियमित सम्पादन-प्रकाशन किया, पत्रकार के रूप में आचार्य जी की भूमिका काफी सक्रिय रही। सैनिक पत्रिका का काम वे इतने सुनियोजित ढंग से सम्भालते थे कि कृष्णदत्त पालीवाल को बन्दी बना लिए जाने पर भी "सैनिक प्रेस का काम रुकने नहीं दिया तथा उनकी अनुपस्थिति को बोध भी न होने दिया।

पूज्य आचार्य जी जेल से लौटे तब तक प्रेस आर्डिनेंस द्वारा दैनिक पत्रिका सैनिक' के प्रकाशन पर रोक लगा दी गई थी। उसके स्थान पर साइक्लोस्टाइल सत्याग्रह समाचार' 'सैनिक, सहनाद' आदि आरम्भहुआ। उसमें पूज्य आचार्य जी ने बड़ा कार्य किया।

1938 में उन्होंने आगरा से अखंड ज्योति पत्रिका प्रकाशित की, लेकिन औपचारिक व्यवस्थाओं के अभाव में उन्होंने 1940 से अखंड ज्योति पत्रिका का प्रकाशन पुनः शुरू किया। 1941 में मथुरा से अखंड ज्योति का प्रकाशन शुरू हुआ। 1941 में गायत्री जयंती के अवसर पर मथुरा के घियामंडी में अखंड ज्योति प्रकाशन का स्थायी केंद्र स्थापित किया गया। 1975 में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर उन्होंने महिला जागृति अभियान पत्रिका का शुभारंभ किया। इस पत्रिका के लेखों ने न केवल परिवार के मुखिया को बल्कि बच्चों और अन्य सदस्यों को भी जीवन की एक नई दिशा दी। पांच साल बाद, इस पत्रिका का युग निर्माण पत्रिका में विलय हो गया और इन विषयों पर उसमें चर्चा की जाने लगी।

3.2.2 साहित्यिक योगदान - साहित्य मनुष्य के विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम होती है। जन-जन तक इसके माध्यम से विचारों को सम्प्रेषित किया जा सकता है। आचार्य जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से जनसामान्य की चेतना को झंकृत करने की कोशिश की। वस्तुतः पूज्य गुरुदेव युग परिवर्तन हेतू पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए अपनी लेखनी के द्वारा जन-जन को जागरूक करना चाहते थे। आबाद जी ने विभिन्न विधाओं में लिखा।



3.2.3 भाषा

आचार्य जी की साहित्यिक भाषा मुख्यतः ब्रज और खड़ी बोली रही। आरम्भ में इन्होंने ब्रज भाषा में विभिन्न विषयों पर पुस्तकें लिखी। किसानों की दयनीय स्थिति व खेती की कम पैदावार को देखते हुए उन्होंने अपने ग्रामीण अनुभव और अध्ययन के आधार पर एक पैसा मूल्य की सोलह पुस्तकें प्रकाशित की। फसली बुखार, पशुओं को रोग से कैसे बचाएं? इन

सब पुस्तकों को ये नगण्य से मूल्य पर हाट बाजार में जाकर बीटा करते। उन्होंने अपनी प्रथम पत्नी श्रीमती सरस्वती देवी की सोने की हंसली ही गिरवी रखकर यह काम किया। देहाती ब्रज भाषा में उन्होंने जाति भेद, मृतक भोज खर्चीली शादी, पष्कायाद एवं अन्यान्य अन्धविश्वासों पर पाँच पुसाय बड़ी व्यंग्यात्मक शैली में लिखी जो बही लोकप्रिय हुई। एक पुस्तक बेटा की तेरहवी में वे लिखते हैं कि पण्डित जी दही-चूत कुल्हड पर कुल्हड पिये जा रहे हैं व कंगाल हो गए घरवालों को उलाहना सुना रहे है

चौं पौहे के खाजे में नहीं मार रहयो । आचार्य जी के शब्दों में सही हिन्दी में ये सब किताबें लिखी जाती तो शायद जनता प्रभावित नहीं होती।

अतः आचार्य जी ने जनमानस के विचारों का सन्प्रेषित करने के लिए लोकभाषा को चुन।

3.2.4 विधाएँ

आचार्य जी के साहित्य सृजन में सभी विधाएँ समाहित हैं। "काव्य, कहानी, लेख, यात्रा वृतान्त, संस्मरण, आत्मकथा की यात्रा करता हुआ आर्ष ग्रन्थों के भाष्य तक जा पहुँचा। आचार्य जी ने प्रारम्भ में जिस क्रांतिकारी काव्य की रचना की, वह सन् तीस के दशक में दैनिक 'सैनिक' पत्रिका में प्रकाशित हुआ। उसके बाद उनकी कविताएँ सहगान कीर्तन, प्रज्ञागीत, समूहगान, युग गायन, क्रांतिगीत नामक पुस्तकों में प्रकाशित हुईं। वे आरम्भ में "श्रीमत्त" के नाम से कविता करते थे और बाद में "अज्ञात" नाम से कविता करने लगे।

आचार्य जी के काव्य पक्ष को देखें तो इनके क्रांतिकारी गीत विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में नियमित रूप से प्रकाशित होते थे। दैनिक 'सैनिक और 'विद्‌यार्थी', 'दैनिक', 'विश्वामित्र', 'किस्मत' और 'मस्ताना' जैसी प्रसिद्‌ध पत्रिकाओं में इनकी रचनाएँ प्रकाशित होती थीं।

इनके गीतों ने समूचे बंगाल में क्रांति की आग भड़काने में अपूर्व योगदान दिया तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का मनोबल बढ़ाया, वहीं कांति की ज्याला भी दुतगति से गढ़काई। ये गीत दैनिक सैनिक से में "मत्तप्रलाप" शीर्षक से नियमित रूप से छपा करते थे। जिन्हें आज भी चिरंजीव पुस्तकालय में सुरक्षित करके रखा गया है। 1935-36 में छपे गीत इस प्रकार हैं-

देख-देखकर बाधाओं को पधिक न घबरा जाना

सब कुछ करना सहन किन्तु मत पीछे पैर हटाना ।।

माता व्यथित हुई कैसे? जल आँखों में भर आया।

रोती है. जननी यह कैसा संकट जननी तुझ पर आया।।

कोई भी हो दुश्मन तेरा निश्चय मिट जायेगा।"

किसान की दयनीय दशा के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए उनकी निम्न कविता है-



चीर भूमि का पेट, किया श्रम से गेहूँ उत्पन्न।

कहाँ चला जाता है, मेरा कष्ट उपार्जित अन्न ?

मैं, मेरे पशु सुत, जन, दारा करते हैं उपवास।

कौन हड़प जाता है मेरे रोटी, मेरे ग्रास?



किसान

छाती तोड़ महान परिश्रम, तेरे का परिणाम।

झपट, हड़पता रहता है. यह क्रूर विश्व अविराम।।

तू भूखा, नंगा, रोगी, रहता व्याकुल बेचैन। पर वह ही-ही हँसता है. लखि तेरे गीले नेन।।

जवाहर के प्रति



देख दुर्दशा माता की, जल आँखों में भर आया।

सिंहासन पर लात मार कर, भिक्षा पात्र उठाया।।

छोड़ राजप्रसाद पिता का. घर-घर अलख जगाया।

समझाया "स्वाधीन बनो" जो तेरे पथ पर आया।



इस प्रकार आचार्य जी की कविताएँ समाज, देश, विश्व, व्यक्ति सभी की समस्याओं को चित्रित करती हैं। आचार्य जी 12 वर्ष की आयु से ही कविता लिखना बंद कर दिए थे। इस समय उनकी कविताएँ दिल्ली और आगरा के दैनिक पत्रों में छपती रही हैं, लेकिन वास्तविक रुचि का विषय उनके लेख थे, जो उन्होंने 13 वर्ष की आयु में लिखना आरम्भ कर दिया था। आचार्य जी की लेखनी की सक्रियता "मी की समाधि" कहानी में देखने को मिलती है। यह अगस्त सन् 1926 में लिखी गयी थी। इस कहानी में एक शोषित, निसहाय स्त्री के व्यथित मातृत्व का चित्रण है, इसकी कुछ पक्तियाँ निम्नलिखित हैं- 'राजपूत रमणी आखिर अबला स्त्री। प्रसूति गृह में पड़ी अपने भाग्य को कोस रही थी- ससुराल की राक्षसी विचारधारा अब तक उसे अपने अनुरूप नहीं बना सकी थी। नन्ही सी बालिका को देखकर उसका हृदय फट जाता था, वह भय, आशंका और करुणा की मूर्ति बनी हुई थी।

इनके साहित्य में विभिन्न विषयों की विवेचना निबंध तथा लेख के रूप में उपलब्ध है।

आचार्य जी ने जीवन के सर्वांगीण पक्ष को अपने साहित्य में निरुपित किया है. इन्होंने अध्यात्म से विज्ञान, परिवार, समाज तथा देश के समग्र आयाम पर चर्चा की है। इन्होंने गारात्री महाविद्या पर विश्वकोषिय स्तर का तीन खण्डों में 'गायत्री महाविज्ञान तथा 1960 ई० में चारों येदों का सरल भाषा में बोधगम्य भाष्य, एक सौ आठ उपनिषदों का माष्य, बीस स्मृतियाँ का हिन्दी रूपान्तर अठारह पुराणों का पुनरुद्धार तथा षड्दर्शन के भाष्य, लेखन और प्रकाशन का कार्य सम्पन्न किया। उन्होंने धर्म, अध्यात्म, गायत्री विद्या, जीवन जीने की कला, समग्र आरोग्य, व्यक्ति, परिवार तथा वैज्ञानिक आध्यात्मवाद पर तीन हजार से अधिक छोटी-बड़ी पुस्तकों का प्रकाशन एक महत् कार्य किया है। उनकी 'युग निर्माण योजना एवं युगशक्ति गायत्री पत्रिका का दस विभिन्न भाषाओं में लेखन, सम्पादन और प्रकाशन का कार्य बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इनकी कविता में जीवंतता, प्राणवंता एवं जनभावनाओं की पीड़ा है। इनकी कविताएँ प्रेरक, जनोन्मुखी तथा आदर्शवादी भाव से पूरित हैं। राष्ट्र भक्ति, पराक्रम का भाव इनकी लेखनी से छलकता है। भारत माता को सम्बोधित करते हुए कुछ पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

"माता! व्यथित हुई कैसे? जल आँखों में भर आया।

है! रोती है, कैसा संकट, जननी तुझ पर आया।

किधर गया वह नारकीय नर, जिसने तुझे संताया?

इतनी हिम्मत किसने की? या कौन कहाँ से आया?

आचार्य की वैयक्तिक संवेदना, वैश्विक संवेदना के धरातल पर प्रतिष्ठित है। उनके शब्दों में

"बीज बोने से पहिले काल-कूट पीना होगा।

पहिन मृत्यु का मुकुट, विश्वहित मानव को जीना होगा।"

प्रगतिवाद का स्वर इनकी कविताओं में भी देखने को मिलता है। समाज की निम्न, शोषित, बेवस जनता के प्रति संवेदनशील है। गरीब, असमर्थ तथा निसहाय किसान की बेबसी के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए कहते हैं-

छाती तोड़ महान परिश्रम्,

तेरे का परिणाम।

झपट हड़पता रहता है,

यह क्रूर विश्व अविराम।

तू भूखा नंगा, रोगी।

रहता व्याकुल बेचैन।

पर यही ही ही हंसता है।

लख तेरे गीले गैन।



क्रांति और परिवर्तन की स्वर गर्जना इनकी लेखनी में है, अन्याय के प्रति विरोधी तेवर है। जागरूक चेतना की मांग को व्यक्त करती हुई कुछ पंक्तियों निम्न रूप में है-

मलय-मरुत हो बन्द, बवडर के प्रचण्ड झोंके आयें।

शांत हिमालय फटे, शिलाएँ उड़े, चूर हो टकरावे॥

युगद्रष्टा का जीवन दर्शन, रहस्यवाद का स्वर तथा वैयक्तिता भी इनकी कविताओं में प्रस्फुटित होता है-

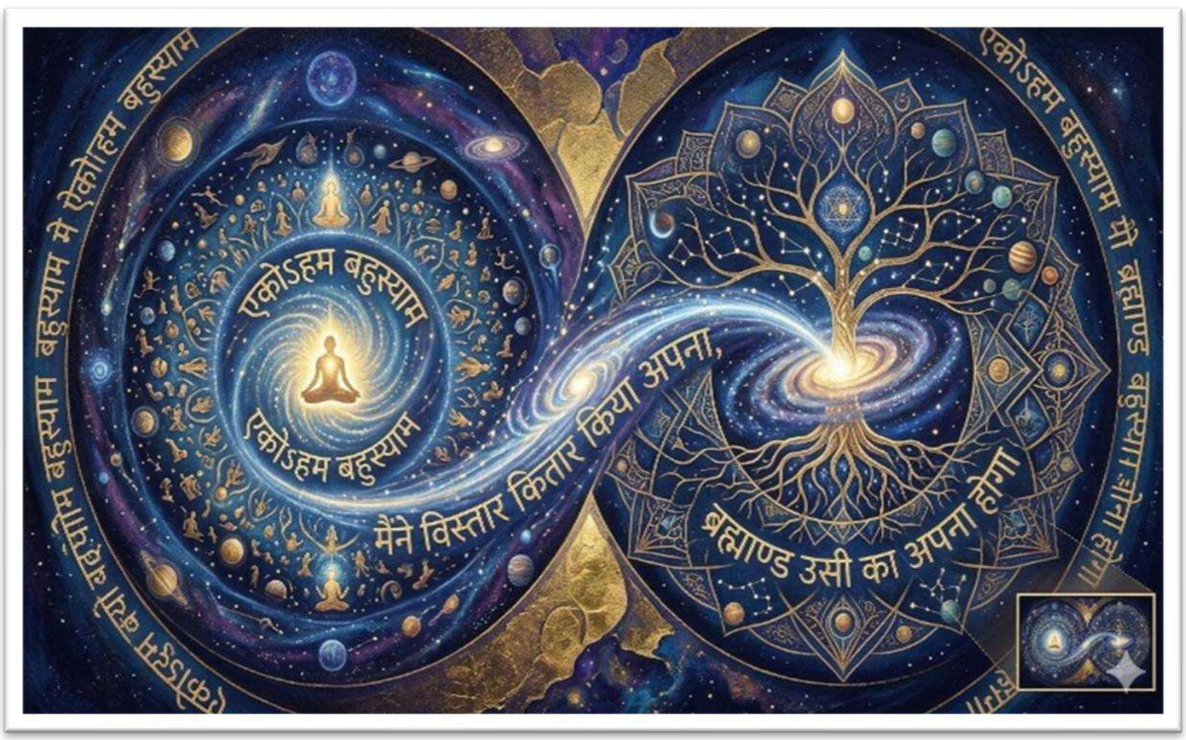
मैं एक

किंतु संकल्प किया

तो एकोऽहम बहुस्याम हुआ।

मैंने विस्तार किया अपना,

ब्रह्माण्ड उसी का अपना होगा ।।



3.2.5 कला पक्ष

आचार्य श्री की लेखनी में मानवीकरण तथा विम्ब देखने को मिलते हैं। मानवीकरण निर्जीव वस्तुओं में जीवन्तता, संवेदना व्यक्त करती है। सुनसान के सहवर में रोते पहाड़ में मानवीकरण की झलक है। "आज रास्ते में रोते पहाड़ मिले उपर किसी सोते का पानी रूका पड़ा था। पानी को निकलने के लिए जगह न मिली-यह गीलापन धीरे-धीरे इकट्ठा होकर बूंदों के रूप में टपक रहा था। इस टपकती बूंदों को लोग अपनी भावनाओं के अनुसार आंसू की बूंदें कहते हैं। इस काई को पहाड़ में कीचड़ कहते हैं। जब वह रोता ही है तो आँखें दुखती ही होंगी और कीचड़ निकलती होगी। रोते हुए पहाड़ आज हम लोगों ने देखे। उनके आँसू भी कहीं से पोछे- पहाड़ तू क्यों रोता है? इसे कौन पूछता? और क्यों वह इसका उत्तर दे?

अव्यक्त को व्यक्त, अगोचर को गोचर अमूर्त को मूर्त रूप में विम्ब के माध्यम से 'प्रकृति का रुद्राभिषेक' में व्यक्त किया है। 'सौंदर्य आत्मा की एक प्यास है, पर कृत्रिमता की कीचड़ में उपलब्ध होना सम्भव है। इन वन-पर्वतों के चित्र बनाकर लोग अपने घरों में टॉगते हैं यों इस सारे ही रास्ते में सौंदर्य बिखर पड़ा था। हिमालय को सौंदर्य का सागर कहते है।"

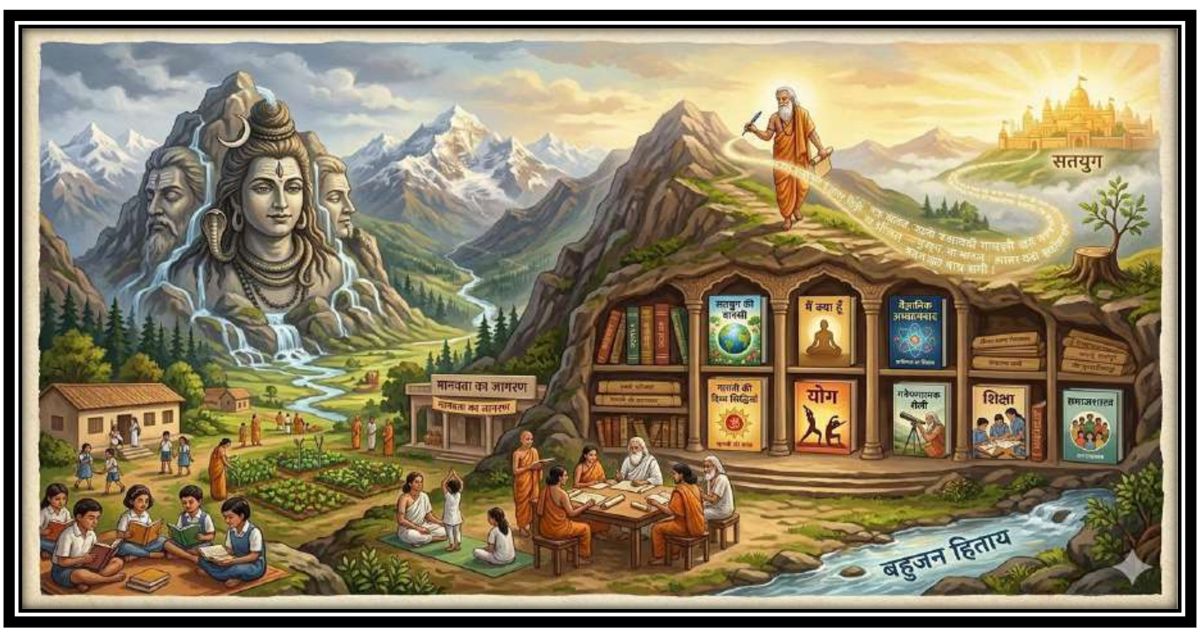


सामने वाले पर्वत पर दृष्टि डाली तो ऐसा लगा मानों हिमगिरी स्वयं अपने हाथों भगवान शंकर के ऊपर जल का अभिषेक करता हुआ पूजा कर रहा हो।

कला के अर्थ में साहित्य का मतलब है शब्द अभिव्यंजना की शैली। शैली दृष्टिकोण का प्रतिविम्ब होती है। दोनों का कौशलपूर्ण उपयोग इस को जन्म देता है। रस छलकाता गद्य भी काव्य से कम सुन्दर नहीं. आचार्य वर की पुस्तक 'सतयुग की वापसी में मानवता की दशा का चित्रण "वर्तमान में जो सर्वत्र कुहासा छाया है। पतझड़ की तरह ठूंठ ही दूँठ का जमघट दिख पड़ता है। पतन और पराभव का नगाड़ा बजता सुनाई देता है।"

इनकी लेखनी छन्दात्मक भाव प्रधान शैली में रही है। इनकी लेखनी में मुख्य अभिया लक्षणा, शब्द शक्ति देखने को मिलती है तथा कांतिकारी साहित्यों तथा कविताओं में व्यंजना शब्द शक्ति भी है।

इस प्रकार आचार्य जी की साहित्यिक योगदान को देखे तो युग की विकल वेदना आचार्य जी की जीवन स्पन्दन बनी और साहिय सृजन के लिए क्रियाशील हुई। उनका जीवन रुड़ियों एवं विडम्बनाओं ही धुरी पर न पुमा और न लेखन् प्रवचन उनका व्यवसाय बना। उनका उद्देश्य केवल मानवता की चेतना को जागरूक कर उन्हें महामानव बनाना था। उन्हें समाज, देश, विश्व के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराकर उत्कृष्टता के पथ पर अग्रसर



करना था। गुरुदेव ने उन्हीं दिनों अपने स्वाध्याय के आधार पर अपनी पहली पुस्तक लिखी थी- मैं क्या हूँ। इसके पश्चात् विविध विषयों से सम्बन्धित साहित्य भी लिखा। सम्मोहन विद्या, जीव जन्तुओं की मूक भाषा, आकृति देखकर मनुष्य की पहचान परकाया प्रवेश,

वशीकरण की सब्बी सिद्धि, मनचाही सन्तान भोग में योग, हस्तरेखा विज्ञान आदि। इन्हीं दिनों योग के नाम पर मायावार नामक पुस्तक उन्होंने प्रकाशित की। जादुगरी या छल, जीवन की गुढ़ गुत्थियों पर तांत्रिक प्रकाश वैज्ञानिक अध्यात्मवाद, गायत्री की दिव्य सिद्धियाँ शक्ति के अनुदान, गायत्री ही कामधेनु है जैसी पुस्तकें भी प्रकाशित हुई इनकी लेखनी मात्र अध्यान तक सीमित नहीं थी. अपितु उन्होंने शिक्षा, स्वास्थ्य परिवार निर्माण, मनोविज्ञान, राजनीति, समाजशास्त्र सभी विषयों को छूती थी। कला का अयुष्ण मूल्य प्रतिष्ठित करती हुई उनकी अन्य मुहावरों से जड़ी भाषा का सौष्ठर उसका तीखापन मानव मन की परतें जोड़ते सीधे अस्तित्य तक पहुँचते बिना नहीं चाता। 'बहुजन हिताय सर्वजन सुखाय के उद्देश्य से सरल भाषा का प्रयोग करते हुए विचारों के इतिहास में क्रांति करने बाले युगमणीची ने अनेक शैलियों को लिखते हुए प्रधानतः गवेषणात्मक शैली का प्रयोग किया है। इनकी लेखनी मालय की अंत प्रकृति के सूम से सूकूमत को अपनी सामान्य भाषा में टॉक देती है।

3.2.6 पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की पाँच प्रमुख स्थापनाएँ

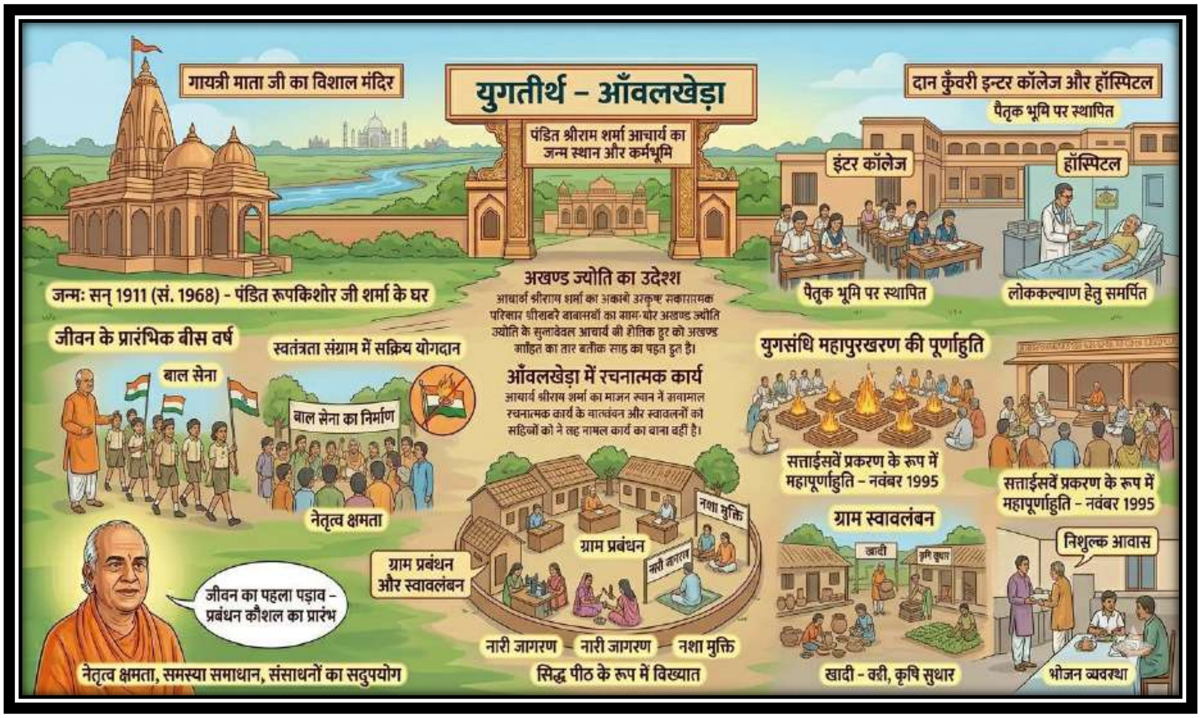
आचार्य श्री के जीवनकाल में अनेकानेक कार्यों, गतिविधिओं, संयोजनाओं, कार्यक्रमों का प्रमुख स्थान रहा है। उन्होंने अपनी युवावस्था से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व को जाग्रत, समुन्नत, प्रगतिशील और ज्यादा बेहतर बनाने के लिए निरंतर विभिन्न कार्य किये हैं। उन्ही काययों में से उनके द्वारा स्थापित संस्थानों में से पांच प्रमुख स्थापनाओं य

था - युग तीर्थ आँवलखेड़ा, गायत्री तपोभूमि-मथुरा, शांतिकुंज हरिद्वार, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान-हरिद्वार और देव संस्कृति विश्वविद्याञ्चय-हरिद्वार का अध्ययन शोधार्थी के द्वारा किया गया है।

(क) युगतीर्थ - आँवलखेड़ा

प्रथम प्रमुख संस्थान है ऑवलखेड़ा। इसका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है- आगरा जलेसर मार्ग पर स्थित यह ग्राम उत्तरप्रदेश के आगरा जिले से 25 किलोमीटर दूर है जिसकी आबादी मात्रा चार हजार है। आज से 112 वर्ष पूर्व ऑवलखेड़ा के पंडित रूपकिशोर जी शर्मा

के घर सन् 1911 ई. (संवत 1968) में एक संतान का जन्म हुआ (शर्मा, 2013) वही बालक आगे चलकर लाखों करोड़ों लोगो के प्रेरणास्त्रोत बने। आँवलखेड़ा, वह स्थान जहाँ आचार्य जी ने अपने जीवन के प्रारंभिक बीस वर्ष बिताए थे। स्वतंत्रता संग्राम की अग्नि आगरा के चारों तरफ तीव्र गति से फैली हुई थी। आँवलखेडा गाँव आगरा के पास होने के कारण आचार्य श्री का आजादी के प्रति और स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय योगदान रहा। यहाँ गायत्री माता जी का विशाल मंदिर स्थापित है। साथ ही आचार्य श्री ने अपनी पैतृक संपत्ति

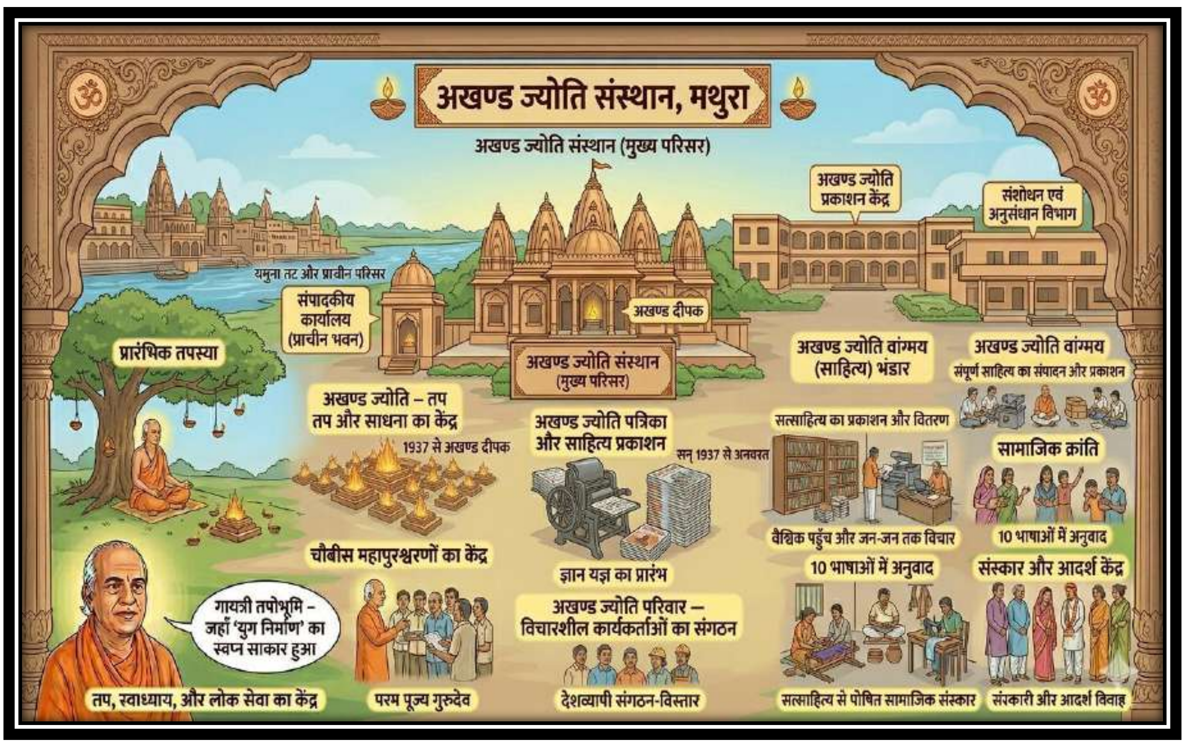


का एक अंश भी अपने पास नहीं रखा। उन्होंने अपने गाँव में अपनी पैतृक भूमि पर दान कुँवरी इन्टर कॉलेज और हॉस्पिटल की स्थापना करवाई। आँवलखेड़ा में गायत्री परिवार स्वावलंबन, साधना, ग्राम प्रबंधन, नारी जागरण, नशा मुक्ति आदि जैसे रचनात्मक कार्यों को निरंतर कर रहा है। अब यह ग्राम देश विदेश के तीर्थयात्रियों के लिए एक सिद्ध पीठ के रूप में विख्यात होने लगा है। यहाँ देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के तहत युगसंधि महापुरखरण की प्रथम महापूर्णाहुति सत्ताईसवें प्रकरण के रूप में नवंबर 1995 में समाप्त हुई (शर्मा, 1966)1 ऑवलखेड़ा पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के जीवन का पहला पढाव था, जहाँ से उन्होंने प्रबंधन के गुणों का प्रयोग करना प्रारम्भ किया। यहाँ उन्होंने बाल सेना का निर्माण किया, स्वतंत्रता संग्राम में अपने युवा साथियों के साथ भाग लिया। सामाजिक

उत्थान हेतु विविध गतिविधियों का संचालन किया और आँवलखेड़ा छोड़ने से पहले अपनी पैतृक संपत्ति को लोककल्याण हेतु समर्पित कर दिया। इन प्रसंगों से आचार्य श्री की नेतृत्व क्षमता, समस्या का पता लगाना और उसका समाधान करना, संसाधनों का सदुपयोग करना, जैसे प्रबंधन कौशल का पता चलता है।

(ख) खण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

आचार्य श्री के द्वारा स्थापित दूसरा संस्थान है अखण्ड ज्योति संस्थान, मधुरा (घीया मंडी)। जहाँ उन्होंने लेखनी रुप्प अस्त्र से सन् 1948 में अखण्ड ज्योति पत्रिका का संपादन एवं



प्रकाशन आरंभकिया एवं गायत्री परिवार को सतत मार्गदर्शन देते हुए उत्कृष्ट और सकारात्मक चिंतन को घर-घर पहुँचाया (अ.वि.गा.प. 2022)। आज साढ़े चार लाख व्यक्ति इस पत्रिका को हिन्दी में पढ़ते तथा दस लाख लोगों को पढ़ाते हैं। इस पत्रिका का अनुवाद दस भाषाओं में छप कर दस लाख और व्यक्तियों तक पहुँचाया जाता है। इसी स्थान पर निवास करते हुए उन्होंने हजारों व्यक्तियों से व्यक्तिगत पत्र व्यवहार करते हुए उनको अपना अभिन्न अंग बनाया, उनकी समस्याएँ सुलझाई एवं उन्हें एक विशाल गायत्री परिवार का सदस्य बना लिया। यह वही स्थान है जहाँ हर जाति, मत, सम्प्रदाय का व्यक्ति उनके

पिता की तरह स्नेह करता। यहीं पर उन्होंने आर्षग्रन्थों का भाष्य कर उन्हें जन सुलभ बनाया, अपने वजन से भी कई गुना साहित्य रचा एवं नियमित अपनी लेखनी चलाते हुए अपनी साधना के शक्ति स्रोत अखण्ड दीपक के प्रकाश में 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका लिखी।

पडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने पारिवारिकता की भावना से कम संसाधनों में भी ना केवल अखण्ड ज्योति पत्रिका का प्रकाशन किया, बल्कि वहाँ रहने वाले कार्यकताओं का मनोवल बढ़ाते हुए सबको एक साथ रखा। यहाँ आचार्य श्री के प्रबंधकीय कौशल में व्यवहार कुशलता, अभिप्रेरित करने की क्षमता, संसाधनों के श्रेष्ठतम उपयोग की क्षमता आदि को पहचान सकते हैं।

(ग) गायत्री तपोभूमि, मथुरा

तीसरा संस्थान है 'गायत्री तपोभूमि मधुरा' जहाँ उन्होंने धर्म तंत्र के परिष्कार का शेखनाद किया, चौबीस वर्ष तक चौबीस-चौबीस लक्ष के महापुरश्चरणों का उत्तरार्द्ध सम्पन्न किया, ऐतिहासिक सहस्र कुण्डीय यज्ञ के माध्यम से उसकी पूर्णाहुति की एवं देशव्यापी संगठन-

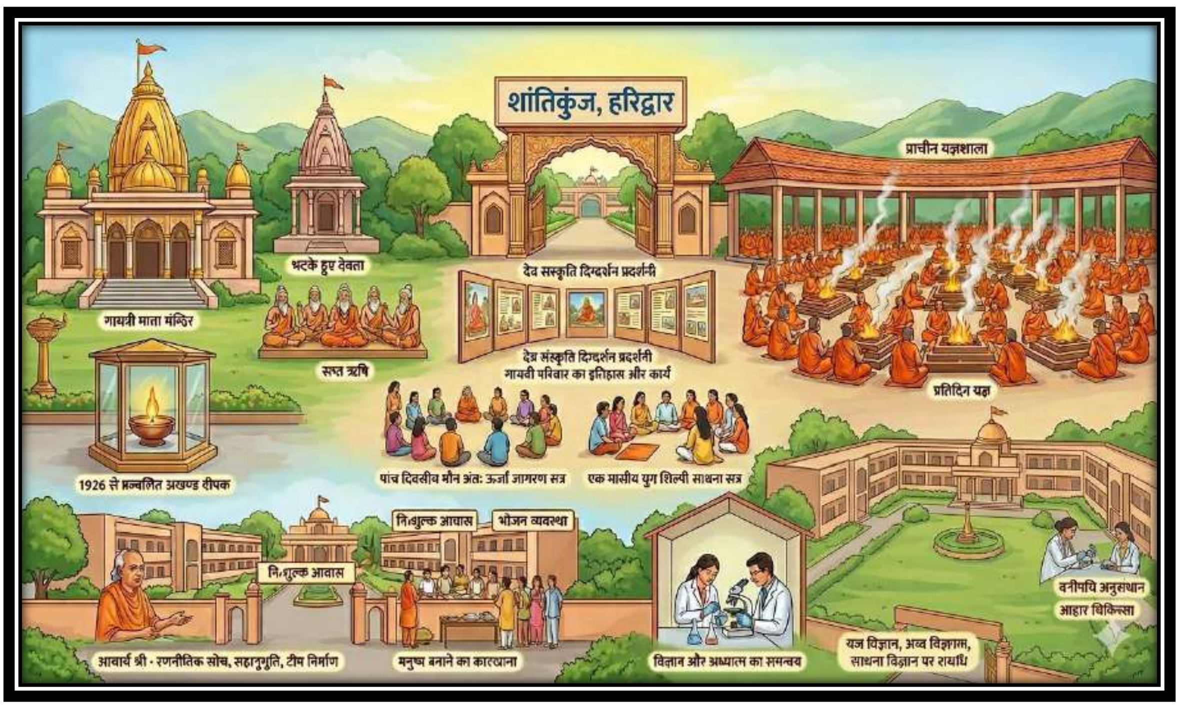


विस्तार हेतु 'युग निर्माण योजना' को जन्म दिया। आचार्य श्री ने यही पर जून 1953 में आयोजित 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में पहली बार साधकों को मंत्र दीक्षा दी, यही पर 1956 में नरमेध यज्ञ एवं 1958 में विराट सहस्त्र कुण्डीय यज्ञ संपन्न हुए, युग निर्माण विद्यालय की स्थापना 1964 में की तथा जून 1971 को मथुरा छोड़कर शांतिकुंज, हरिद्वार स्थानान्तरित हो गए (पाण्डेय, 2009)1

गायत्री तपोभूमि में आचार्य श्री ने एक अनुभवी प्रबंधक की भूमिका निभाई। उन्होंने अपने प्रबंधकीय ज्ञान, अनुभव और योग्यता का परिचय देते हुए एक ऐसे संस्थान का निर्माण कर दिखाया, जो आज भी निरंतर गतिमान और प्रगतिशील है। यहाँ आचार्य श्री के समय प्रबंधन, निर्णयन, संचार कौशल आदि प्रबंधकीय क्षमता से अनुपूरित गुणों का परिचय मिलता है।

(घ) शांतिकुंज, हरिद्वार

मथुरा से सन् 1971 को आचार्य श्री सदैव के लिए गंगा की गोद और हिमालय की छाया में स्थित हरिद्वार आ गए (पाण्डेय, 2007)। यहीं उन्होंने सप्त सरोवर क्षेत्र में हरिद्वार-ऋषिकेश मार्ग पर शांतिकुज आश्रम की स्थापना की। यहाँ पर गायत्री माता का एक भव्य



मंदिर साथ ही भटके हुए देवता का मंदिर भी है तथा सप्त ऋषियों की प्रतिमाओं की स्थापना है। आचार्य श्री द्वारा 1926 से प्रज्वलित अखण्ड दीपक यहाँ निरंतर अपनी ऊर्जा को निस्त कर रहा है। यहाँ देवात्मा हिमालय के नाम से दिव्य हिमालय का मंदिर भी बनाया गया है। देव सस्कृति दिग्दर्शन नामक प्रदर्शनी भी यहाँ विद्यमान है, जिसमें गायत्री परिवार के इतिहास और कार्यों का वर्णन देखने को मिलता है। शांतिकुंज आश्रम में प्रतिदिन

हजारों साधक प्राचीन यज्ञशाला में नित्य नियमित यज्ञ करते है। इस आश्रम में प्रशिक्षण हेतु पांच दिवसीय मौन अंतः ऊर्जा जागरण सत्र, नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र 1 से 9, 11 से 19, 21 से 29 की तारीखों में प्रति माह चलते रहते हैं। लोक मानस के परिष्कार हेतु एक विशिष्ट कार्यक्रम एक मासीय युग शिल्पी साधना सत्र के नाम से प्रति माह चलते हैं, जिसमें गायत्री परिवार के भावनाशील कार्यकर्ता नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक उत्थान हेतु प्रशिक्षण लेने आते हैं। यहाँ शिक्षण, आवास और भोजन की व्यवस्था निःशुल्क होती है। लगभग 2500 उच्च शिक्षित कार्यकर्ता शांतिकुंज में स्थायी रूप से सपरिवार निवास करते हैं और जीवन निर्वाह हेतु वे मात्र सहयोग राशि ही लेते हैं (शर्मा, 2013)।

आचार्य श्री ने शांतिकुंज को "मनुष्य बनाने का कारखाना" की उपमा दी है। यह अखिल विश्व गायत्री परिवार का मुख्यालय भी है। यहाँ आचार्य श्री के कृतित्व में रणनीतिक सोच, सहानुभूति, अनुकूलन क्षमता, अनुशिक्षण कर्ता, प्रशिक्षक, भावनात्मक लगाव, टीम निर्माण आदि का पुट देखने को मिलता है।

(ड़) ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान

आचार्य श्री ने 1979 में विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय हेतु संकल्पित एक संस्थान जो वैज्ञानिकों की टीम के संयोजन एवं आचार्य श्री के मार्गदर्शन में स्थापना हुई जिसका नाम रखा गया 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थाना' यह संस्थान शांतिकुंज गायत्री तीर्थ से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर गंगा तट् के किनारे सप्त सरोवर क्षेत्र में सप्तर्षि मार्ग पर बना है एवं अपनी यज्ञ विज्ञान, शब्द विज्ञान तथा साधना विज्ञान पर बहुमूल्य यंत्र उपकरणों के माध्यम से की जा रही शोध तथा उपलब्धियों के लिए इस अल्प अवधि में ही ख्याति प्राप्त कर चुका है। वनौषधि अनुसंधान, आहार चिकित्सा, साधना से मानसोपचार जैसे विषय अपने हाथ में लेकर इस संस्थान के द्वारा न केवल चिकित्सा की एक नई विधा का क्षेत्र जनमानस के लिए खोला गया है, अपितु तर्क, तथ्य, प्रमाणों के द्वारा दार्शनिक अनुसंधान की प्रक्रिया से अध्यात्म को विज्ञान सम्मत प्रमाणित करने का प्रयास भी किया गया है, जो कि अपने आप में अद्वितीय है (तिवारी, 2008)। यहाँ गायत्री माता का एक भव्य मंदिर भी है, साथ ही गायत्री मंत्र के चौबीस अक्षरों को दर्शाते गायत्री माता के चौबीस रूपों की स्थापना भी की गई है।



एक प्रबंधन को जिज्ञासु और शोध प्रवृत्ति का भी होना चाहिए। ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, आचार्य श्री के शोधकर्ता के स्वरूप को दर्शाता है यहाँ उनके प्रबंधकीय कृतित्व में विश्लेषणात्मक क्षमता, अनुसंधानकर्ता, टीम वर्क क्षमता, सृजन क्षमता आदि गुणों को देखा जा सकता है।

ये पाँचों संस्थान एक ही धरी पर टिके हैं, एक ही गंगोत्री से निकले पाँच हिमनद हैं तथा समाज निर्माण में निरंतर कार्यरत हैं। गायत्री परिवार एक विश्वव्यापी संस्था है, जो कि मानव कल्याण से लोक कल्याण के लिए कार्य कर रही है।

चतुर्थ अध्याय

पंडित श्रीराम शर्मा का बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण सम्बन्धी साहित्य

4.14 धर्म संस्कृति के अग्रदूत

4.15 विज्ञान उपवन के महकते पुष्प

4.16 मुस्लिम धर्मानुयायियों का अनुकरणीय चिंतन व चरित्र

4.17 जिजीविषा की धनी ये असामान्य प्रतिभाएँ

4.18 जीवट एवं संकल्पशक्ति के धनी पराक्रमी व्यक्तित्व

4.19 शिक्षण प्रक्रिया में सर्वांगपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता

4.20 मानवता को विश्वबंधुत्व का मंत्र देने वाले सृजन शिल्पी

4.21 अनीति से जूझने वाले राष्ट्र को समर्पित शूरवीर

4.22 महापुरुषों की जीवनियाँ

4.23 संगीत सौरभ भाग-3

4.24 समय का सदपयोग

4.25 मित्र भाव बढ़ाने की कला

4.26 देखन मैं छोटे लगें घाव करे गंभीर

4.27 समग्र स्वास्थ्य संवर्धन कैसे?

4.28 बुद्धि बढ़ाने की वैज्ञानिक विधि

4.28 बुद्धि बढ़ाने की वैज्ञानिक विधि

4.29 महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग (भाग-1)

4.30 शिक्षा ही नहीं विद्या भी

4.31 वेशभूषा शालीन ही रखिए

4.32 स्वस्थ रहने के सरल उपाय

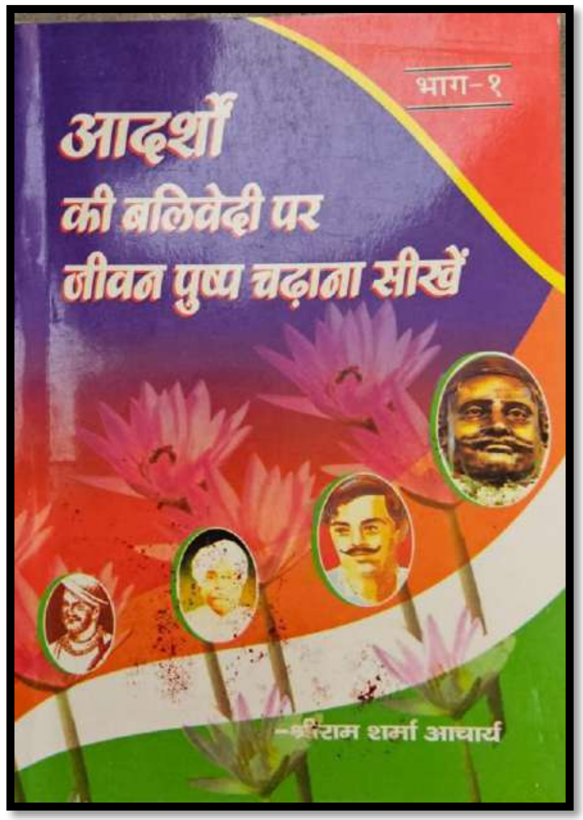
4.33 ब्रह्मचर्य जीवन की अनिवार्य आवश्यकता

4.34 शिष्ट बनें सज्जन कहलायें

चतुर्थ अध्याय

पंडित श्रीराम शर्मा का बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण सम्बन्धी साहित्य

4.1 आदर्शों की बलिवेदी पर जीवन पुष्प चढ़ाना सीखें भाग-1



प्रस्तुत पुस्तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय चेतना के उन स्वर्णिम पृष्ठों को उजागर करती है, जो देश के गौरवशाली इतिहास की नींव हैं। इसमें बंदा बैरागी और धर्मवीर-हकीकत राय जैसे धर्म व संस्कृति के रक्षकों से लेकर मंगल पाण्डे, तात्या टोपे, चंद्रशेखर आज़ाद, चापेकर बन्धु और महावीर सिंह जैसे महान क्रांतिकारियों को स्थान दिया गया है। साथ ही, लाला लाजपतराय, गणेश शंकर विद्यार्थी और स्वामी श्रद्धानन्द जैसी विभूतियों के योगदान को रेखांकित किया गया है जिन्होंने पत्रकारिता, सामाजिक सुधार और राजनैतिक चेतना के माध्यम से समाज को जगाया। यह पुस्तक मात्र जीवनियों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रवाद, आत्मोत्सर्ग और नैतिक मूल्यों का एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।

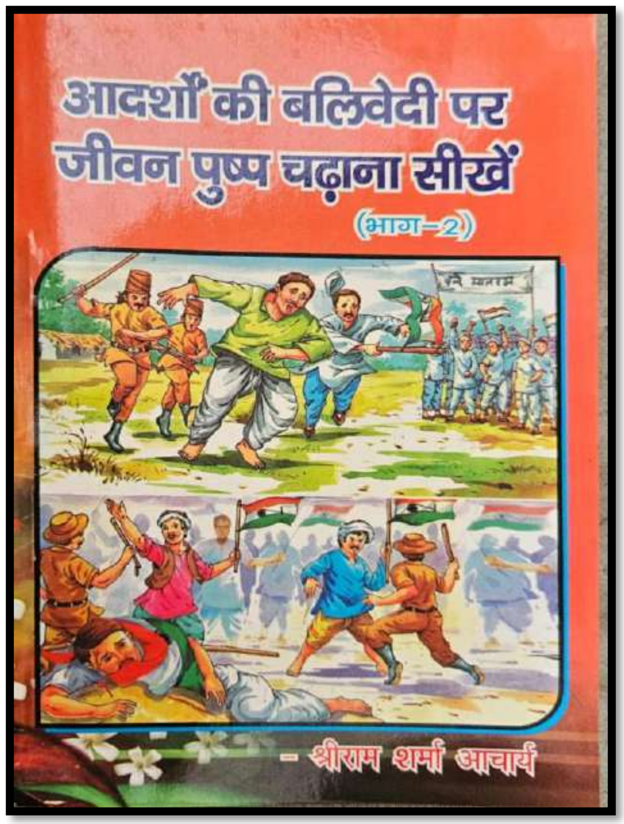
प्रासंगिकता

आज के आधुनिक और वैश्वीकरण के दौर में इस पुस्तक की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है:

- राष्ट्रीय एकता और अखंडता: वर्तमान समय में जब समाज में क्षेत्रीयता या संकीर्ण विचारधाराएं सिर उठाने लगती हैं, तब इन क्रांतिकारियों का साझा संघर्ष हमें याद दिलाता है कि राष्ट्र सर्वोपरि है।

- युवा पीढ़ी के लिए रोल मॉडल: आज सोशल मीडिया के दौर में युवा पीढ़ी को वास्तविक नायकों (Real Heroes) से परिचित कराने के लिए इन राष्ट्रभक्तों के चरित्र अत्यंत प्रासंगिक हैं।
- नैतिक और सामाजिक चेतना: गणेश शंकर विद्यार्थी और स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन आज के समाज को सांप्रदायिक सौहार्द, निर्भीक पत्रकारिता और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ खड़े होने की प्रेरणा देता है।

4.2 आदर्शों की बलिवेदी पर जीवन पुष्प चढ़ाना सीखें भाग-2



प्रस्तुत पुस्तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के उस क्रांतिकारी चरण का जीवंत दस्तावेज़ है, जहाँ 'अहिंसा और समझौतों' से इतर 'पूर्ण स्वराज' के लिए सशस्त्र और प्राणपण से संघर्ष किया गया। इसमें शामिल नाम जैसे– खुदीराम बोस (सबसे कम उम्र के शहीदों में से एक), हेमू कालानी (सिंध के किशोर क्रांतिकारी), और वीर बालक बादल–यह दर्शाते हैं कि भारत की स्वतंत्रता का जज्बा किसी उम्र या वर्ग का मोहताज नहीं था। वहीं अशफाक उल्ला और रामप्रसाद बिस्मिल की अमर जोड़ी देश की साझा और साझी संस्कृति (Composite Culture) तथा सांप्रदायिक सौहार्द का सबसे बड़ा उदाहरण प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक इन हुतात्माओं के अदम्य साहस, वैचारिक दृढ़ता और मातृभूमि के प्रति उनके असीम प्रेम को एक सूत्र में पिरोती है।

प्रासंगिकता (Relevance)

वर्तमान सामाजिक और राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में इस पुस्तक की सामग्री अत्यंत प्रासंगिक है:

- सांप्रदायिक सौहार्द की मिसाल: वर्तमान दौर में जब धार्मिक ध्रुवीकरण की चुनौतियाँ सामने आती हैं, तब बिस्मिल और अशफाक की मित्रता और उनका एक ही लक्ष्य के लिए फंदे पर झूल जाना यह सिखाता है कि राष्ट्रहित सर्वोपरि है।
- किशोरों और युवाओं में भटकाव को रोकना: आज की युवा पीढ़ी जो डिजिटल दुनिया और उपभोक्तावाद में खोई हुई है, उसे खुदीराम बोस और हेमू कालानी जैसे बाल/किशोर नायकों के जीवन से परिचित कराकर आत्म-अनुशासन और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराया जा सकता है।

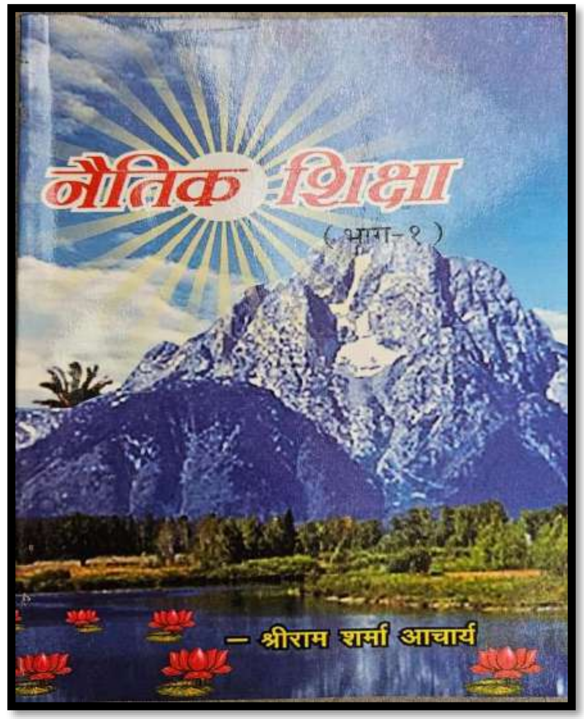
  अनाम नायकों को पहचान: इतिहास के पन्नों में डॉ. मथुरासिंह, क्रांतिकारी बन्तासिंह और सूफी अम्बाप्रसाद जैसे कई नाम मुख्यधारा की चर्चाओं में पीछे छूट गए हैं। इन्हें सामने लाना आज के निष्पक्ष इतिहास-लेखन और क्षेत्रीय गौरव को समझने के लिए प्रासंगिक हैं।

4.3 नैतिक शिक्षा भाग-1

यह पुस्तक मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शिका प्रस्तुत करती है। यह पुस्तक व्यक्ति को केवल एक 'कुशल अर्थोपार्जक जीव' बनाने के बजाय एक 'संवेदनशील सामाजिक नागरिक' बनाने पर बल देती है। इसमें जहाँ एक ओर ईमानदारी, कर्त्तव्यपरायणता और नागरिक कर्त्तव्यों जैसे वृहद सामाजिक मूल्यों की चर्चा है, वहीं दूसरी ओर व्यक्तिगत स्तर पर स्वास्थ्य रक्षा, स्वच्छता, स्वाध्याय और व्यसन-मुक्ति (तम्बाकू/मांस का त्याग) जैसे व्यावहारिक पक्षों को छुआ गया है। इसके अतिरिक्त, खण्ड-3 और खण्ड-4 व्यक्ति के मानसिक स्तर (विचार शक्ति, पुरुषार्थ) तथा भारतीय समाज की धुरी–'परिवार व्यवस्था और संस्कारों' को सुदृढ़ करने का खाका खींचते हैं।

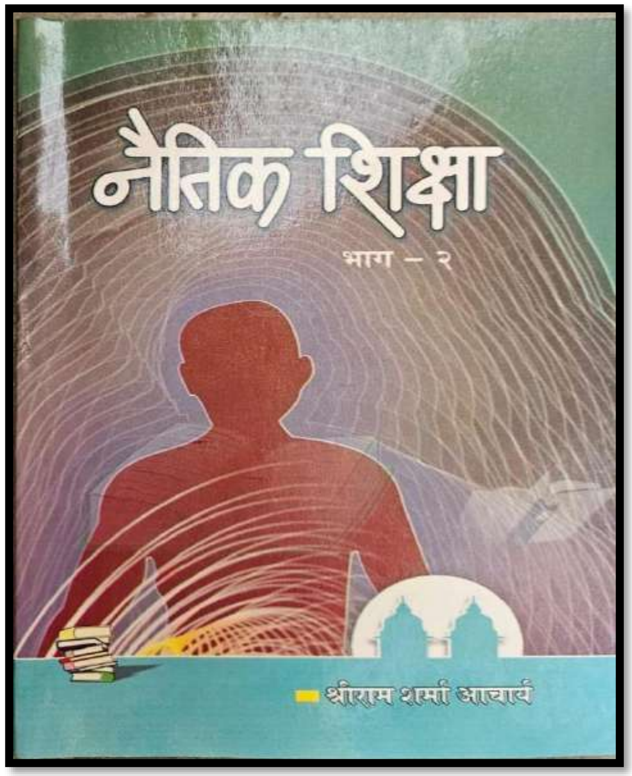
प्रासंगिकता

आज के उपभोक्तावादी, अत्यधिक प्रतिस्पर्धी और तकनीकी युग में इस पुस्तक की सामग्री अत्यंत प्रासंगिक है:



- मानसिक तनाव और भटकाव से मुक्ति: वर्तमान में युवा पीढ़ी जिस अवसाद और अधीरता का सामना कर रही है, उसके समाधान के लिए इस पुस्तक के अध्याय जैसे–"अवरोध से अधीर न हों" और "आवेशग्रस्त न हों" अत्यंत सामयिक हैं।
- पारिवारिक मूल्यों का विघटन: आज के एकल परिवारों (Nuclear Families) के दौर में जब बुजुर्ग एकाकीपन झेल रहे हैं और आपसी रिश्ते बिखर रहे हैं, तब "संयुक्त परिवार प्रणाली श्रेयस्कर" और "सुविकसित परिवार के लिए सुव्यवस्था" जैसे विचार सामाजिक ताने-बाने को बचाए रखने के लिए अनिवार्य हैं।
- बौद्धिक परावलंबन और डिजिटल निर्भरता: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सोशल मीडिया के इस दौर में जहाँ लोग दूसरों के विचारों पर निर्भर हो रहे हैं, वहाँ "बौद्धिक परावलंबन का परित्याग" और "विचार शक्ति और अपना महत्त्व समझें" जैसे अध्याय युवाओं को स्वतंत्र और आलोचनात्मक सोच (Critical Thinking) विकसित करने की प्रेरणा देते हैं।
- स्वास्थ्य और पर्यावरण: आधुनिक जीवनशैली से उपजी बीमारियों के दौर में स्वच्छता, स्वास्थ्य रक्षा और व्यसन-मुक्ति जैसे अध्याय एक स्वस्थ नागरिक समाज के लिए पूर्णतः प्रासंगिक हैं।

4.4 नैतिक शिक्षा भाग-2



यह पुस्तक ऐसे प्रगतिशील और मूल्य-आधारित समाज की रूपरेखा तैयार करती है जो अपनी जड़ों (संस्कृति और अध्यात्म) से जुड़ा हुआ हो, लेकिन जिसकी दृष्टि पूरी तरह आधुनिक और तार्किक हो। पुस्तक का प्रारंभ सामाजिक रूढ़ियों (जैसे पर्दा प्रथा, बाल विवाह, मृत्युभोज, भिक्षावृत्ति) पर प्रहार से होता है और यह 'ज्ञानयज्ञ से नवनिर्माण' की ओर बढ़ती है। इसके पश्चात, यह राष्ट्र निर्माण के व्यावहारिक पक्षों जैसे श्रम का सम्मान, नारी उत्कर्ष, वृक्षारोपण और जागरूक मतदान (वोटरों की सतर्कता) को रेखांकित करती है। अंत में, यह धर्म को अंधविश्वास (भूत-पलीत, पशुबलि) से मुक्त कर उसे सेवा, प्राणिमात्र के प्रति दया और कर्मयोग जैसे वैज्ञानिक अध्यात्म से जोड़ती है।

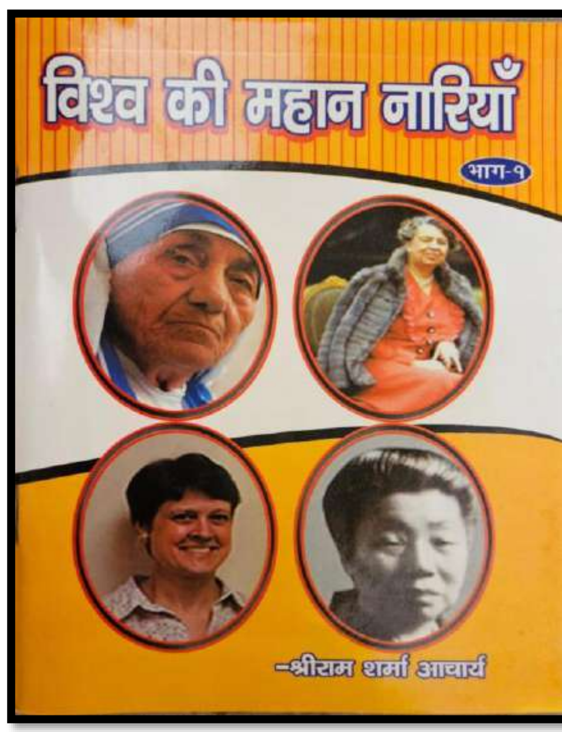
प्रासंगिकता

आज के 21वीं सदी के भारतीय समाज में इस पुस्तक में उठाए गए बिंदु अत्यधिक प्रासंगिक हैं:

- सामाजिक समरसता और रूढ़ि-मुक्ति: आज भी ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में ऊँच-नीच की भावना, बाल विवाह और मृत्युभोज जैसी कुप्रथाएं आर्थिक और सामाजिक विकास में बाधक हैं। इनसे मुक्ति की बात आज भी उतनी ही जरूरी है।

- महिला सशक्तिकरण और लैंगिक समानता: "उच्च शिक्षित कन्या की विवाह समस्या", "विधुर और विधवाओं के समान अधिकार" और "नारी उत्कर्ष हेतु प्रबुद्ध नारी आगे आएँ" जैसे अध्याय आज के 'महिला नेतृत्व वाले विकास' (Women-led Development) के दौर में अत्यंत सामयिक हैं।
- पर्यावरण और पारिस्थितिकी संतुलन: जलवायु परिवर्तन के इस दौर में "वृक्षारोपण और हरीतिमा संवर्धन" तथा "अन्न संकट की चुनौती" जैसे अध्याय सतत विकास (Sustainable Development) के वैश्विक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए प्रासंगिक हैं।
- श्रलोकतांत्रिक चेतना: "वोटरों की सतर्कता" आज के समय में एक जागरूक और जवाबदेह लोकतंत्र के निर्माण के लिए हर नागरिक के लिए आवश्यक सीख है।

4.5 विश्व की महान नारियाँ भाग-1



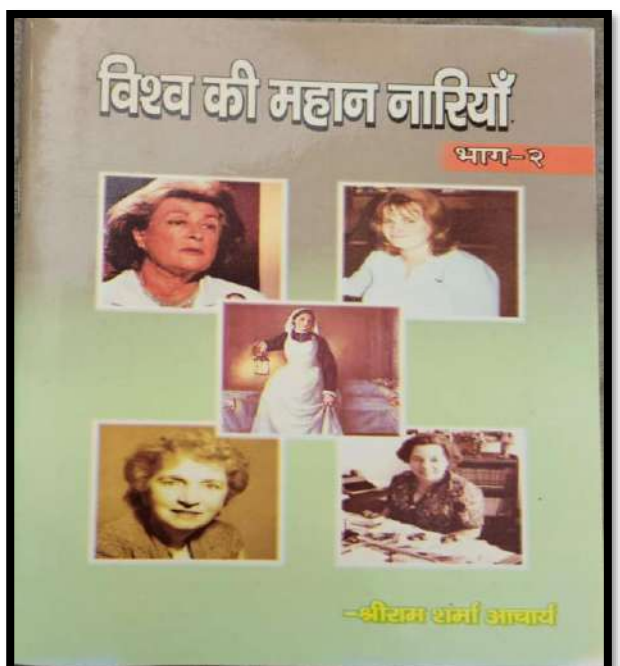
यह पुस्तक वैश्विक इतिहास की उन महान नारी शक्तियों का परिचय कराती है जिन्होंने केवल अपने राष्ट्र की सीमाओं में नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए काम किया। इस पुस्तक में जहाँ एक ओर फ्रांस की राष्ट्रमाता 'जोन ऑफ आर्क' और 'मादाम रोलां' जैसी वीरांगनाओं के अदम्य साहस और देशभक्ति को दर्शाया गया है, वहीं दूसरी ओर 'मारिया मांटेसरी' और 'इजाबेला थोर्बन' जैसी महान शिक्षा शास्त्रियों के योगदान को रेखांकित किया गया है जिन्होंने आधुनिक बाल शिक्षा और स्त्री शिक्षा की नींव रखी। इसके साथ ही 'माता टेरिजा' और 'डोरोथिया डिक्स' जैसी सेवा की प्रतिमूर्तियों के माध्यम से यह पुस्तक करुणा, परोपकार और वैश्विक नागरिकता (Global Citizenship) का संदेश देती है।

प्रासंगिकता

वैश्विक समाज और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस पुस्तक की विषय-वस्तु की प्रासंगिकता निम्नलिखित रूपों में देखी जा सकती है:

- वैश्विक महिला नेतृत्व (Global Women Leadership): आज जब दुनिया भर में महिलाओं को नीति-निर्माण और नेतृत्व के शीर्ष पदों पर लाने का प्रयास किया जा रहा है, तब मैडम सनयात सेन या श्रीमती रूजवेल्ट जैसी राजनीतिक और सामाजिक चेतना से युक्त महिलाओं का जीवन वर्तमान पीढ़ी को प्रेरित करता है।
- अंध-राष्ट्रवाद से ऊपर मानवता की सेवा: आज की भू-राजनीतिक (Geopolitical) चुनौतियों के बीच, जहाँ समाज सीमाओं में बंट रहा है, यह पुस्तक 'मार्था' और 'माता टेरिजा' के माध्यम से याद दिलाती है कि मानवता की सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है।
- नारी जागरण और अधिकारों के लिए संघर्ष: 'श्रीमती मोतोको हानी' और 'लुई माइकेल' जैसी दूरदर्शी महिलाओं के संघर्ष आज भी उन समाजों के लिए प्रासंगिक हैं जहाँ महिला शिक्षा और अधिकारों के लिए अभी भी संघर्ष जारी है।

4.6 विश्व की महान नारियाँ भाग-2



यह पुस्तक समाज सेवा और 'नर सेवा ही नारायण सेवा' के व्यावहारिक स्वरूप को साकार करने वाली वैश्विक नारी शक्तियों का दस्तावेज़ है। पुस्तक का मूल स्वर "करुणा और नि:स्वार्थ सेवा" है। इसमें आधुनिक नर्सिंग व्यवस्था की जनक 'फ्लोरेंस नाइटिंगेल' (लेडी विद द लैंप) और एक आदर्श परिचारिका 'सुगाको' के माध्यम से चिकित्सा सेवा के उच्चतम आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही,

'डोरीना' (नेत्रहीनों के जगत की चंद्रिका) के माध्यम से विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों (दिव्यांगों) के प्रति संवेदनशीलता तथा 'डॉ० मेरी' व 'मार्गरेट सैंगर' के माध्यम से महिला एवं शिशु कल्याण तथा परिवार नियोजन के क्षेत्र में किए गए ऐतिहासिक संघर्षों को यह पुस्तक एक सूत्र में पिरोती है।

प्रासंगिकता

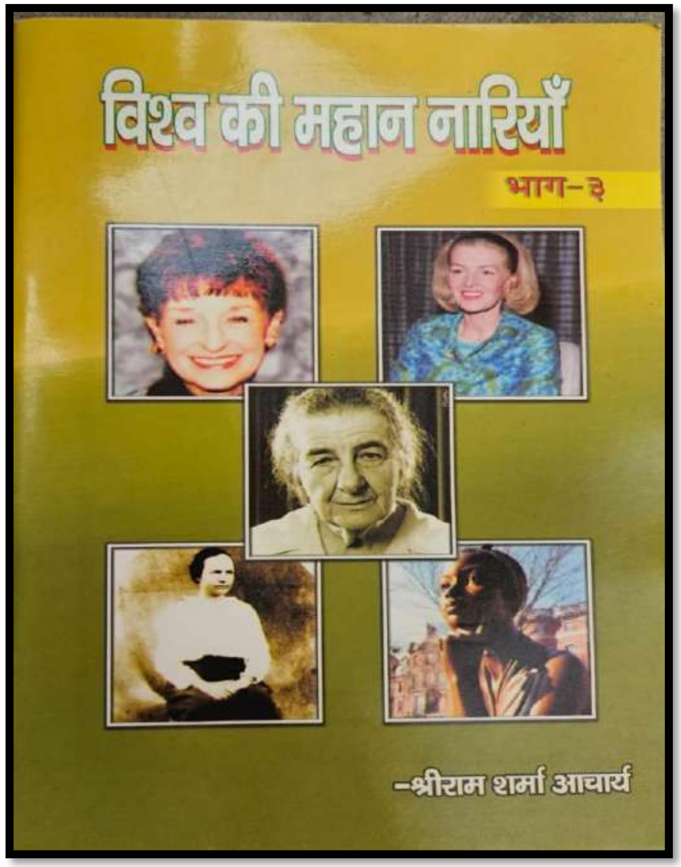
आज के आधुनिक और विशेषकर कोविड-19 जैसी महामारियों के बाद के वैश्विक समाज में इस पुस्तक की सामग्री अत्यंत प्रासंगिक है:

- स्वास्थ्य सेवाओं में मानवीय दृष्टिकोण: आज चिकित्सा और स्वास्थ्य क्षेत्र का तेजी से व्यावसायीकरण हो रहा है। ऐसे समय में फ्लोरेंस नाइटिंगेल और श्रीमती बेनिट का जीवन डॉक्टरों, नर्सों और स्वास्थ्य कर्मियों को सेवा भाव और सहानुभूति की याद दिलाता है।
- दिव्यांगता और समावेशी समाज: वर्तमान युग में जब हम समावेशी विकास (Inclusive Development) की बात करते हैं, तो "नेत्रहीनों के जगत की चंद्रिका–डोरीना" का जीवन हमें सिखाता है कि दिव्यांगों को सहानुभूति की नहीं, बल्कि समान अवसरों और सशक्तिकरण की आवश्यकता है।
- महिला एवं शिशु स्वास्थ्य जागरूकता: मातृ मृत्यु दर (MMR) और शिशु मृत्यु दर (IMR) को कम करना आज भी विकासशील देशों के लिए बड़ी चुनौती है। "डॉ० मेरी" और "मार्गरेट सैंगर" (जिन्होंने महिला अधिकारों और परिवार नियोजन की वकालत की) के विचार आज के स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं।

4.7 विश्व की महान नारियाँ भाग-3

यह पुस्तक इतिहास की उन असाधारण नारी शक्तियों का परिचय कराती है जिन्होंने रूढ़ियों, सामाजिक असमानताओं और प्राकृतिक बाधाओं को पार कर नए कीर्तिमान स्थापित किए। पुस्तक का मूल वैचारिक ढांचा "प्रतिरोध, समता और बौद्धिक चेतना" है। इसमें जहाँ एक ओर राजनीतिक और नागरिक अधिकारों के लिए लड़ने वाली महिलाओं जैसे–नेन्सी एस्टर (ब्रिटेन में महिलाओं के अधिकारों की अग्रदूत), एंजेला डेविस (सामाजिक विषमता

की शत्रु) और फिलिस व्हिट्ले (अश्वेत/नीग्रो समाज की बुलंद आवाज़) को स्थान दिया गया है, वहीं दूसरी ओर विज्ञान जगत की अमर नक्षत्र 'मैडम क्यूरी', इजराइल की सशक्त प्रधानमंत्री 'श्रीमती गोल्डा मेयर', और साहसिक अभियानों की प्रतीक 'शीला स्काट' (व्योम विजयिनी) के संघर्षों को यह पुस्तक अत्यंत गरिमामय ढंग से प्रस्तुत करती है।



प्रासंगिकता

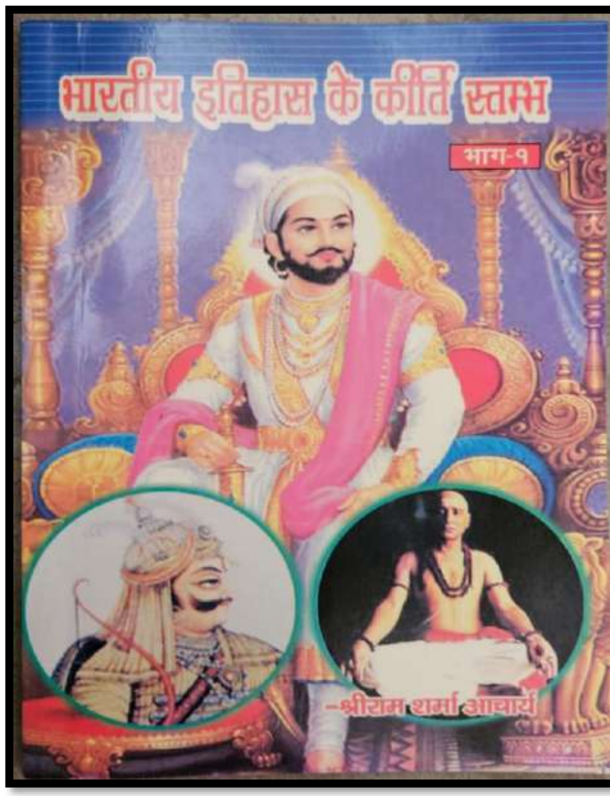
आज के 21वीं सदी के वैश्विक और बहुसांस्कृतिक समाज में इस पुस्तक की विषय-वस्तु अत्यधिक प्रासंगिक है:

- नस्लभेद और सामाजिक न्याय (Anti-Racism & Social Justice): आज भी वैश्विक स्तर पर 'Black Lives Matter' जैसे आंदोलनों के माध्यम से नस्लभेद के खिलाफ आवाज उठाई जा रही है। ऐसे समय में 'फिलिस व्हिट्ले' और 'एंजेला डेविस' जैसी नीग्रो (अश्वेत) महिलाओं का जीवन नस्लीय समानता और सामाजिक न्याय के लिए सबसे बड़ा प्रेरणा स्रोत है।
- विज्ञान में महिलाओं की भागीदारी (Women in STEM): वर्तमान में विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। दो बार नोबेल पुरस्कार जीतने वाली 'मैडम क्यूरी' (त्यागमयी जनसेविका) का जीवन आज भी विज्ञान की छात्राओं के लिए सर्वोत्तम आदर्श है।
- किशोर कल्याण और पुनर्वास: आज के समय में जब किशोरों में भटकाव, अपराध और अवसाद बढ़ रहा है, तब "सहस्रों किशोरों को नवजीवन दात्री–मिस एटी ली" का

अध्याय समाज को बाल-अधिकारों और भटके हुए युवाओं के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाने की दिशा दिखाता है।

- राजनीतिक नेतृत्व (Political Leadership): वैश्विक राजनीति में महिलाओं की कूटनीतिक और नेतृत्व क्षमता को समझने के लिए इजराइल की पूर्व प्रधानमंत्री 'श्रीमती गोल्डा मेयर' का जीवन चरित्र आज भी प्रासंगिक है।

4.8 भारतीय इतिहास के कीर्ति स्तम्भ भाग-1



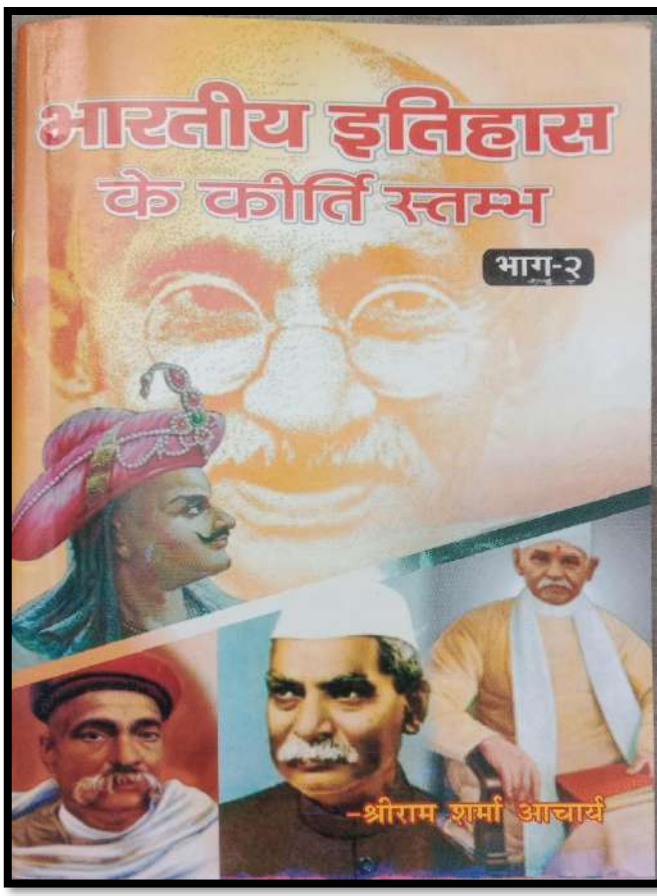
यह पुस्तक अखंड भारत की परिकल्पना, शौर्य, सुशासन और राष्ट्रीय स्वाभिमान के ऐतिहासिक विकास क्रम को उजागर करती है। पुस्तक का प्रारंभ "भारत राष्ट्र के पुनर्निर्माता आचार्य चाणक्य" से होता है, जो यह स्पष्ट करता है कि राष्ट्र का निर्माण केवल हथियारों से नहीं बल्कि तीक्ष्ण बुद्धि और नीतिगत दूरदर्शिता से होता है। इसमें एक अनाथ बालक (चंद्रगुप्त) के राष्ट्र नायक बनने की यात्रा से लेकर पुरू, समुद्रगुप्त, यशोधर्मा और पुष्यमित्र शुंग जैसे शासकों के अप्रतिम पुरुषार्थ को दर्शाया गया है। साथ ही, महाराजा हर्षवर्धन जैसे निष्काम लोकसेवकों, विद्यारण्य जैसे सांस्कृतिक संरक्षकों, टोडरमल जैसे कुशल प्रशासकों और छत्रपति शिवाजी, राणा प्रताप व महाराजा छत्रसाल जैसे स्वतंत्रता व संस्कृति के प्रहरियों के जीवन को इस पुस्तक में गौरवमयी स्थान दिया गया है।

प्रासंगिकता

वर्तमान वैश्विक और भारतीय सामाजिक परिप्रेक्ष्य में इस विषय-वस्तु की प्रासंगिकता निम्नलिखित रूपों में देखी जा सकती है:

- कूटनीति और सुशासन (Diplomacy and Governance): आज के दौर में जब वैश्विक नीतियां और कूटनीति तेजी से बदल रही हैं, तब आचार्य चाणक्य की रणनीतियां और राजा टोडरमल की प्रशासनिक व भू-राजस्व व्यवस्था (Land Revenue System) आज के नीति-निर्माताओं के लिए प्रासंगिक हैं।
- राष्ट्र प्रथम (Nation First) की भावना: वर्तमान समय में युवाओं के भीतर आंतरिक सुरक्षा, अखंडता और देशप्रेम की भावना को सुदृढ़ करने के लिए देशभक्त पुरू, राणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी महाराज का जीवन एक महान प्रेरणा स्रोत है।
- सांस्कृतिक और ऐतिहासिक आत्मगौरव: औपनिवेशिक मानसिकता से बाहर निकलकर अपने वास्तविक नायकों के इतिहास को जानना आज की पीढ़ी के आत्मगौरव और अस्मिता की पहचान के लिए अत्यंत आवश्यक है।

4.9 भारतीय इतिहास के कीर्ति स्तम्भ भाग-2



यह पुस्तक भारत के ऐतिहासिक संघर्ष और राष्ट्र निर्माण की एक अनवरत वैचारिक श्रृंखला को प्रदर्शित करती है। पुस्तक का मूल स्वर "शौर्य, कूटनीति, त्याग और नव-जागरण" है। पुस्तक में जहाँ एक ओर 'जातीय गौरव के रक्षक राणा राज सिंह', 'पेशवा बाजीराव' और 'नाना फड़नवीस' (महाराष्ट्र मंडल के चाणक्य) के माध्यम से मध्यकालीन कूटनीति और प्रतिरोध को दर्शाया गया है, वहीं दूसरी ओर 'महाराजा रणजीत सिंह' और 'हरी सिंह नलवा' (नर-केहरी) के अदम्य साहस को रेखांकित किया गया है। इसके साथ ही, यह वासुदेव बलवंत फड़के, लोकमान्य तिलक और वीर सावरकर के

क्रांतिकारी राष्ट्रवाद से होते हुए महात्मा गाँधी, महामना मालवीय, सरदार पटेल और डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जैसे आधुनिक भारत के निर्माताओं के महान विचारों व योगदानों को एक ही सूत्र में पिरोती है।

प्रासंगिकता

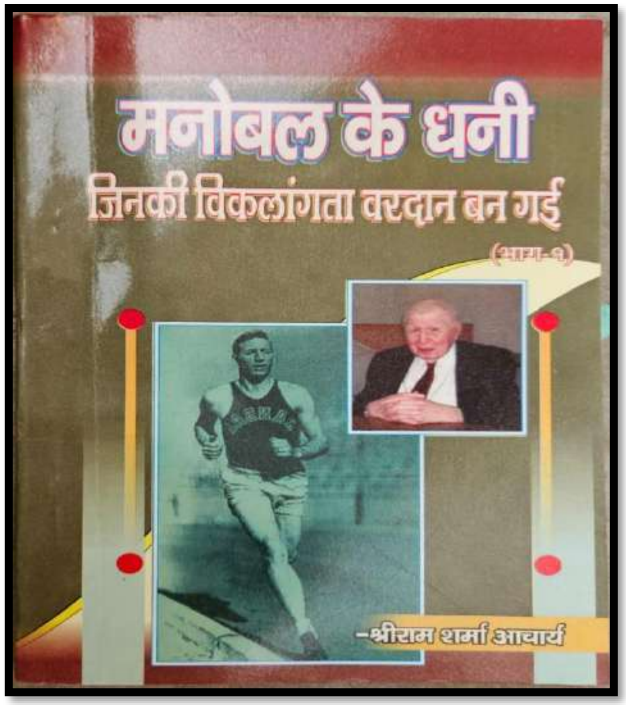
वर्तमान वैश्विक और भारतीय सामाजिक परिप्रेक्ष्य में इस विषय-वस्तु की प्रासंगिकता निम्नलिखित रूपों में अत्यंत महत्वपूर्ण है:

- चरित्र निर्माण बनाम भौतिकता: आज की युवा पीढ़ी के लिए महाराजा रणजीत सिंह का यह संदेश कि "शरीर नहीं चरित्र सुंदर होना चाहिए", आंतरिक मूल्यों और नैतिक सुदृढ़ता को विकसित करने के लिए बेहद प्रासंगिक है।
- कर्मठता और पुरुषार्थ: वर्तमान समय में जब युवा शार्टकट या तात्कालिक सफलता के पीछे भागते हैं, तब लौहपुरुष सरदार पटेल का यह सूक्त वाक्य–"सपने न देखो, काम करो"–उन्हें यथार्थवादी, कर्मठ और परिणाम-उन्मुख बनने की प्रेरणा देता है।
- विविध वैचारिक धाराओं का समन्वय: इस पुस्तक में एक ओर सशस्त्र क्रांति व प्रखर राष्ट्रवाद (सावरकर, बापट, फड़के) है, तो दूसरी ओर अहिंसक सत्याग्रह (गाँधी जी) और संस्थागत राष्ट्र निर्माण (राजेन्द्र प्रसाद, मालवीय जी) है। यह विविधता आज के समाज को यह सिखाती है कि राष्ट्र निर्माण में हर वैचारिक दृष्टिकोण का अपना अमूल्य स्थान रहा है।

4.10 मनोबल के धनी जिनकी विकलांगता वरदान बन गई भाग-1

यह पुस्तक मानव मन की अगाध क्षमता और अदम्य जिजीविषा का एक अप्रतिम दस्तावेज़ है। इस पुस्तक का मूल स्वर "सहानुभूति नहीं, सामर्थ्य" और "दुर्भाग्य पर पुरुषार्थ की विजय" है। पुस्तक का प्रारंभ "अजेय संकल्प-शक्ति के धनी: ग्लेन कनिंघम" से होता है, जो शारीरिक अक्षमताओं को पीछे छोड़कर धावक बनने की अद्भुत गाथा है। इसमें 'लुई ब्रेल' (नेत्रहीनों के लिए ज्ञान भंडार खोलने वाले) और 'हेलन कीलर' (अंध, मूक-बधिरों की

जीवन दात्री) जैसे युगांतकारी चरित्रों को स्थान दिया गया है, जिन्होंने स्वयं अंधकार में रहकर पूरी दुनिया के दिव्यांगों के जीवन को शिक्षा के आलोक से प्रदीप्त कर दिया। यह पुस्तक 'अपराजेयता', 'आत्मविश्वास' और 'साहस' जैसे जीवन-मूल्यों को रेखांकित करती है।



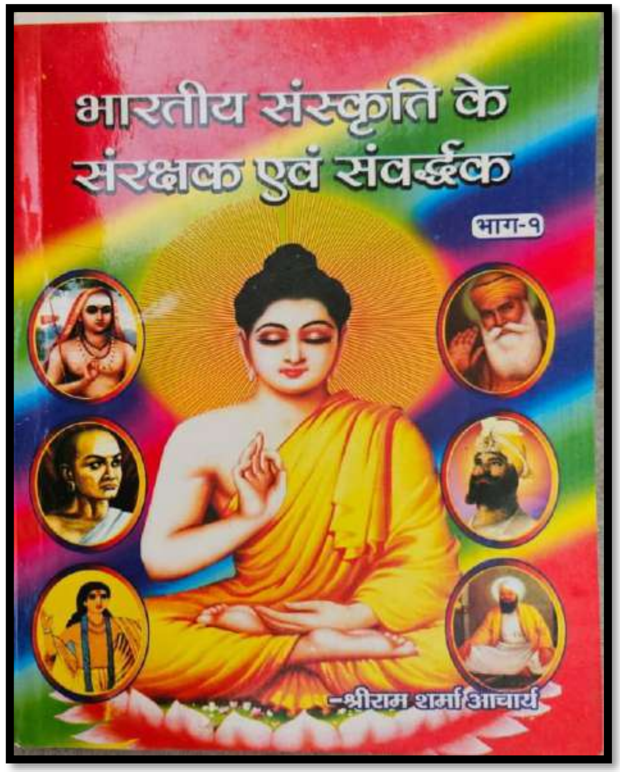
प्रासंगिकता

आज के वैश्विक और आधुनिक समाज में इस पुस्तक की प्रासंगिकता अत्यंत गहरी है:

- सकारात्मक दृष्टिकोण (Positive Psychology): आज के अत्यधिक तनावपूर्ण और प्रतिस्पर्धी माहौल में जहाँ सामान्य लोग भी छोटी-सी असफलता से निराश होकर अवसाद (Depression) में चले जाते हैं, वहाँ "दुर्भाग्य विजेता", "दुर्दैव विजयी" और "विपत्तियों से सतत संघर्षरत" रहने वाले इन नायकों का जीवन हर व्यक्ति में आशा और मानसिक सुदृढ़ता (Resilience) का संचार करता है।
- दिव्यांगता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव: आज का समाज धीरे-धीरे 'सहानुभूति या दया' के चैरिटी मॉडल से हटकर दिव्यांगों के 'अधिकार और गरिमा' (Rights-based Model) की ओर बढ़ रहा है। यह पुस्तक समाज को यह सिखाती है कि शारीरिक अक्षमता कभी भी बौद्धिक और रचनात्मक ऊंचाइयों को छूने में बाधा नहीं बन सकती।
- एक्सेसिबिलिटी और समावेशन: वैश्विक स्तर पर आज 'सुलभ भारत' (Accessible India) और 'Inclusion' की नीतियां बनाई जा रही हैं। लुई ब्रेल और अब्राहम नेमेथ (जिन्होंने दृष्टिबाधितों के लिए गणितीय कोड विकसित किया) जैसे पात्रों का स्मरण

इस बात को बल देता है कि तकनीकी और शैक्षणिक संसाधन हर व्यक्ति के लिए सुलभ होने चाहिए।

4.11 भारतीय संस्कृति के संरक्षक एवं संवर्द्धक भाग-1



यह पुस्तक भारत के वैचारिक और आध्यात्मिक पुनर्जागरण का एक व्यापक दस्तावेज़ है। पुस्तक का मूल स्वर "सांस्कृतिक संरक्षण, दार्शनिक समन्वय और सामाजिक समरसता" है। पुस्तक का प्रारंभ "विदेशी साहित्य में भारतीय संस्कृति" से होता है, जो भारत के वैश्विक सांस्कृतिक प्रभाव (Soft Power) को दर्शाता है। इसके पश्चात, यह बौद्धिक चेतना (महर्षि चाणक्य), वैदिक पुनरुत्थान (आद्य शंकराचार्य, कुमारिल भट्ट), और भक्ति आंदोलन (महाप्रभु चैतन्य) के साथ-साथ बौद्ध मत के वैश्विक विस्तार (महाभिक्षु महेंद्र, आचार्य दीपंकर, कुमारजीव) को रेखांकित करती है। अंत में, यह अनुक्रमणिका गुरु नानक देव के सामाजिक सुधारों से लेकर गुरु तेगबहादुर और गुरु गोविंद सिंह के बलिदान व राष्ट्र-रक्षक स्वरूप को एक ही वैचारिक सूत्र में पिरोती है।

प्रासंगिकता

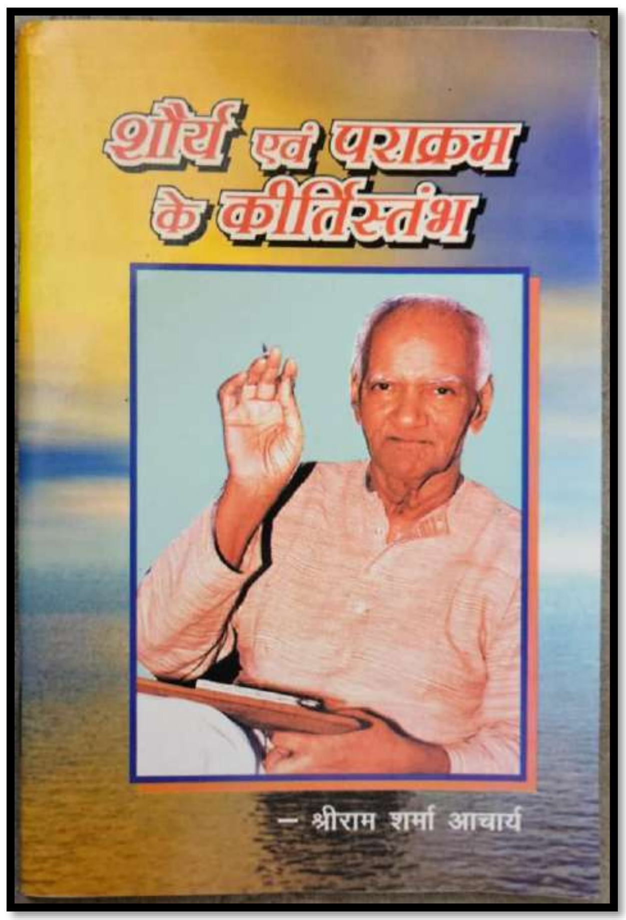
वर्तमान वैश्विक और समकालीन भारतीय समाज में इस पुस्तक की विषय-वस्तु अत्यधिक सामयिक है:

- दार्शनिक संतुलन और मानसिक शांति: आधुनिक समाज आज अति-भौतिकवाद के कारण मानसिक अशांति से जूझ रहा है। ऐसे में महात्मा बुद्ध का "प्रवृत्ति और

निवृत्ति के समन्वयकारी" मध्य मार्ग (Middle Path) जीवन में संतुलन स्थापित करने के लिए परम प्रासंगिक है।

- सामाजिक समरसता और समावेशिता: आज भी समाज में जातिगत और वर्गगत विषमताएं मौजूद हैं। गुरु नानक देव का "पिछड़ों और दलितों को अपनाने वाले" दर्शन और उनका 'लंगर व संगत' का सिद्धांत समाज में समानता और बंधुत्व स्थापित करने के लिए आज भी अचूक मार्ग है।
- सांस्कृतिक चेतना और वैश्विक पहचान: वर्तमान युग में जहाँ भारत वैश्विक पटल पर अपनी सांस्कृतिक पहचान (Cultural Identity) को सुदृढ़ कर रहा है, वहाँ 'आचार्य दीपंकर' और 'कुमारजीव' जैसे महान दूतों का इतिहास यह याद दिलाता है कि भारत ने सदा 'ज्ञान और संस्कृति' के माध्यम से विश्व को जोड़ा है।

4.12 शौर्य एवं पराक्रम के कीर्तिस्तंभ



यह पुस्तक भारत के स्वाधीनता आंदोलन के उस स्वर्णिम अध्याय को रेखांकित करती है जो अदम्य साहस, आत्मोत्सर्ग और प्रखर राष्ट्रवाद से ओतप्रोत है। पुस्तक का मूल वैचारिक ढांचा "शौर्य, कूटनीतिक प्रतिरोध और सामाजिक-आर्थिक चेतना" है। अनुक्रमणिका का प्रारंभ "स्वातंत्र्य युद्ध का प्रथम सैनिक - मंगल पाँडे" से होता है, जो १८५७ की क्रांति की पहली चिंगारी को दर्शाता है। इसके पश्चात, यह सूची देशप्रेम के प्रतीकों (यतीनाथ), वैचारिक क्रांतिकारियों (बटुकेश्वर दत्त, सोहन सिंह भकना), साम्राज्यवाद और शोषण के विरुद्ध बिगुल फूंकने वाले विचारकों (मौलवी

अहमदुल्ला, वासुदेव बलवंत फड़के) तथा उन गुमनाम नायकों (हेमचन्द्र दास, रामचरण लाल, पंडित काशीराम जोशी) के संघर्षों को सामने लाती है जिन्होंने देश की बलिवेदी पर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

प्रासंगिकता

वर्तमान समकालीन समाज और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इस सामग्री की प्रासंगिकता अक्षुण्ण है:

- वैचारिक शोषण के विरुद्ध चेतना: सूची में शामिल "शोषण के विरुद्ध बगावत करने वाले मौलवी अहमदुल्ला" का प्रसंग आज भी प्रासंगिक है। यह आज के लोकतांत्रिक समाज को नागरिकों के आर्थिक-सामाजिक शोषण के खिलाफ जागरूक रहने और न्याय के पक्ष में खड़े होने की प्रेरणा देता है।
- अखंडता और राष्ट्रीय एकता: आज के दौर में जब समाज में भाषाई, क्षेत्रीय या सांप्रदायिक आधार पर बिखराव देखने को मिलता है, तब इन क्रांतिकारियों का सामूहिक और धर्मनिरपेक्ष संघर्ष (जहाँ राम, सोहन, अहमद और काशीराम एक साथ मिलकर लड़े) देश को विविधता में एकता का वास्तविक पाठ पढ़ाता है।
- गुमनाम नायकों की पुनर्प्रतिष्ठा: इतिहास के उन पात्रों को मुख्यधारा में लाना जिन्हें अक्सर पाठ्यपुस्तकों में सीमित स्थान मिला, वर्तमान समय के 'इतिहास के पुनर्मूल्यांकन' और 'सांस्कृतिक पुनरुत्थान' के दौर में बेहद जरूरी है।

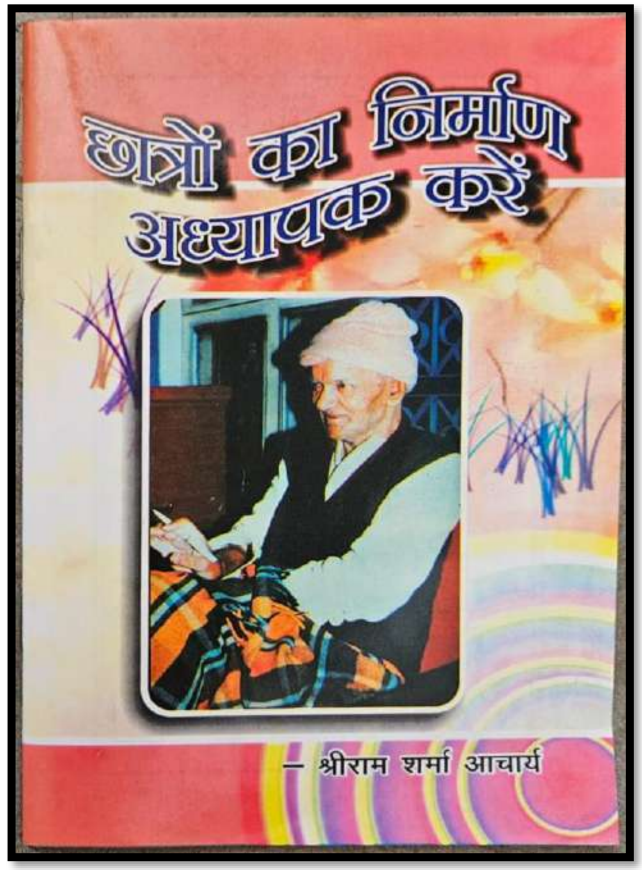
4.13 छात्रों का निर्माण अध्यापक करें

यह पुस्तक शिक्षा व्यवस्था के सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ–"शिक्षक" और उसके मूल दायित्व पर आधारित है। पुस्तक का केंद्रीय विचार यह है कि छात्र केवल सूचनाएं ग्रहण करने वाले पात्र नहीं हैं, बल्कि उनका सर्वांगीण चरित्र-निर्माण शिक्षक के हाथों में होता है। अनुक्रमणिका का प्रारंभ "अपनों से अपनी बात" से होता है, जो पाठकों और अध्यापकों के बीच एक आत्मीय संवाद स्थापित करता है। इसके पश्चात, यह शिक्षकों की गरिमा, उनकी योग्यताओं, उत्तरदायित्वों और उनके आदर्श आचरण को सामने लाती है। यह सूची स्पष्ट करती है कि

एक समर्थ शिक्षक वही है जो न केवल विषय का ज्ञान दे, बल्कि देश के चिंतन और छात्रों के चरित्र को बदलने की क्षमता रखता हो।

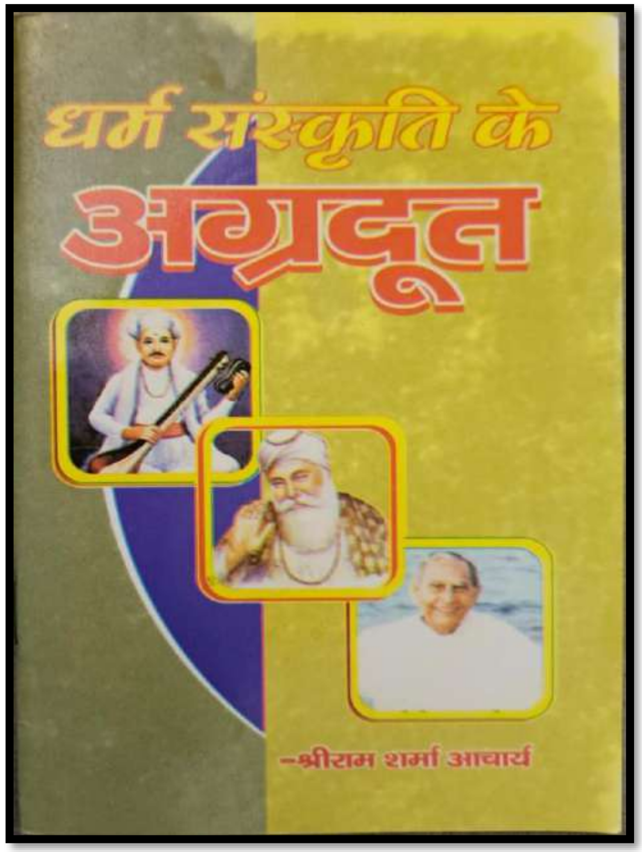
प्रासंगिकता

- आज के 21वीं सदी के तकनीकी युग और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के संदर्भ में इस विषय-वस्तु की प्रासंगिकता अत्यधिक बढ़ जाती है:



- तकनीक के दौर में मानवीय स्पर्श (Human Touch): आज के युग में ज्ञान देने के लिए गूगल और एआई (AI) जैसे कई डिजिटल माध्यम उपलब्ध हैं, लेकिन "अध्यापक अपने आदर्श से मार्गदर्शन दें" और "आत्मीय अनुरोध" जैसे बिंदु यह याद दिलाते हैं कि नैतिक मूल्य और मानवीय संवेदनाएं केवल एक जीवंत शिक्षक ही दे सकता है।
- व्यावसायिक गरिमा का पुनरुत्थान: वर्तमान समय में शिक्षा के बढ़ते व्यावसायीकरण के कारण शिक्षक के पद की गरिमा प्रभावित हुई है। ऐसे में "गुरु की गरिमा, महत्व एवं जिम्मेदारी" का बोध कराना आज के समाज और शैक्षणिक संस्थानों के लिए परम आवश्यक है।
- राष्ट्र निर्माण और वैचारिक परिवर्तन: आज वैश्विक स्तर पर समाज कई तरह के वैचारिक द्वंद्वों से गुजर रहा है। विषय-सूची का बिंदु–"देश का चिंतन और चरित्र बदल सकते हैं समर्थ अध्यापक"–यह सिद्ध करता है कि एक सशक्त और सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण क्लासरूम के भीतर शिक्षकों के द्वारा ही संभव है।

4.14 धर्म संस्कृति के अग्रदूत



यह पुस्तक भारत के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक नव-जागरण की एक गौरवमयी रूपरेखा प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक का मूल वैचारिक ढांचा "आध्यात्मिक व्यवहारिकता, कुरीतियों का उन्मूलन और जन-शिक्षा" है। अनुक्रमणिका में जहाँ एक ओर वैश्विक धर्मप्रचार (कुमार जीव) और वेदांत के व्यावहारिक स्वरूप (स्वामी रामतीर्थ) को स्थान दिया गया है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक पाखंडों पर कड़ा प्रहार करने वाले सुधारकों (महर्षि दयानन्द सरस्वती) और देश के लिए प्राणोत्सर्ग करने वाले हुतात्माओं (अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द) के योगदानों को रेखांकित किया गया है। साथ ही, यह सूची शिक्षा के प्रसार और समाज को एक नई दिशा देने वाले 'गृहस्थ संन्यासियों' (महात्मा हंसराज, स्वामी केशवानन्द) तथा समरसता के प्रणेता गुरु नानक देव के विचारों को समाहित करती है।

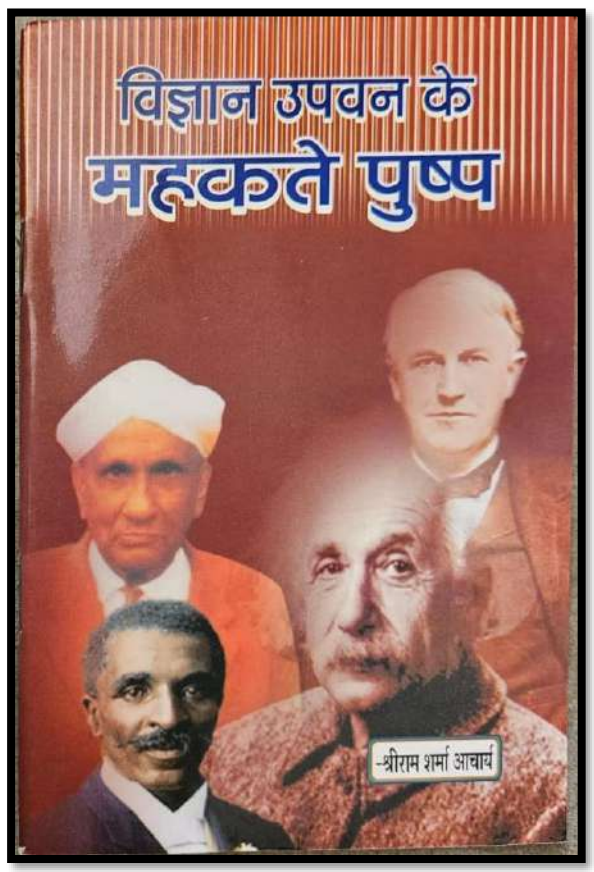
प्रासंगिकता

वर्तमान समकालीन भारतीय समाज में इस विषय-वस्तु की प्रासंगिकता निम्नलिखित रूपों में अत्यंत महत्वपूर्ण है:

- पाखंड और अंधविश्वासों का उन्मूलन: आज के वैज्ञानिक और तकनीकी युग में भी समाज कई तरह के अंधविश्वासों, रूढ़ियों और पाखंडों से जूझ रहा है। ऐसे में महर्षि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द का तार्किक और सुधारवादी दृष्टिकोण समाज को अंधकार से बाहर निकालने के लिए आज भी परम प्रासंगिक है।

- व्यवहार्य वेदांत (Practical Vedanta): "वेदान्त को अपने जीवन के माध्यम से सिखाने वाले स्वामी रामतीर्थ" का प्रसंग यह याद दिलाता है कि अध्यात्म केवल कंदराओं या किताबों में सिमटने की वस्तु नहीं है, बल्कि उसे दैनिक आचरण और कर्म में उतारना ही वास्तविक अध्यात्म है।
- संन्यास और कर्मयोग का समन्वय: विषय-सूची का ग्यारहवां बिंदु–"संन्यास से गृहस्थ, गृहस्थ से संन्यास की ओर"–आज की उस युवा पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक है जो व्यावसायिक जीवन और मानसिक शांति के बीच संतुलन (Work-Life Balance) खोजने का प्रयास कर रही है।

4.15 विज्ञान उपवन के महकते पुष्प



यह पुस्तक विज्ञान जगत को एक 'उपवन' और इसमें योगदान देने वाले मनीषियों को उसके 'महकते फूल' के रूप में रूपायित करती है। इस पुस्तक का मूल वैचारिक ढांचा "वैज्ञानिक चेतना, अन्वेषण की प्रवृत्ति और लोक-कल्याण" है। अनुक्रमणिका का प्रारंभ आधुनिक भौतिकी के आधार "सापेक्षवाद के जनक–आइंस्टीन" और भारतीय रसायन विज्ञान के पितामह "राष्ट्रीय स्वावलंबी महान वैज्ञानिक–प्रफुल्ल चन्द्र राय" से होता है। इसके पश्चात, यह सूची नोबेल पुरस्कार विजेता सी.वी. रमन (प्रकाश-वर्ण सूच्य सिद्धांतों के जन्मदाता), वनस्पति विज्ञान में चेतना की खोज करने वाले आचार्य जगदीश चन्द्र बसु और कृषि क्षेत्र में क्रांति लाने वाले जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर जैसे नायकों के जीवन-संघर्ष और उनकी साधना को एक सूत्र में पिरोती है।

प्रासंगिकता

आज के 21वीं सदी के तकनीकी युग, सतत विकास (Sustainable Development) और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के संदर्भ में इस विषय-वस्तु की प्रासंगिकता अत्यधिक बढ़ जाती है:

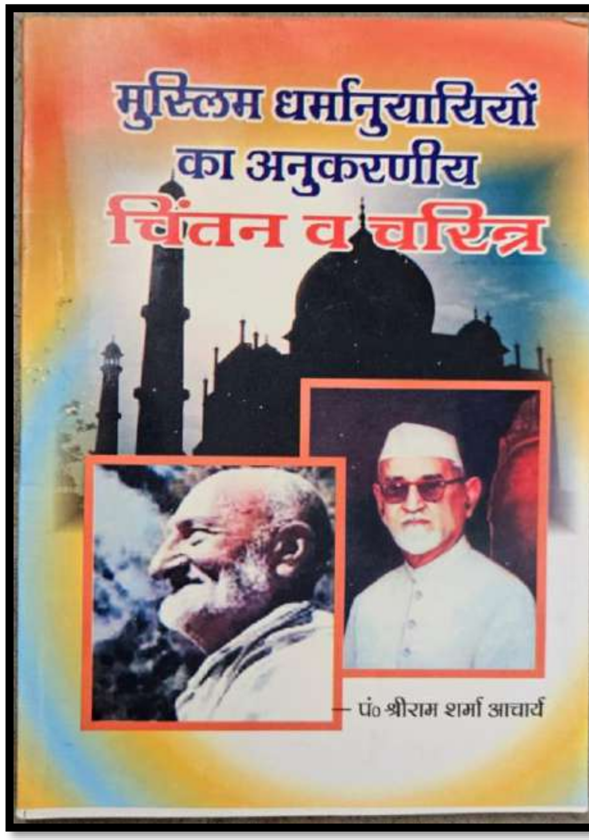
- स्वावलंबन और स्वदेशी अनुसंधान: वर्तमान में जब भारत 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मेक इन इंडिया' की दिशा में बढ़ रहा है, तब प्रफुल्ल चन्द्र राय का "राष्ट्रीय स्वावलंबी" दृष्टिकोण देश के युवाओं को नवाचार (Innovation) और स्वदेशी उद्योगों की स्थापना के लिए प्रेरित करता है।
- मानवतावादी विज्ञान (Humanistic Science): आज विज्ञान का उपयोग विनाशकारी हथियारों या व्यावसायिक स्वार्थों के लिए भी हो रहा है। ऐसे में पुस्तक का चौथा बिंदु–"मानवतावादी विज्ञान साधक"–यह याद दिलाता है कि विज्ञान का अंतिम उद्देश्य केवल खोज करना नहीं, बल्कि संपूर्ण मानव जाति का कल्याण होना चाहिए।
- सतत कृषि और पर्यावरण संरक्षण: जलवायु परिवर्तन के इस दौर में "कृषि क्षेत्र में क्रांति लाने वाले वैज्ञानिक" (जैसे जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर) और प्रकृति के रहस्यों को अनावृत करने वाले वैज्ञानिकों के विचार पर्यावरण के संतुलन और खाद्य सुरक्षा के लिए आज भी अचूक मार्ग दिखाते हैं।

4.16 मुस्लिम धर्मानुयायियों का अनुकरणीय चिंतन व चरित्र

यह पुस्तक भारतीय राष्ट्रीय चेतना और साझी संस्कृति (गंगा-जमुनी तहज़ीब) के निर्माण में मुस्लिम मनीषियों के ऐतिहासिक अवदान का एक प्रामाणिक दस्तावेज़ है। पुस्तक का मूल वैचारिक ढांचा "धार्मिक उदारता, अखंड देशभक्ति और सांप्रदायिक सौहार्द" पर आधारित है। अनुक्रमणिका का प्रारंभ आध्यात्मिक धरातल पर "उदात्त सन्त कवि–ऐनशाह" और "भक्ति मार्ग के अविचल पथिक सनम साहब" से होता है, जो भारत की सूफी-भक्ति परंपरा के समन्वय को दर्शाता है। इसके पश्चात, यह सूची मध्यकाल के सहिष्णु शासकों (सुल्तान जैनुल आब्दीन), १८५७ के नायकों (बहादुर शाह 'जफर', मौलवी अहमदुल्ला), कांग्रेस के प्रारंभिक नेताओं (बदरुद्दीन तैयबजी), प्खर राष्ट्रवादियों (खान अब्दुल गफ्फार खाँ, मौलाना

मजहरुलहक) और आधुनिक भारत के निर्माताओं (डॉ० जाकिर हुसैन, डॉ० अंसारी) के जीवन-चरित्र को एक ही राष्ट्रीय सूत्र में पिरोती है।

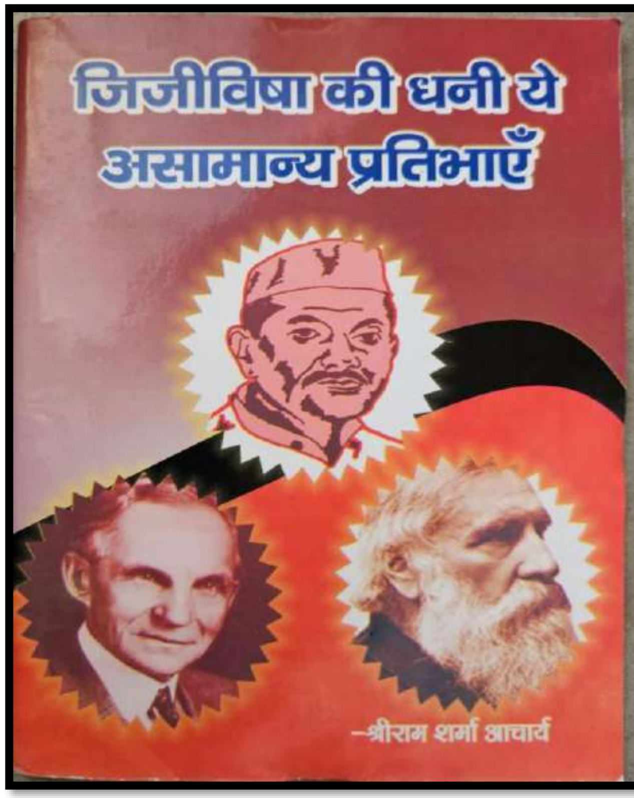
प्रासंगिकता



वर्तमान 21 वीं सदी के बहुसांस्कृतिक भारतीय समाज में इस विषय-वस्तु की प्रासंगिकता अत्यधिक महत्वपूर्ण और अपरिहार्य है:

- सांप्रदायिक सौहार्द और राष्ट्रीय एकता: वर्तमान समय में जब समाज में कभी-कभी सांप्रदायिक वैमनस्य या ध्रुवीकरण की स्थितियां उत्पन्न होती हैं, तब इस पुस्तक के बिंदु–"हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक अन्तिम मुगल सम्राट बहादुर शाह 'जफर'" और "सांप्रदायिकता के कट्टर विरोधी मौलाना मजहरुलहक"–समाज को आपसी भाईचारे और राष्ट्रीय अखंडता का मार्ग दिखाते हैं।
- सहिष्णुता और सर्वधर्म समभाव: वैश्विक स्तर पर आज धार्मिक कट्टरता एक बड़ी चुनौती है। कश्मीर के शासक "धर्म-सहिष्णु सुल्तान जैनुल आब्दीन" और "धार्मिक उदारता के प्रतीक डॉ० जाकिर हुसैन" के विचार आज के लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए बेहद प्रासंगिक हैं।
- हाशिए के ऐतिहासिक संदर्भों का पुनर्मूल्यांकन: इतिहास के उन महान देशभक्तों और सांस्कृतिक सेवकों (जैसे जहूरबख्श, काजी जी) के योगदान को मुख्यधारा के विमर्श में लाना आज के 'समावेशी इतिहास लेखन' के दौर की एक मुख्य मांग है।

4.17 जिजीविषा की धनी ये असामान्य प्रतिभाएँ



यह पुस्तक मानव मन की असीम ऊर्जा, दृढ़ संकल्प और 'जिजीविषा' (जीने और कुछ कर गुजरने की तीव्र इच्छा) का एक अनुपम संकलन है। पुस्तक का मूल वैचारिक ढांचा "शून्य से शिखर की यात्रा" और "आत्मविश्वास बनाम परिस्थितियां" है। अनुक्रमणिका का प्रारंभ भारत के सादगी और शुचिता के प्रतीक "मानवरत्न–लाल बहादुर शास्त्री" और औद्योगिक क्रांति के अग्रदूत "सामान्य व्यक्ति से लाखों कारों के निर्माता–हैनरी फोर्ड" से होता है। इसके पश्चात, यह सूची दृष्टिबाधितों के संघर्ष (रुस्तमजी मे० अलपाईवाला), गरीबी से उठकर राजनैतिक पुरुषार्थ करने वाले नायकों (एफ० बुन्चे), 'मजदूर से डॉ०' बनने वाले संघर्षशीलों (शरण प्रसाद जी) और "शरीर से अपंग पर मन से समर्थ–हेलेन कीलर" जैसे जीवंत चरित्रों के माध्यम से यह संदेश देती है कि वास्तविक शक्ति मनुष्य की मानसिकता में निहित होती है।

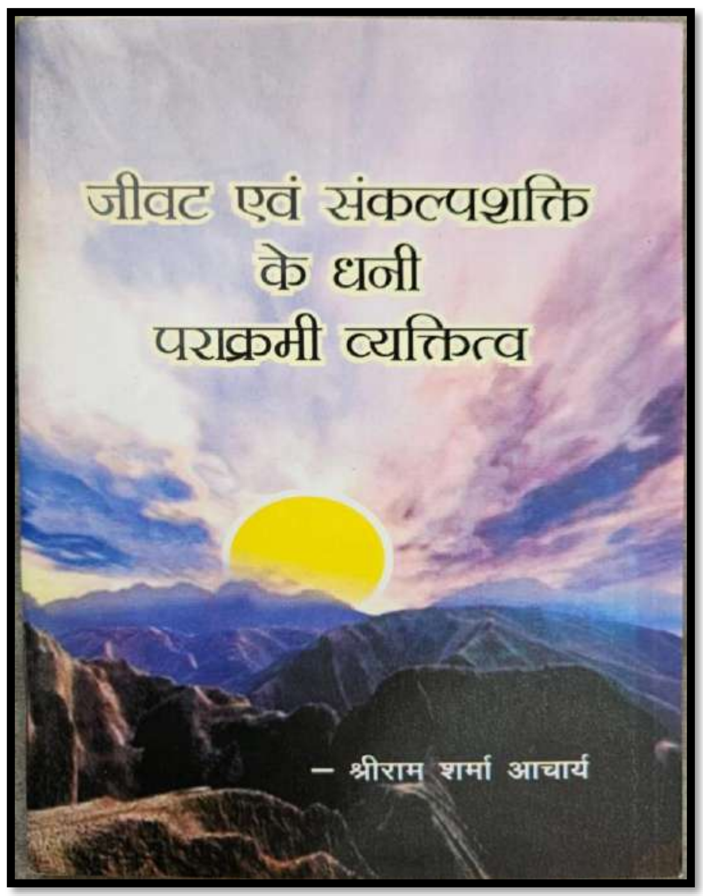
प्रासंगिकता

आज के अत्यधिक प्रतिस्पर्धी, तनावपूर्ण और भौतिकवादी युग में इस पाठ्य-सामग्री की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है:

- मानसिक सुदृढ़ता (Mental Resilience): आज की युवा पीढ़ी अवसाद, असफलता के डर और मानसिक तनाव से जल्दी घिर जाती है। ऐसे समय में इन "असामान्य प्रतिभाओं" के जीवन का यह पाठ कि "सद्गुणों के बल पर सफलता" पाई जा सकती है, युवाओं में हताशा को दूर कर सकारात्मकता का संचार करता है।

- सामाजिक-आर्थिक बाधाओं को तोड़ने की प्रेरणा: "नीचे से ऊपर बढ़ने वाले" (एच.जी. वेल्स) और "सब्जी बेचने से हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के सभापतित्व तक" पहुँचने वाले संघर्ष की कहानियां आज भी समाज के आर्थिक रूप से कमजोर और वंचित वर्ग के छात्रों को यह विश्वास दिलाती हैं कि उनकी पृष्ठभूमि उनकी प्रगति का रास्ता नहीं रोक सकती।
- सहानुभूति बनाम समावेशन (Inclusion over Pity): "शरीर से अपंग पर मन से समर्थ" का विचार आज के वैश्विक समावेशी समाज (Inclusive Society) के निर्माण में बेहद प्रासंगिक है, जो दिव्यांगों को दया की दृष्टि से देखने के बजाय उनके आंतरिक सामर्थ्य को पहचानने पर बल देता है।

4.18 जीवट एवं संकल्पशक्ति के धनी पराक्रमी व्यक्तित्व



यह पुस्तक मानव चेतना के सबसे मजबूत पक्ष–"जीवटता और अटूट संकल्पशक्ति"–का एक उत्कृष्ट संकलन है। पुस्तक का मूल वैचारिक ढांचा इस बात पर आधारित है कि इतिहास का निर्माण भौतिक संसाधनों से नहीं, बल्कि इंसानी हौसलों से होता है। अनुक्रमणिका का प्रारंभ अन्वेषण और खोज की पराकाष्ठा "नई दुनिया की खोज करने वाले कर्मवीर कोलंबस" से होता है। इसके पश्चात, यह सूची जीवन को भविष्योन्मुखी बनाने वाले नायक (श्री राम), मानवीय साहस के प्रतीक (क्रिकपैट्रिक), "अंधे संकल्प बल का परिचय देने वाले जनरल नेल्सन", और पराजय को भी विजय में बदलने वाले महान योद्धाओं की गाथा प्रस्तुत करती है।

अंत में, यह प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक डॉ. राममनोहर लोहिया के विचारों के साथ सामाजिक और वैचारिक दृढ़ता को समाहित करती है।

प्रासंगिकता

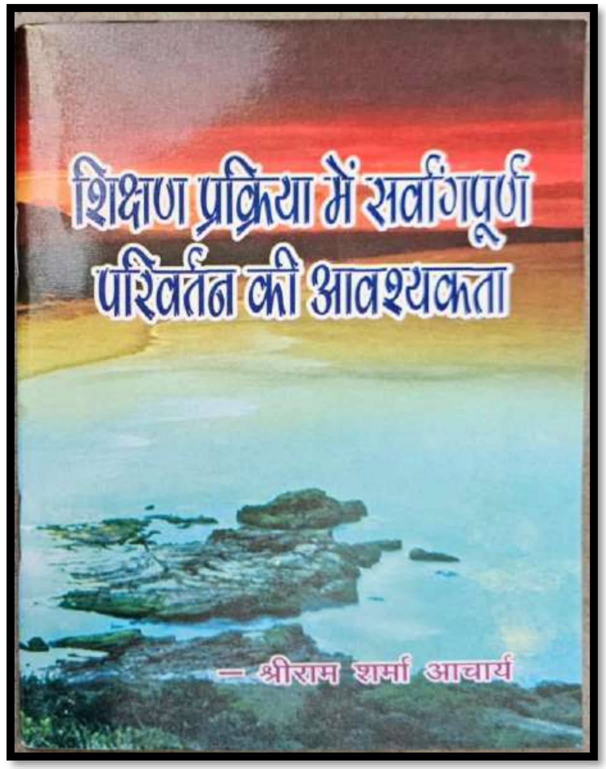
आज के अनिश्चितता, तीव्र परिवर्तन और मानसिक चुनौतियों से भरे २१वीं सदी के दौर में इस विषय-वस्तु की प्रासंगिकता बहुत गहरी है:

- मानसिक दृढ़ता और अवसाद से मुक्ति: आधुनिक युग में असफलता या कठिन परिस्थितियों के सामने युवा जल्दी हार मान लेते हैं। ऐसे में पुस्तक का यह विचार कि "महान योद्धा विकट परिस्थितियों से कभी हार नहीं मानते", युवाओं में रेजिलिएंस (Resilience) और जुझारूपन विकसित करने के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।
- अन्वेषण और नवाचार की भावना (Spirit of Exploration): कोलंबस के माध्यम से "नई दुनिया की खोज" का प्रसंग आज के शोधार्थियों और छात्र-वैज्ञानिकों को लीक से हटकर सोचने (Out-of-the-box thinking) और नए क्षेत्रों में नवाचार करने की प्रेरणा देता है।
- वैचारिक और सामाजिक न्याय की चेतना: वर्तमान समय में जब सामाजिक और राजनीतिक मूल्य तेजी से बदल रहे हैं, "प्रखर राष्ट्रवादी डॉ. राममनोहर लोहिया" के विचार सामाजिक समरसता, समतावादी समाज और लोकतांत्रिक सजगता को बनाए रखने के लिए आज भी अचूक मार्गदर्शक हैं।

4.19 शिक्षण प्रक्रिया में सर्वांगपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता

यह पुस्तक आधुनिक शिक्षण प्रतिमानों (Pedagogical Models) में सुधार और 'शिक्षण प्रक्रिया में सर्वांगीण परिवर्तन' का एक व्यापक खाका पेश करती है। पुस्तक का मूल वैचारिक ढांचा इस बात पर बल देता है कि शिक्षा केवल किताबी ज्ञान हस्तांतरण का साधन नहीं है, बल्कि यह मूल्य-आधारित और व्यावहारिक होनी चाहिए। अनुक्रमणिका का प्रारंभ पारंपरिक और शाश्वत मूल्य "गुरु की महिमा, महत्व एवं जिम्मेदारी" तथा "अध्यापक अपने आदर्शों से मार्गदर्शन दें" से होता है। इसके उपरांत, यह सूची शिक्षा में संस्कार और कौशल

के समन्वय, दृढ़ संकल्प, शिक्षक-छात्र के मध्य सघन संपर्क, समय की महत्ता, और शिक्षण सहायक सामग्रियों (टीएलएम) के व्यावहारिक उपयोग को समाहित करते हुए अंतिम बिंदु "सेवा सहकारिता का अभ्यास" तक एक सुव्यवस्थित क्रम विकसित करती है।

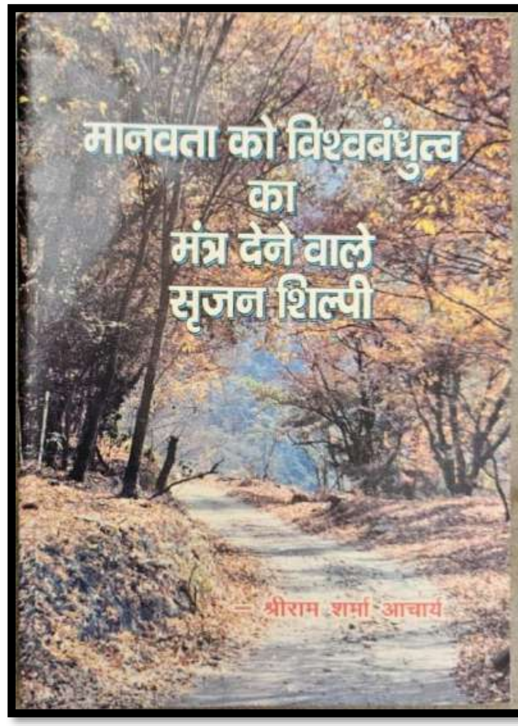


प्रासंगिकता

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) और २१वीं सदी के आधुनिक क्लासरूम के संदर्भ में इस सामग्री की प्रासंगिकता अत्यंत अकाट्य है:

- संस्कार और कौशल का एकीकरण: आज की शिक्षा प्रणाली पर यह आरोप लगता है कि वह केवल रोजगारोन्मुखी है और नैतिक रूप से शुष्क है। विषय-सूची का तीसरा बिंदु–"शिक्षा में संस्कारिता का समन्वय"–आज समाज में बढ़ रहे चारित्रिक संकट को दूर करने के लिए बेहद प्रासंगिक है।
- सघन शिक्षक-छात्र संवाद की आवश्यकता: डिजिटल लर्निंग और बड़े क्लासरूम के इस दौर में शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच एक दूरी आ गई है। ऐसे में पुस्तक का छठा बिंदु–"अध्यापकों और छात्रों के बीच सघन संपर्क"–विद्यार्थियों के मानसिक व संवेगात्मक विकास (Emotional Well-being) के लिए आज सबसे ज्यादा जरूरी है।
- रिसोर्स मोबिलाइजेशन और नवाचार: वर्तमान में प्रभावी शिक्षण के लिए महंगे उपकरणों के स्थान पर "उपलब्ध उदाहरणों, आपत्ति रहित एवं साधनों का प्रयोग" (कम लागत वाली शिक्षण सामग्री/Low-cost TLM) की बात करना सतत शिक्षा और समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) के सिद्धांतों के अनुकूल है।

4.20 मानवता को विश्वबंधुत्व का मंत्र देने वाले सृजन शिल्पी



यह पुस्तक संकुचित राष्ट्रवाद और सीमाओं से परे जाकर संपूर्ण पृथ्वी को एक परिवार मानने वाली उदात्त भावना–"वसुधैव कुटुम्बकम्"–का एक उत्कृष्ट वैचारिक संकलन है। इस पुस्तक का मूल ढांचा "वैश्विक नागरिकता (Global Citizenship), अहिंसा और मानवीय मूल्य" पर आधारित है। अनुक्रमणिका का प्रारंभ "अहिंसा के पुजारी–अफ्रीका के गांधी जोमो केन्याटा" और "विश्वबन्धुत्व का आह्वान करने वाले श्री फ्रेडरिक पासी" से होता है। इसके पश्चात, यह सूची पीड़ित मानवता के प्रति संवेदना (जॉर्ज/गवेज), नैतिकता और आदर्शवादिता (क्लीमेंट एटली), विश्व शांति के अग्रदूतों (ग्रेनविल क्लार्क, रिचर्ड एलेन, डॉ. लाइनस पॉलिंग) के साथ-साथ शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने वाले विचारकों (अर्नेस्ट चे ग्वेरा, टॉमस पेन) के संघर्षों को रेखांकित करती है।

प्रासंगिकता

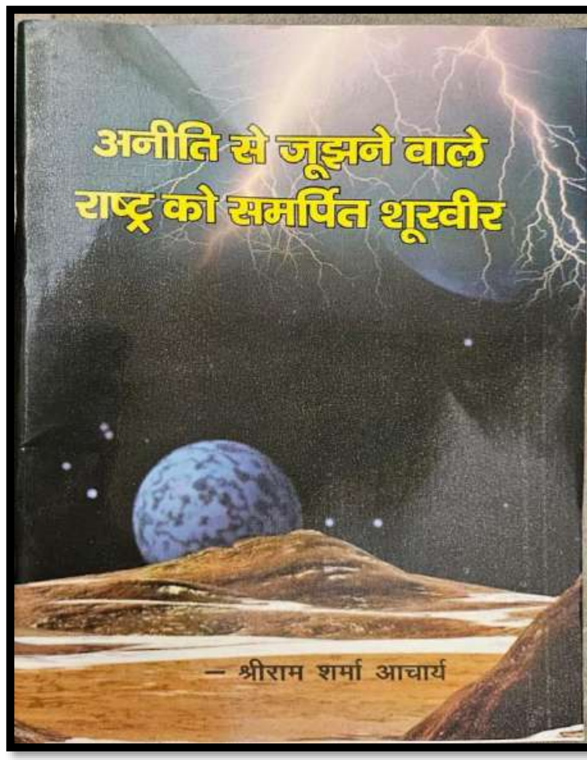
वर्तमान 21वीं सदी के भू-राजनीतिक तनाव, युद्ध और वैश्वीकरण (Globalization) के दौर में इस विषय-वस्तु की प्रासंगिकता अत्यंत महत्वपूर्ण है:

- वैश्विक शांति और निरस्त्रीकरण: आज जब दुनिया विभिन्न क्षेत्रों में युद्ध और परमाणु खतरों से जूझ रही है, तब "विश्वशान्ति के प्रबल प्रचारक ग्रेनविले क्लार्क" और "विश्वशान्ति के अग्रदूत डॉ. लाइनस पॉलिंग" के विचार वैश्विक सुरक्षा और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए परम प्रासंगिक हैं।
- मानवाधिकार और न्यायसंगत समाज: "शोषण से संघर्ष को दायित्व मानने वाले अर्नेस्ट चे ग्वेरा" और "अनाचार से निर्भीक विद्रोह करने वाले टॉमस पेन" के प्रसंग

आज भी दुनिया भर में हाशिए के लोगों के अधिकारों, समतावादी समाज के निर्माण और अन्याय के खिलाफ खड़े होने की प्रेरणा देते हैं।

- अंतरराष्ट्रीय समझ (Internationalism): "विश्व को एकसूत्र में बाँधने का सपना देखने वाले श्री हेनरी मार्गन" का अध्याय संकीर्ण सांप्रदायिकता, नस्लवाद और क्षेत्रीयतावाद के जहर को कम कर वैश्विक भाईचारे को बढ़ावा देने के लिए आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

4.21 अनीति से जूझने वाले राष्ट्र को समर्पित शूरवीर



यह पुस्तक की स्वतंत्रता, राष्ट्रीय अस्मिता और अन्याय के विरुद्ध मुखर होने वाले शूरवीरों का एक ऐतिहासिक व वैचारिक रेखाचित्र है। इस सामग्री का मूल ढांचा "राष्ट्रीय स्वाभिमान, अनीति का प्रतिरोध और नि:स्वार्थ राष्ट्र-सेवा" के सिद्धांतों पर टिका है। अनुक्रमणिका का प्रारंभ "मातृभूमि के बलिदानी–सोहनलाल पाठक" और "विस्मृत क्रांतिवीर पंडित गेंदालाल दीक्षित" के प्रसंगों से होता है, जो इतिहास के उन पन्नों को खोलते हैं जो मुख्यधारा में कम चर्चित रहे। इसके पश्चात, यह सूची अन्याय के सामने सिर न झुकाने वाले नायकों (लाला लाजपत राय), समाजवाद के अग्रदूतों (डॉ. राम मनोहर लोहिया), राष्ट्र की स्वतंत्रता को समर्पित जाँबाजों (कुंदनलाल दत्त, बरहद), सूफी चेतना (सूफी अम्बा प्रसाद) और राष्ट्रीय स्वाभिमान के रक्षकों (मेजर मेधासिंह, विश्वनाथ) की गाथाओं को एक सूत्र में पिरोती है।

प्रासंगिकता

वर्तमान 21वीं सदी के लोकतांत्रिक भारत और वैश्वीकरण के दौर में इस विषय-वस्तु की प्रासंगिकता और अधिक प्रामाणिक हो जाती है:

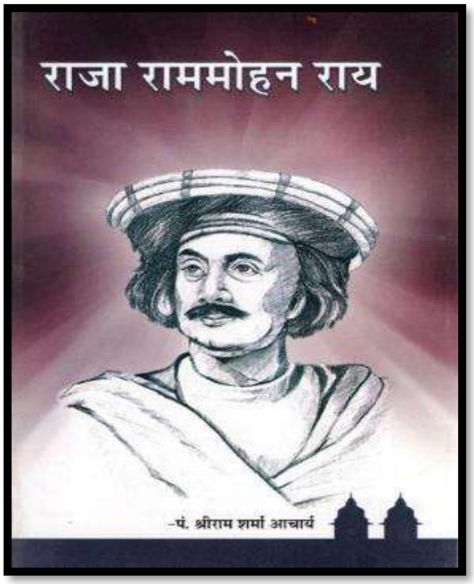
- अनीति और भ्रष्टाचार का तार्किक विरोध: आज जब समाज में विभिन्न स्तरों पर नैतिक पतन या अनीति दिखाई देती है, तब पुस्तक का मुख्य विचार–"अनीति से जूझना"–युवाओं को एक नागरिक के रूप में जागरूक रहने और गलत प्रथाओं के विरुद्ध संवैधानिक व तार्किक रूप से खड़े होने की प्रेरणा देता है।
- विस्मृत नायकों का पुनर्मूल्यांकन: इतिहास के उन अनछुए पहलुओं और "विस्मृत क्रांतिवीरों" (जैसे पं. गेंदालाल दीक्षित) को सामने लाना आज के आधुनिक इतिहास लेखन और राष्ट्रवादी विमर्श के लिए बेहद जरूरी है ताकि भावी पीढ़ी अपनी जड़ों को सही रूप में पहचान सके।
- राष्ट्रीय स्वाभिमान की पुनर्स्थापना: आज की पीढ़ी जो पश्चिमीकरण की अंधी दौड़ में कभी-कभी अपनी सांस्कृतिक पहचान खोने लगती है, उसके लिए इस सूची का अंतिम बिंदु–"राष्ट्रीय स्वाभिमान के रक्षक"–आत्मगौरव और स्वदेशी चेतना को जागृत करने के लिए परम प्रासंगिक है।

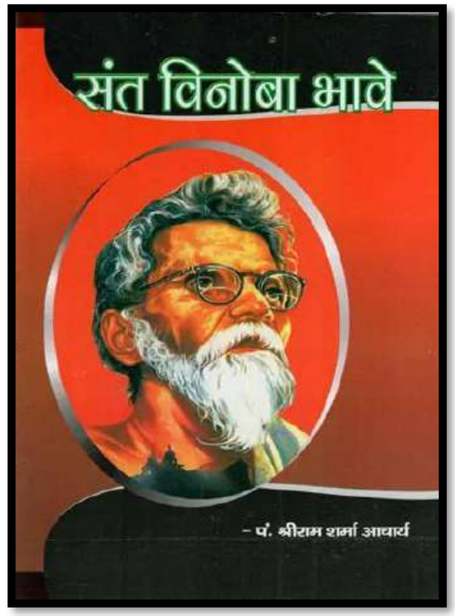
4.22 महापुरुषों की जीवनियाँ

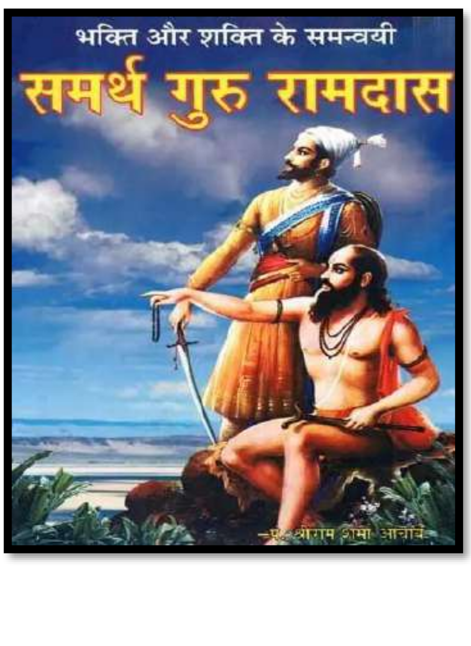
राजाराम मोहन राय, सन्त विनोबा भावे, समर्थ गुरु रामदास, सुभाष चन्द्र बोस, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वती

इतिहास गवाह है कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति और उसकी वैचारिक नींव वहां के महापुरुषों के चरित्र और उनके संघर्षों पर टिकी होती है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वाप उपर्युक्त महापुरुषों के जीवन चरित्र पर सरल एवं सरस भाषा में पुस्तकें लिखी गयी हैं। जिनमें भारतीय पुनर्जागरण, समाज सुधार, आध्यात्मिक चेतना और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रणेताओं का एक अनूठा संगम देखने को मिलता है। राजा राममोहन राय से लेकर स्वामी दयानन्द सरस्वती तक, इन सभी विभूतियों ने समाज की कुरीतियों को मिटाने, युवाओं में आत्मगौरव जगाने और राष्ट्र को स्वावलंबन का पाठ पढ़ाने में अपना जीवन समर्पित कर

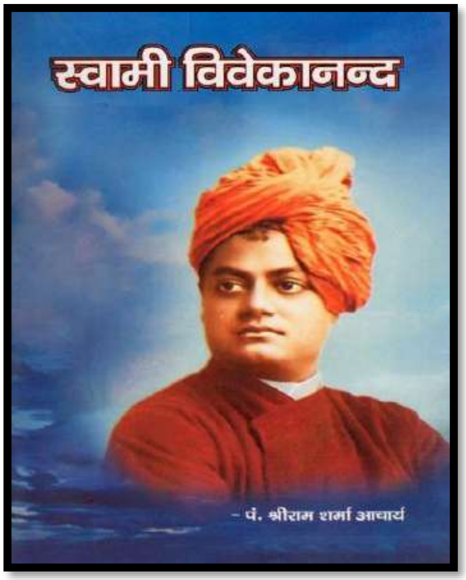
दिया। विद्यार्थियों को इन महापुरुषों की जीवनियों से परिचित कराना उनके भीतर उच्च नैतिक मूल्यों और राष्ट्रीय अस्मिता का बीजारोपण करने की एक बुनियादी शुरुआत है।

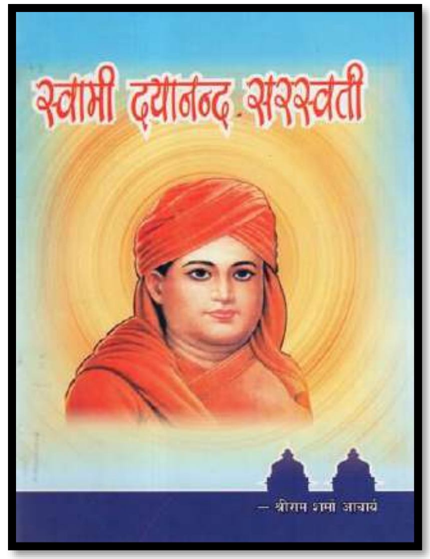












प्रासंगिकता

आज के भौतिकतावादी और तीव्र गति से बदलते दौर में, जहाँ युवा पीढ़ी के सामने वास्तविक और नैतिक 'रोल मॉडल्स' (आदर्शों) का अभाव दिखता है, इन महापुरुषों की जीवनियाँ अत्यधिक प्रासंगिक हैं:

- वैचारिक भटकाव से मुक्ति: स्वामी विवेकानंद और सुभाष चंद्र बोस के विचार आज के भटके हुए और अवसाद से घिरे युवाओं को अदम्य साहस, ऊर्जा और जीवन को एक बड़ा उद्देश्य देने की प्रेरणा देते हैं।
- सामाजिक समरसता और सुधार: राजा राममोहन राय और स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रासंगिकता आज भी समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, जातिवाद और लैंगिक असमानता जैसी रूढ़ियों को उखाड़ फेंकने के लिए उतनी ही अनिवार्य है जितनी पहले थी।
- स्वावलंबन और भूदान की भावना: संत विनोबा भावे का सर्वोदय और समाज के अंतिम व्यक्ति के उत्थान का विचार आज के आर्थिक रूप से असमान समाज में करुणा और सहकारिता का मार्ग दिखाता है।

4.23 संगीत सौरभ भाग-3

संगीत मानव चेतना को प्रभावित करने वाला सबसे सशक्त और तीव्र माध्यम है। प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में संगीत को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर आत्म-कल्याण और लोक-कल्याण का मार्ग माना गया है। "संगीत सौरभ भाग-3" इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए प्रज्ञा गीतों, सांस्कृतिक चेतना और नैतिक क्रांतियों के गीतों का एक अनुपम संग्रह है। इस पुस्तक का मुख्य उद्देश्य संगीतमय छंदों के माध्यम से जनमानस में कुरीतियों के प्रति जागृति लाना, राष्ट्रप्रेम की भावना भरना और मनुष्य के भीतर छिपी देवत्व की भावना को झंकृत करना है। यह पुस्तक शुष्क उपदेशों के स्थान पर सरस और संगीतमय विधा से चरित्र परिष्कार की नींव रखती है।



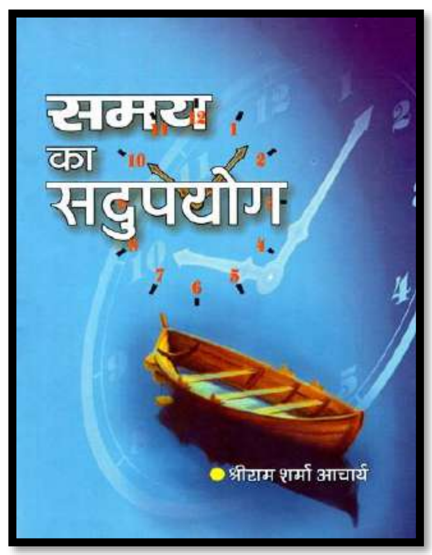


प्रासंगिकता

आज के आपाधापी और मानसिक तनाव से भरे इस दौर में, जहाँ संगीत का स्तर काफी हद तक सतही और केवल उत्तेजना पैदा करने वाला रह गया है, “संगीत सौरभ भाग-3” की प्रासंगिकता बहुत अधिक बढ़ जाती है:

- मानसिक शांति और सकारात्मकता: इस पुस्तक के प्रज्ञा गीत और आध्यात्मिक भजन आज की अवसादग्रस्त युवा पीढ़ी को मानसिक सुकून और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करते हैं।
- सांस्कृतिक पुनर्जागरण: पश्चिमीकरण की होड़ में लुप्त हो रहे भारतीय संस्कारों, पारिवारिक मूल्यों और मर्यादाओं को पुनः जीवित करने के लिए इसके गीतों का सामाजिक गान बहुत आवश्यक है।
- सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार: इसके गीतों में नशाखोरी, जातिवाद, दहेज प्रथा और अंधविश्वास जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ एक वैचारिक क्रांति का आहवान किया गया है, जो आज के समाज सुधार के लिए बेहद प्रासंगिक है।

4.24 समय का सदपयोग



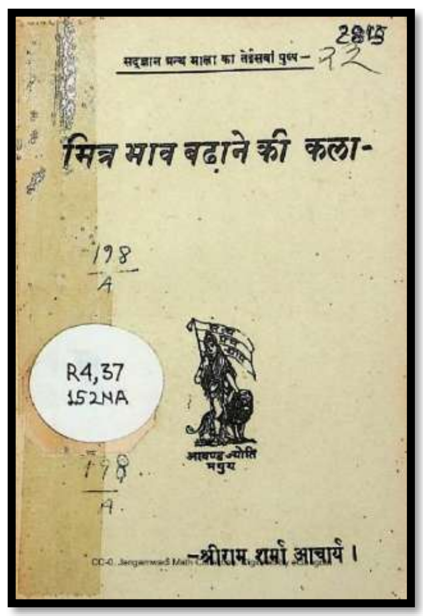
समय ब्रह्मांड की सबसे मूल्यवान और सीमित पूँजी है। संसार की हर खोई हुई वस्तु या धन को दोबारा कमाया जा सकता है, लेकिन बीता हुआ एक भी क्षण वापस नहीं लाया जा सकता। "समय का सदुपयोग" केवल एक सूक्ति या नारा नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की एक महान कला और विधा है। इतिहास साक्षी है कि जितने भी महापुरुष हुए हैं, उनकी महानता के पीछे समय के प्रति उनकी निष्ठा और उसका कुशल प्रबंधन ही सबसे बड़ा कारण रहा है। मानव जीवन की सार्थकता इस बात पर निर्भर करती है कि वह प्रकृति द्वारा मिले इस सीमित समय का उपयोग विनाशकारी कार्यों में करता है या सृजनात्मक और रचनात्मक कार्यों में।

प्रासंगिकता

आज के 21वीं सदी के डिजिटल और सूचना प्रौद्योगिकी के युग में 'समय के सदुपयोग' की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है:

- **डिजिटल भटकाव (Digital Distraction) से बचाव:** आज इंटरनेट, सोशल मीडिया, रील्स और ऑनलाइन गेम्स के कारण युवाओं और बच्चों का एक बड़ा हिस्सा अनजाने में ही अपना कीमती समय नष्ट कर रहा है। ऐसे दौर में समय की कीमत को समझना और आत्म-नियंत्रण सीखना बेहद जरूरी हो गया है।
- **तनावमुक्त जीवनशैली:** जो लोग समय का प्रबंधन (Time Management) नहीं जानते, वे हमेशा काम के दबाव, अंतिम समय की हड़बड़ी और मानसिक तनाव से घिरे रहते हैं। समय का सही उपयोग आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में मानसिक शांति की पहली शर्त है।

4.25 मित्र भाव बढ़ाने की कला



मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसके सामाजिक जीवन की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह दूसरों के साथ कैसे संबंध बनाता है और उन्हें कैसे निभाता है। “मित्र भाव बढ़ाने की कला” केवल मित्र बनाने का हुनर नहीं है, बल्कि यह अपने भीतर सहानुभूति (Empathy), सहिष्णुता, करुणा और बिना किसी स्वार्थ के दूसरों को स्वीकार करने की मानवीय क्षमता का विकास है। यह कला व्यक्ति को संकीर्ण स्वार्थों और ‘मैं’ की भावना से ऊपर उठाकर ‘हम’ के व्यापक धरातल पर ले जाती है। भारतीय संस्कृति के मूल मंत्र “वसुधैव कुटुम्बकम्” (पूरी धरती ही मेरा परिवार है) की व्यावहारिक शुरुआत इसी मित्र भाव से होती है।

प्रासंगिकता

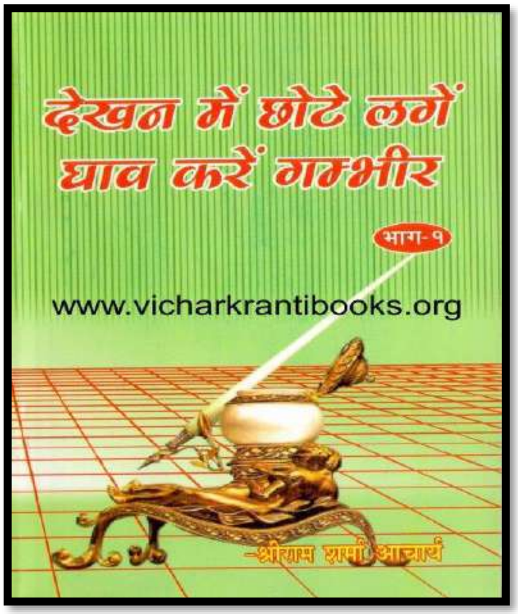
आज की 21वीं सदी के उत्तर-आधुनिक और डिजिटल समाज में इस कला की प्रासंगिकता बहुत अधिक बढ़ गई है:

अकेलेपन और अवसाद (Loneliness & Depression) का समाधान: आज इंटरनेट और सोशल मीडिया के युग में लोग 'वर्जुअल' रूप से हज़ारों लोगों से जुड़े हैं, लेकिन व्यावहारिक जीवन में वे नितांत अकेले हैं। यह अकेलापन अवसाद को जन्म दे रहा है। ऐसे में वास्तविक जीवन में निश्छल मित्र भाव बढ़ाना मानसिक स्वास्थ्य के लिए रामबाण है।

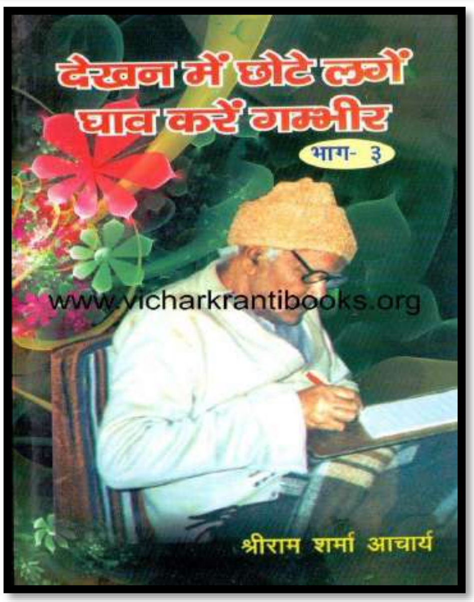
असहिष्णुता और हिंसा में कमी: वर्तमान समय में समाज में छोटी-छोटी बातों पर वैचारिक मतभेद, गुस्सा और असहिष्णुता बढ़ रही है। मित्र भाव की कला लोगों को एक-दूसरे के विचारों का सम्मान करना और मतभेदों के बावजूद प्रेमपूर्वक साथ रहना सिखाती है।

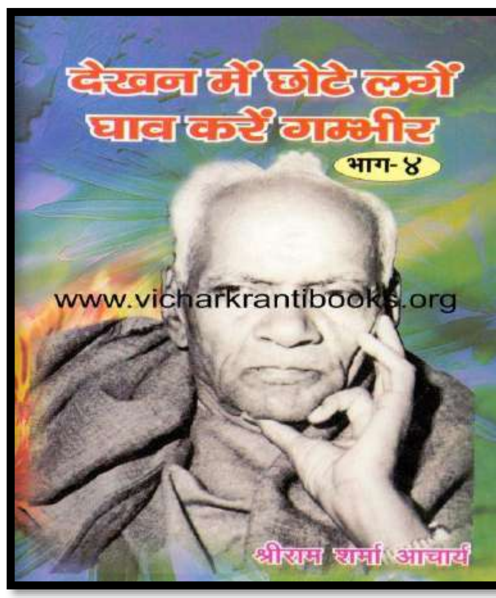
4.26 देखन मैं छोटे लगें घाव करे गंभीर

संसार में बहुत सी वस्तुएं, विचार या घटनाएं ऐसी होती हैं जो बाह्य रूप से अत्यंत सूक्ष्म, छोटी या नगण्य दिखाई देती हैं, परंतु उनका आंतरिक प्रभाव या परिणाम बेहद व्यापक, गहरा और अचूक होता है। "देखने में छोटे लगे घाव करे गंभीर" यह उक्ति हमें जीवन के इसी गूढ़ सत्य से परिचित कराती है। यह सूक्ति केवल भौतिक या शारीरिक चोट के संदर्भ में नहीं है, बल्कि यह हमारे विचारों, वाणी के प्रयोग, छोटी-छोटी आदतों और जीवन की सूक्ष्म चूक के दूरगामी प्रभावों को रेखांकित करती है। यह हमें सिखाती है कि किसी भी वस्तु या व्यक्ति का मूल्यांकन केवल उसके बाहरी आकार या स्वरूप से नहीं, बल्कि उसकी आंतरिक क्षमता और प्रभाव से किया जाना चाहिए।









प्रासंगिकता

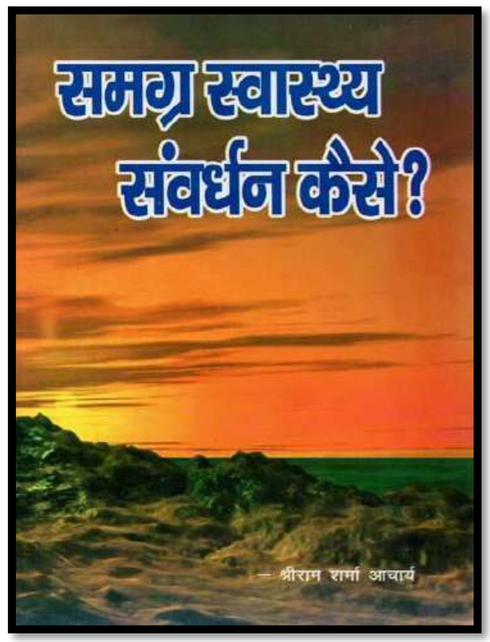
आज के आधुनिक और तकनीकी प्रधान समाज में इस विचार की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ गई है:

- वाणी और सोशल मीडिया का प्रभाव: आज के दौर में इंटरनेट या सोशल मीडिया पर लिखी गई एक छोटी सी नकारात्मक टिप्पणी या कड़वा शब्द किसी के मानसिक

स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित कर सकता है या बड़े सामाजिक विवाद का रूप ले सकता है। वाणी का यह सूक्ष्म रूप 'घाव गंभीर' करने की पूरी क्षमता रखता है।

- सूक्ष्म वायरस और बीमारियां: हाल के वर्षों में वैश्विक स्तर पर देखे गए स्वास्थ्य संकटों ने यह साबित कर दिया है कि आंखों से न दिखने वाले सूक्ष्म वायरस भी पूरी मानवता को घुटनों पर ला सकते हैं।
- छोटी-छोटी आदतें (Micro-habits): आज की व्यस्त जीवनशैली में हमारी छोटी सी अस्वास्थ्यकर आदत (जैसे देर तक जागना या जंक फूड खाना) शुरुआत में बहुत छोटी लगती है, लेकिन लंबे समय में यह गंभीर बीमारियों का कारण बन जाती है।

4.27 समग्र स्वास्थ्य संवर्धन कैसे?



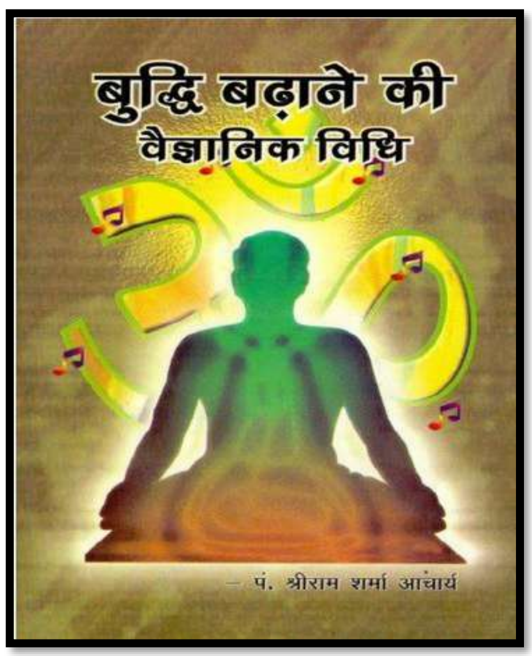
भारतीय संस्कृति में "पहला सुख निरोगी काया" कहकर स्वास्थ्य को जीवन का सबसे बड़ा धन माना गया है। 'समग्र स्वास्थ्य संवर्धन' (Holistic Health Promotion) का अर्थ केवल शारीरिक रूप से रोगमुक्त होना नहीं है, बल्कि इसमें मनुष्य के चार प्रमुख आयाम शामिल हैं–शारीरिक सुदृढ़ता (Physical), मानसिक शांति (Mental), सामाजिक सामंजस्य (Social) और आत्मिक या आध्यात्मिक चेतना (Spiritual)। यह विषय इस बात पर बल देता है कि मनुष्य एक संपूर्ण इकाई है; यदि उसका मन अशांत है, तो शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता, और यदि शरीर अस्वस्थ है, तो विचार सकारात्मक नहीं हो सकते। अतः समग्र स्वास्थ्य को उन्नत करना जीवन को पूर्णता और आनंद के साथ जीने का विज्ञान है।

प्रासंगिकता

आज की 21वीं सदी की आधुनिक और तकनीकी प्रधान जीवनशैली में यह विषय अत्यधिक प्रासंगिक हो चुका है:

- **लाइफस्टाइल बीमारियों (Lifestyle Diseases) का समाधान:** आज के दौर में गलत खान-पान, शारीरिक निष्क्रियता और जंक फूड के कारण युवाओं में मोटापा, मधुमेह (Diabetes) और हृदय रोग जैसी बीमारियाँ तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसे में समग्र स्वास्थ्य संवर्धन के सिद्धांतों को अपनाना अपरिहार्य है।
- **मानसिक स्वास्थ्य संकट (Mental Health Crisis):** आधुनिक समाज में अत्यधिक प्रतिस्पर्धा और डिजिटल भटकाव के कारण अवसाद, चिंता (Anxiety) और अनिद्रा जैसी मानसिक समस्याएँ आम हो चुकी हैं। यह विषय मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के संतुलन पर विशेष जोर देता है।
- **प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) का विकास:** हाल के वर्षों में आए वैश्विक स्वास्थ्य संकटों ने यह साबित कर दिया है कि केवल दवाइयों के भरोसे नहीं रहा जा सकता; शरीर की आंतरिक रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाना ही दीर्घकालिक सुरक्षा की गारंटी है।

4.28 बुद्धि बढ़ाने की वैज्ञानिक विधि



बुद्धि मनुष्य को प्रकृति द्वारा दिया गया सबसे अनमोल उपहार है, जो उसे अन्य जीवों से श्रेष्ठ बनाती है। लंबे समय तक यह माना जाता रहा कि बुद्धि पूरी तरह जन्मजात और स्थिर होती है, जिसे बदला नहीं जा सकता। परंतु आधुनिक मनोविज्ञान और न्यूरोसाइंस ने 'न्यूरोप्लास्टिसिटी' (Neuroplasticity) के सिद्धांत से यह साबित कर दिया है कि सही वैज्ञानिक विधियों, अभ्यास और सही पोषण के माध्यम से मस्तिष्क की कार्यक्षमता, स्मृति (Memory) और बुद्धि (IQ) को बढ़ाया और

परिष्कृत किया जा सकता है। "बुद्धि बढ़ाने की वैज्ञानिक विधि" केवल रटने की कला नहीं है, बल्कि यह मस्तिष्क के दोनों गोलार्धों (Left and Right Hemispheres) को संतुलित करने, एकाग्रता बढ़ाने और तार्किक क्षमता को तीव्र करने का एक व्यवस्थित विज्ञान है।

प्रासंगिकता

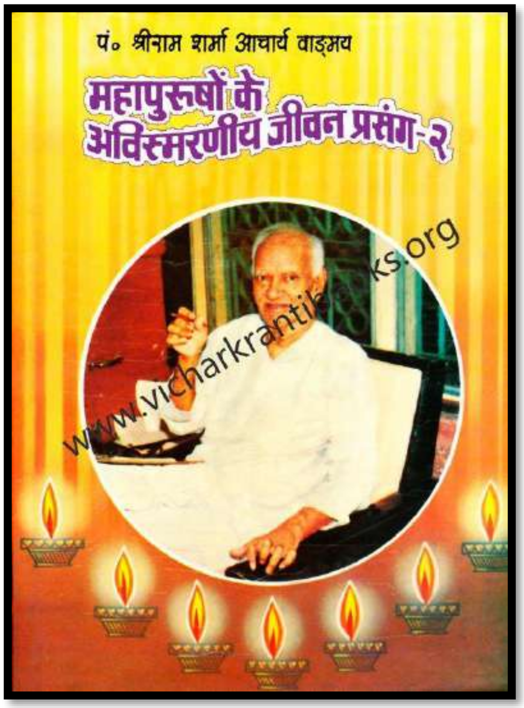
आज के सूचना विस्फोट और अत्यधिक प्रतिस्पर्धात्मक (Competitive) युग में इस विषय की प्रासंगिकता बहुत अधिक बढ़ गई है:

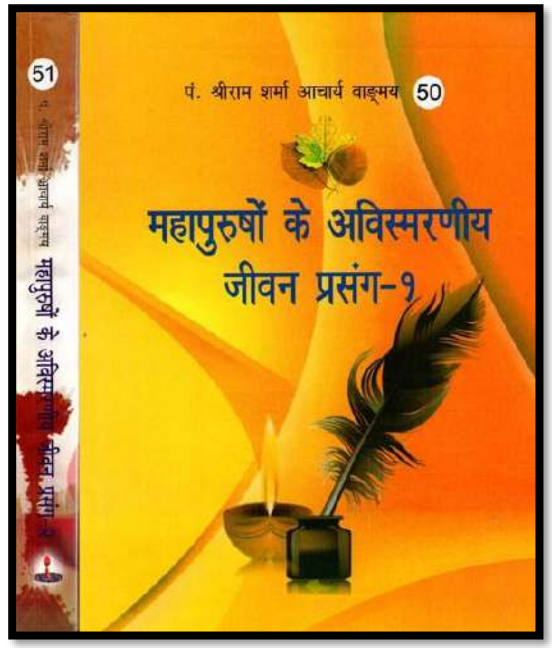
- सूचनाओं का अंबार (Information Overload): आज इंटरनेट के दौर में ज्ञान की कमी नहीं है, बल्कि कमी इस बात की है कि उस ज्ञान को कैसे समझा जाए, विश्लेषित किया जाए और याद रखा जाए। इसके लिए वैज्ञानिक रूप से तीव्र बुद्धि और तीक्ष्ण याददाश्त की आवश्यकता है।
- मानसिक भटकाव और स्क्रीन टाइम: डिजिटल गैजेट्स और सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से आज की पीढ़ी की एकाग्रता की अवधि (Attention Span) बहुत कम हो गई है। ऐसे समय में एकाग्रता बढ़ाने वाली वैज्ञानिक विधियां (जैसे त्राटक, प्राणायाम और ध्यान) मानसिक भटकाव को रोकने के लिए बेहद प्रासंगिक हैं।
- समस्या समाधान कौशल (Problem-Solving Skills): आज के दौर में रटंत विद्या निरर्थक साबित हो रही है। कॉर्पोरेट जगत और व्यावहारिक जीवन में उन्हीं को सफलता मिलती है जिनकी तार्किक और विश्लेषणात्मक बुद्धि वैज्ञानिक रूप से विकसित होती है।

4.29 महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग (भाग-1)

इतिहास केवल तारीखों और घटनाओं का पुलिंदा नहीं है, बल्कि यह उन महान विभूतियों के अनुभवों का निचोड़ है जिन्होंने अपने युग को एक नई दिशा दी। महापुरुषों के संपूर्ण जीवन दर्शन को समझने का सबसे सरल और प्रभावी माध्यम उनके जीवन के "अविस्मरणीय प्रसंग" होते हैं। ये प्रसंग उनके जीवन की वे छोटी-छोटी परंतु अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाएँ होती हैं, जो उनके उच्च चरित्र, अटूट संकल्प, ईमानदारी, करुणा और संकट के समय उनके

विवेक को प्रकट करती हैं। यह विषय शुष्क इतिहास या लंबी जीवनियों के स्थान पर, कहानियों और प्रेरक घटनाओं के माध्यम से सीधे पाठक या विद्यार्थी के हृदय को छूने और उन्हें झकझोरने का एक जीवंत प्रयास है।





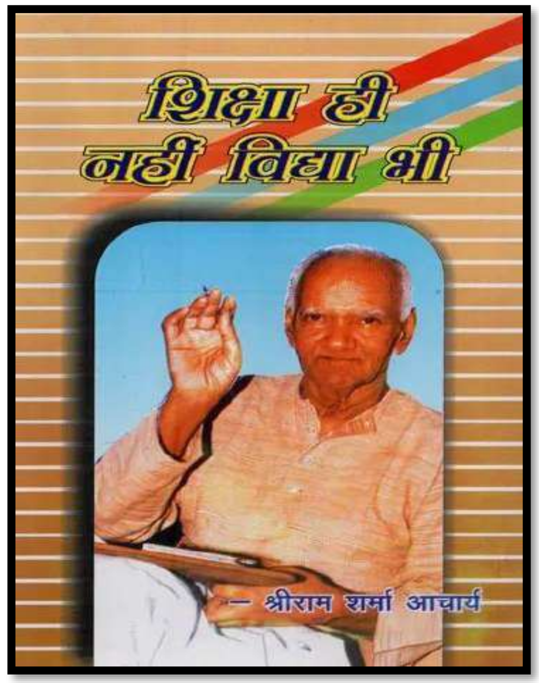
प्रासंगिकता

आज के सूचना क्रांति और सतही चकाचौंध के युग में, इन अविस्मरणीय जीवन प्रसंगों की प्रासंगिकता बहुत अधिक बढ़ जाती है:

- सच्चे आदर्शों (True Role Models) की खोज: आज की युवा पीढ़ी सोशल मीडिया के दौर में आभासी (Virtual) और क्षणिक प्रसिद्ध पाने वाले लोगों को अपना आदर्श मानने लगी है। ऐसे समय में महापुरुषों के वास्तविक त्याग, संघर्ष और ईमानदारी के प्रसंग युवाओं को जीवन की वास्तविक कसौटियों से परिचित कराते हैं।
- नैतिक संकट और भटकाव का समाधान: आज समाज में भ्रष्टाचार, स्वार्थपरता और मानवीय संवेदनाओं की कमी देखी जा रही है। महापुरुषों के जीवन प्रसंग (जैसे– गांधी जी की सत्यनिष्ठा, विवेकानंद का सेवा भाव, या शास्त्री जी की सादगी) आज के मनुष्यों को आत्म-निरीक्षण करने और सही मार्ग चुनने की प्रेरणा देते हैं।

- कठिन समय में संबल: जब कोई व्यक्ति या छात्र असफलता या निराशा के दौर से गुजर रहा होता है, तब महापुरुषों के जीवन के संघर्षमयी प्रसंग उसके भीतर पुनः उठ खड़े होने का साहस और सकारात्मक ऊर्जा भरते हैं।

4.30 शिक्षा ही नहीं विद्या भी



भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान के दो रूपों की चर्चा की गई है–भौतिक या सांसारिक ज्ञान और आध्यात्मिक या आत्मिक ज्ञान। आधुनिक दौर में जिसे हम 'एजुकेशन' या साक्षरता कहते हैं, वह मुख्य रूप से "शिक्षा" (Information/Skill) है, जो हमें जीविकोपार्जन या नौकरी पाने के योग्य बनाती है। परंतु, "विद्या" (Wisdom/Spiritual Knowledge) इससे कहीं व्यापक और गहरी अवधारणा है। विद्या वह आंतरिक प्रकाश है जो मनुष्य के भीतर विवेक, विनम्रता, संवेदनशीलता और आत्मज्ञान को जागृत करता है। यह विषय शिक्षा और विद्या के इसी बुनियादी अंतर और उनके समन्वय को रेखांकित करता है, जो स्पष्ट करता है कि मनुष्य का वास्तविक उत्थान केवल अक्षरों को पढ़ लेने से नहीं, बल्कि जीवन के सत्य को समझ लेने से होता है।

प्रासंगिकता

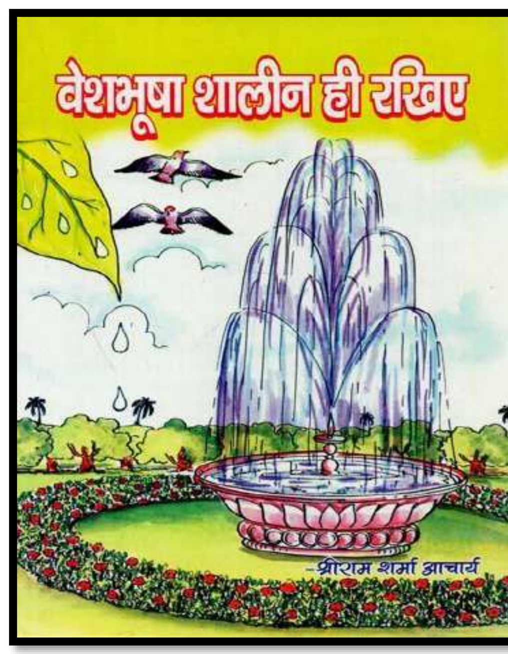
आज की 21वीं सदी के तकनीकी, व्यावसायिक और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी समाज में इस विचार की प्रासंगिकता बहुत अधिक बढ़ गई है:

- डिग्री बनाम चरित्र का संकट: आज हमारे पास उच्च शिक्षित (Highly Educated) लोगों की कमी नहीं है, लेकिन इसके बावजूद समाज में भ्रष्टाचार, साइबर अपराध, संवेदनहीनता और नैतिक पतन की घटनाएं बढ़ रही हैं। इसका मुख्य कारण यह है

कि लोगों के पास 'शिक्षा' तो है, लेकिन 'विद्या' (संस्कार और विवेक) का अभाव है।

- मानसिक अशांति और भटकाव: आज युवा वर्ग करियर की ऊंचाइयों पर पहुँचने के बाद भी अकेलेपन, तनाव और अवसाद का शिकार हो रहा है। भौतिक शिक्षा हमें धन कमाना तो सिखा देती है, लेकिन विद्या हमें जीवन जीना और विषम परिस्थितियों में भी मानसिक संतुलन बनाए रखना सिखाती है।
- मशीनीकरण से बचाव: एआई (AI) और आधुनिक तकनीकों के इस दौर में केवल सूचनाएं याद रखना या तकनीकी कौशल (Skills) सीख लेना काफी नहीं है, क्योंकि वे काम मशीनें भी कर सकती हैं। मनुष्य को मशीन बनने से रोकने के लिए उसके भीतर 'विद्या' के मानवीय गुणों (जैसे करुणा, प्रेम और नैतिकता) का होना अनिवार्य है।

4.31 वेशभूषा शालीन ही रखिए



पोशाक व्यक्ति के व्यक्तित्व का दर्पण होती है।" मानव सभ्यता के विकास में वेशभूषा का स्थान केवल शरीर को ढकने या मौसम से रक्षा करने तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह व्यक्ति के संस्कारों, उसकी मानसिक स्थिति और सामाजिक मूल्यों का भी प्रतिनिधित्व करता है। "वेश भूषा शालीन ही रखिए" यह सूत्र हमें जीवन में सादगी, मर्यादा और गरिमापूर्ण प्रस्तुतीकरण का पाठ पढ़ाता है। शालीनता का अर्थ किसी भी प्रकार के रूढ़िवादी बंधनों से नहीं, बल्कि एक ऐसे परिधान से है जो देखने वाले के मन में सम्मान का भाव जगाए और स्वयं पहनने वाले के भीतर गहरे आत्मविश्वास और आत्म-नियंत्रण का संचार करे।

प्रासंगिकता

आज के उपभोक्तावादी (Consumerist) और तीव्र गति से बदलते फैशन के दौर में इस विचार की प्रासंगिकता बहुत अधिक बढ़ गई है:

- दिखावे और मानसिक तनाव से मुक्ति: आज की युवा पीढ़ी ब्रांडेड और तड़क-भड़क वाले कपड़ों के सामाजिक दबाव (Peer Pressure) के कारण गंभीर मानसिक तनाव और हीनभावना (Inferiority Complex) का शिकार हो रही है। शालीन और सादगीपूर्ण वेशभूषा का विचार इस व्यर्थ की होड़ को समाप्त कर आंतरिक गुणों पर ध्यान केंद्रित करने की प्रेरणा देता है।
- व्यक्तित्व का वास्तविक मूल्यांकन: आधुनिक युग में यह भ्रांति फैल रही है कि महंगे या अंग-प्रदर्शन करने वाले कपड़े ही आधुनिकता की पहचान हैं। यह सूत्र याद दिलाता है कि व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसके कपड़ों की कीमत से नहीं, बल्कि उसकी बातचीत के सलीके, व्यवहार और बौद्धिक क्षमता से होती है।
- कार्यस्थल और सामाजिक मर्यादा की रक्षा: किसी भी संस्थान, विद्यालय या सामाजिक आयोजन की अपनी एक मर्यादा और गरिमा होती है। परिस्थिति के अनुकूल और शालीन वेशभूषा धारण करना उस स्थान के प्रति हमारे सम्मान और हमारी परिपक्वता को दर्शाता है।

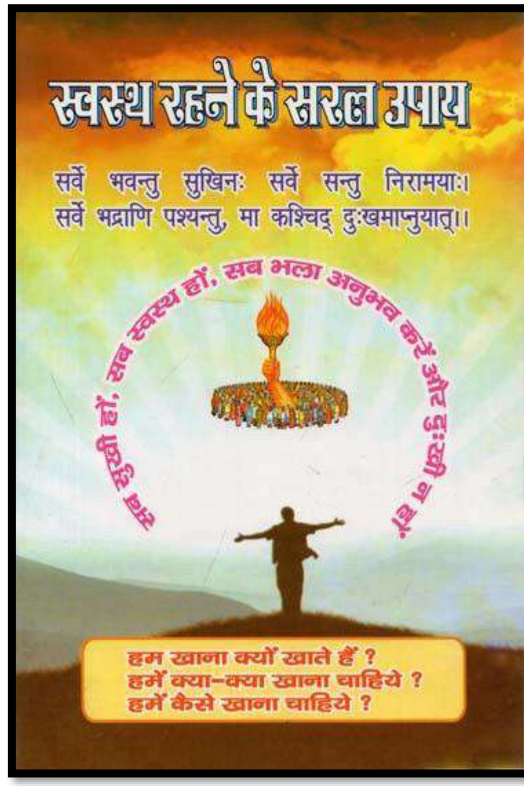
4.32 स्वस्थ रहने के सरल उपाय

"पहला सुख निरोगी काया" भारतीय जीवन दर्शन का एक मूल मंत्र है। जीवन के अन्य सभी सुख–चाहे वह धन हो, ज्ञान हो या रिश्ते–तभी भोगे जा सकते हैं जब व्यक्ति का शरीर और मन पूरी तरह स्वस्थ हो। "स्वस्थ रहने के सरल उपाय" विषय हमें यह याद दिलाता है कि अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए किसी बहुत खर्चीली व्यवस्था या जटिल चिकित्सा पद्धतियों की आवश्यकता नहीं होती। प्रकृति ने हमारे शरीर को इस तरह निर्मित किया है कि यदि हम अपनी दिनचर्या में कुछ बेहद साधारण, प्राकृतिक और व्यावहारिक बदलाव (जैसे शुद्ध जल, संतुलित आहार, पर्याप्त नींद और नियमित शारीरिक सक्रियता) कर लें, तो हम जीवनभर निरोगी रह सकते हैं। यह विषय महँगी दवाइयों के स्थान पर 'बचाव ही इलाज है' (Prevention is better than cure) के विचार पर आधारित है।

प्रासंगिकता

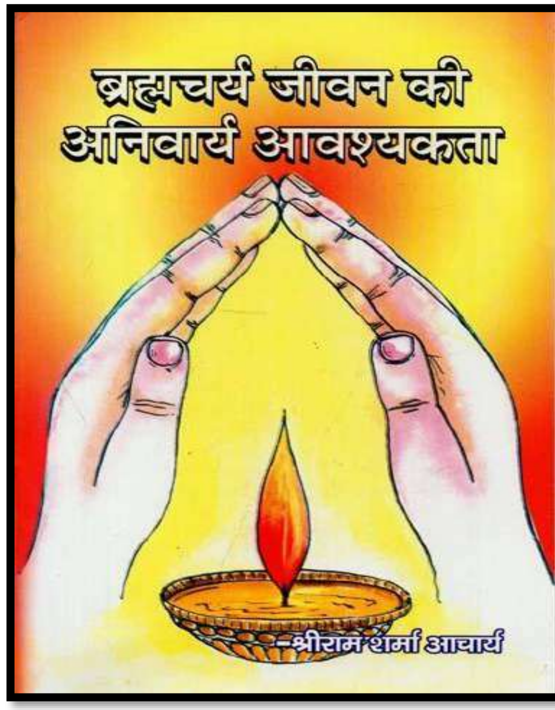
आज की 21वीं सदी के आधुनिक, शहरी और तकनीकी प्रधान समाज में इस विषय की प्रासंगिकता बहुत अधिक बढ़ गई है:

- आधुनिक बीमारियों (Lifestyle Diseases) का चक्रव्यूह: आज के दौर में मोटापा, मधुमेह (Diabetes), उच्च रक्तचाप (Hypertension) और कम उम्र में दिल के दौरे जैसी गंभीर बीमारियां किसी वायरस से नहीं, बल्कि अस्वस्थ जीवनशैली से फैल रही हैं। ऐसे में स्वस्थ रहने के सरल नियमों को अपनाना जीवन रक्षा के लिए अनिवार्य हो गया है।



- तनाव और अवसाद से मुक्ति: आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में लोग शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य भी खो रहे हैं। इस विषय के अंतर्गत आने वाले सरल उपाय (जैसे सुबह की सैर, प्राणायाम, और सकारात्मक सोच) मानसिक शांति और खुशहाली के लिए बेहद प्रासंगिक हैं।
- महँगे इलाज के बोझ से बचाव: आज चिकित्सा व्यवस्था अत्यंत खर्चीली हो चुकी है, जो आम परिवार के बजट को बिगाड़ देती है। स्वस्थ रहने के सरल उपायों का पालन करके व्यक्ति न केवल बीमारियों से बचता है, बल्कि आर्थिक रूप से भी सुरक्षित रहता है।

4.33 ब्रह्मचर्य जीवन की अनिवार्य आवश्यकता



भारतीय जीवन दर्शन और वैदिक सनातन परंपरा में मानव जीवन को व्यवस्थित करने के लिए चार आश्रमों की व्यवस्था की गई है, जिसमें सबसे पहला और बुनियादी आश्रम **"ब्रह्मचर्य आश्रम"** है। 'ब्रह्मचर्य' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है–'ब्रह्म' (ज्ञान, सर्वोच्च चेतना या परमात्मा) और 'चर्य' (विहार करना या उस मार्ग पर चलना)। व्यावहारिक रूप से इसका अर्थ अपनी समस्त इंद्रियों, मन, विचारों और शारीरिक ऊर्जा (वीर्य बल) पर पूर्ण नियंत्रण रखना है। यह केवल शारीरिक संयम तक सीमित नहीं है, बल्कि मानसिक पवित्रता और ऊर्जा के ऊर्ध्वगमन (Energy Channelization) का विज्ञान है। यह विषय स्पष्ट करता है कि ब्रह्मचर्य जीवन का कोई रूढ़िवादी बंधन नहीं, बल्कि मानव व्यक्तित्व के उत्कृष्ट विकास के लिए एक अनिवार्य और वैज्ञानिक आवश्यकता है।

प्रासंगिकता

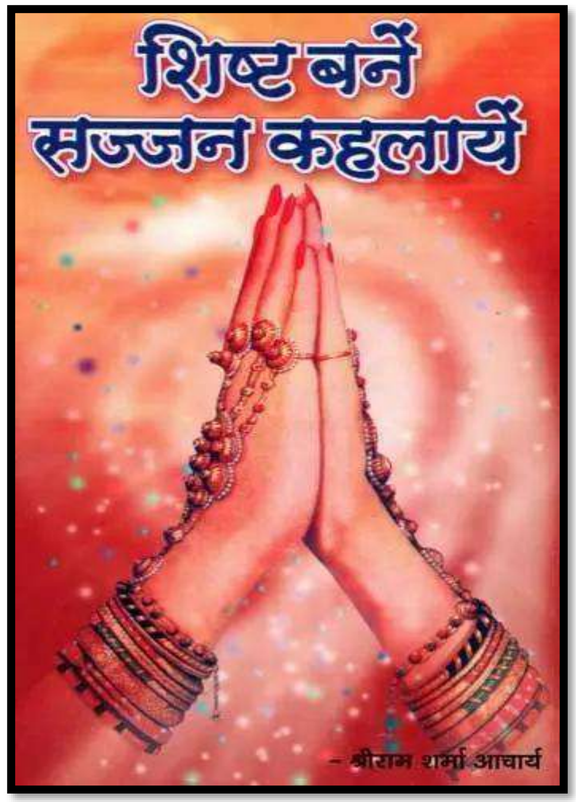
आज के इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और अत्यधिक उद्दीपन (Hyper-stimulation) वाले आधुनिक समाज में इस विषय की प्रासंगिकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है:

- **मानसिक भटकाव और अश्लीलता (Digital Distraction) से मुक्ति:** आज स्मार्टफोन और इंटरनेट की सुलभता के कारण युवा पीढ़ी अनजाने में ही अश्लील व उत्तेजक सामग्रियों के जाल में फंसकर अपनी कीमती मानसिक और शारीरिक ऊर्जा को नष्ट कर रही है। ऐसे समय में विचारों की पवित्रता और ब्रह्मचर्य का सिद्धांत युवाओं को इस भटकाव से बचाने का एकमात्र सशक्त कवच है।
- **इच्छाशक्ति (Willpower) और एकाग्रता का संकट:** वर्तमान पीढ़ी में अवसाद, एकाग्रता की कमी (Low Attention Span), और बहुत जल्दी धैर्य खो देने की

प्रवृत्ति देखी जा रही है। ब्रह्मचर्य का पालन व्यक्ति की इच्छाशक्ति को फौलादी बनाता है और मानसिक फोकस को असाधारण रूप से बढ़ाता है।

- **शारीरिक व ओजस्वी स्वास्थ्य की रक्षा:** आज कम उम्र में ही युवाओं का शरीर कांतिहीन और शिथिल हो रहा है। ब्रह्मचर्य के माध्यम से शारीरिक धातुओं की रक्षा होती है, जिससे चेहरे पर ओज, शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) और व्यक्तित्व में एक स्वाभाविक आकर्षण (Magnetism) पैदा होता है।

4.34 शिष्ट बनें सज्जन कहलायें



"विद्या ददाति विनयं" अर्थात सच्ची विद्या मनुष्य को विनम्र और शिष्ट बनाती है। मानव समाज में किसी भी व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसके धन, पद या डिग्रियों से नहीं, बल्कि उसके व्यवहार, वाणी और आचरण की शिष्टता से होती है। "शिष्ट बनें सज्जन कहलायें" यह सूत्र हमें जीवन में सदाचार, शिष्टाचार (Etiquette) और भद्रता को अपनाने की प्रेरणा देता है। 'शिष्ट' होने का अर्थ है सामाजिक नियमों, बड़ों के प्रति आदर और छोटों के प्रति स्नेह का व्यावहारिक प्रदर्शन करना। जब यह शिष्टता किसी के स्वभाव का स्थायी हिस्सा बन जाती है, तब समाज उसे स्वतः ही 'सज्जन' (एक श्रेष्ठ और भला मानस) की उपाधि से अलंकृत करता है। यह विषय मानव को पशुता से मनुष्यता की ओर ले जाने का बुनियादी प्रवेश द्वार है।

प्रासंगिकता

आज के अत्यधिक प्रतिस्पर्धी, व्यावसायिक और सोशल मीडिया प्रधान समाज में इस विचार की प्रासंगिकता बहुत अधिक बढ़ गई है:

- बढ़ती आक्रामकता और असहिष्णुता का समाधान: आज के दौर में लोगों में धैर्य की कमी, गुस्सा, रोड रेज (Road Rage) और आपसी बातचीत में अभद्रता तेजी से बढ़ रही है। ऐसे समय में शिष्टाचार का यह सिद्धांत समाज में शांति और सौहार्द बनाए रखने के लिए बेहद जरूरी है।
- डिजिटल शिष्टाचार (Netiquette) की आवश्यकता: आज इंटरनेट और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर लोग वैचारिक मतभेदों के कारण एक-दूसरे के खिलाफ अभद्र भाषा और ट्रोलिंग का सहारा लेते हैं। यह सूत्र याद दिलाता है कि चाहे आभासी (Virtual) जीवन हो या वास्तविक, अपनी शिष्टता और मर्यादा को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।
- व्यावसायिक सफलता (Professional Success): आज के कॉर्पोरेट जगत में केवल तकनीकी ज्ञान (Hard Skills) काफी नहीं है। सॉफ्ट स्किल्स (Soft Skills) जैसे– दूसरों से बात करने का सलीका, टीम में काम करने की कला और कार्यस्थल पर

पंचम अध्याय

बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का योगदान

5.1 बाल शिक्षा के उद्देश्यों का विश्लेषण

5. 2 बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास का विश्लेषण

5.3 परिवार आधारित संस्कार निर्माण मॉडल

5.4 विद्यालय आधारित संस्कार निर्माण मॉडल

5.5 बाल संस्कार शालाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

पंचम अध्याय

बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का योगदान

5.1 बाल शिक्षा के उद्देश्यों का विश्लेषण (Analysis of Objectives)

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार बाल शिक्षा के उद्देश्यों को हम निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं के अंतर्गत विश्लेषित कर सकते हैं:

1. संस्कार निर्माण एवं नैतिक विकास (Sanskara & Moral Development)

आचार्य जी का स्पष्ट मत था कि शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य बालक में सद्गुणों (जैसे- ईमानदारी, सेवाभाव, दया, और अनुशासन) का बीजारोपण करना होना चाहिए।

- **वैचारिक शुद्धता:** बालपन में अवचेतन मन (Subconscious mind) सबसे अधिक ग्रहणशील होता है। इस अवस्था में दिए गए अच्छे संस्कार जीवनभर अमिट रहते हैं।
- **कुसंस्कारों का निवारण:** शिक्षा ऐसी हो जो बालक को समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वासों और बुरी आदतों से दूर रख सके।

2. 'मनुष्य निर्माण' एवं सर्वांगीण विकास (Holistic Development)

उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति को केवल 'साक्षर' न बनाए, बल्कि एक 'सच्चा मनुष्य' बनाए। इसमें बालक के व्यक्तित्व के चार आयामों का विकास शामिल है:

- शारीरिक विकास: योग, प्राणायाम और संयमित दिनचर्या के माध्यम से बलवान और स्वस्थ शरीर का निर्माण।
- मानसिक विकास: विवेक, निर्णय क्षमता और रचनात्मक सोच (Creative thinking) को जागृत करना।
- आत्मिक विकास: आत्मा के गौरव को पहचानना और उच्च मानवीय मूल्यों को अपनाना।

3. स्वावलंबन और व्यावहारिक कुशलता (Self-Reliance & Practical Skills)

आचार्य जी केवल सैद्धांतिक शिक्षा के विरोधी थे। उनका मानना था कि बाल शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य बालक को आत्मनिर्भर बनाना है।

- श्रम के प्रति निष्ठा: बालकों में बचपन से ही अपने कार्य स्वयं करने और शारीरिक श्रम का सम्मान करने की आदत डालना।
- कुटीर उद्योग व कौशल: शिक्षा के साथ-साथ लघु शिल्पों या व्यावहारिक कौशलों (Skills) का ज्ञान देना, ताकि भविष्य में वे आर्थिक रूप से किसी पर निर्भर न रहें।

4. सामाजिक उत्तरदायित्व और 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना

बालक समाज का एक हिस्सा है, इसलिए शिक्षा का उद्देश्य उसे एक जिम्मेदार नागरिक बनाना है।

- सेवा भावना: शिक्षा के माध्यम से बालकों में यह भाव जगाना कि उनका जीवन केवल उनके व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि समाज के कल्याण के लिए भी है।
- राष्ट्र प्रेम: देश की संस्कृति, गौरव और गौरवशाली इतिहास के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करना।

5. अभिभावकों और समाज का शैक्षिक उत्तरदायित्व

आचार्य जी ने बाल शिक्षा के उद्देश्यों में परिवार (विशेषकर माता) की भूमिका को सर्वोपरि माना।

- प्रथम पाठशाला के रूप में परिवार: माता-पिता को केवल फीस देने वाला न मानकर, बालक का प्रथम शिक्षक (संस्कार प्रदाता) बनाना।
- अनुकरण द्वारा शिक्षा: बालक उपदेशों से नहीं, बल्कि बड़ों के आचरण को देखकर सीखता है। इसलिए पारिवारिक वातावरण को सुसंस्कृत बनाना भी इस शिक्षा व्यवस्था का एक परोक्ष उद्देश्य है।

5. 2 बालकों में नैतिक मूल्यों के विकास का विश्लेषण

आचार्य जी ने नैतिक मूल्यों के विकास को केवल उपदेशों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे व्यावहारिक और मनोवैज्ञानिक धरातल पर प्रस्तुत किया। इसके मुख्य आयाम निम्नलिखित हैं:

1. अवचेतन मन का परिष्कार (Refinement of Subconscious Mind)

मनोविज्ञान और अध्यात्म के ज्ञाता होने के नाते आचार्य जी जानते थे कि बाल्यावस्था में अवचेतन मन सबसे अधिक सक्रिय होता है।

- संस्कार संक्रमण: इस आयु में बालक जो कुछ देखता और सुनता है, वह उसके भीतर गहरे बैठ जाता है। इसलिए नैतिक मूल्यों के विकास के लिए प्रारंभिक 5 से 12 वर्ष की आयु को सबसे महत्वपूर्ण माना गया है।
- सद्साहित्य का प्रभाव: बालकों को महापुरुषों, वैज्ञानिकों और संतों की प्रेरक कहानियाँ पढ़ाना और सुनाना ताकि उनके अवचेतन में ईमानदारी, साहस और त्याग के बीज बोए जा सकें।

2. 'उपदेश नहीं, आचरण' का सिद्धांत (Example is better than Precept)

आचार्य जी का सबसे बड़ा सूत्र था–"हम बदलेंगे, युग बदलेगा।" यही नियम बाल शिक्षा पर भी लागू होता है।

- अभिभावकों और शिक्षकों का रोल मॉडल होना: बालक अनुकरण (Imitation) से सीखता है। यदि माता-पिता घर में झूठ बोलते हैं या शिक्षक स्कूल में अनुशासनहीन हैं, तो वे बालक को नैतिकता नहीं सिखा सकते।
- पारिवारिक वातावरण: घर का वातावरण स्नेह, सहयोग और आपसी सम्मान से युक्त होना चाहिए, जिससे बालक स्वाभाविक रूप से इन मूल्यों को आत्मसात कर सके।

3. युग निर्माण योजना के अंतर्गत मुख्य नैतिक मूल्य

आचार्य जी ने कुछ विशिष्ट नैतिक मूल्यों पर सबसे अधिक बल दिया, जिन्हें बालकों के चरित्र का हिस्सा बनाया जाना चाहिए:

- आत्मनिर्भरता और श्रमशीलता (Self-reliance): अपना काम स्वयं करना, शारीरिक श्रम को हीन न समझना।
- संयम (Self-Control): इंद्रिय संयम (जैसे- जीभ का संयम/सात्विक आहार) और समय का संयम (नियमित दिनचर्या)।
- सच्चाई और ईमानदारी (Integrity): विपरीत परिस्थितियों में भी सत्य का साथ न छोड़ना।
- कृतज्ञता (Gratitude): माता-पिता, गुरु, समाज और प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने की आदत।

नैतिक मूल्यों के विकास की व्यावहारिक विधियाँ (Methodology)

आचार्य जी द्वारा स्थापित 'गायत्री परिवार' और 'युग निर्माण योजना' के अंतर्गत बालकों में नैतिकता के विकास के लिए निम्नलिखित व्यावहारिक प्रयोग सुझाए गए हैं, जिन्हें आप शोध में शामिल कर सकते हैं:

1. **बाल संस्कार शालाएँ (Bal Sanskar Shalas)**

यह आचार्य जी के विचारों का एक अत्यंत व्यावहारिक रूप है। विद्यालयों के अतिरिक्त साप्ताहिक रूप से 'बाल संस्कार शालाओं' का संचालन किया जाता है, जहाँ: खेल-खेल में नैतिक शिक्षा दी जाती है।

महापुरुषों के प्रसंगों पर आधारित नाटक (Drama) और रोल-प्ले करवाए जाते हैं।

2. **देव संस्कृति और भारतीय संस्कृति से जुड़ाव**

- मंत्र और प्रार्थना का मनोवैज्ञानिक लाभ: गायत्री मंत्र या लघु प्रार्थनाओं के माध्यम से बालकों के मस्तिष्क की कोशिकाओं (Brain cells) को जागृत करना, जिससे उनमें 'सद्बुद्धि' का विकास हो।
- पर्व और त्योहारों का सही अर्थ समझना: त्योहारों को केवल मनोरंजन न मानकर उनके पीछे छिपे नैतिक और सामाजिक संदेशों से बच्चों को अवगत कराना।

3. **डायरी लेखन की आदत (Self-Introspection)**

आचार्य जी ने आत्म-समीक्षा पर बहुत बल दिया। बालकों को बचपन से ही एक छोटी डायरी रखने के लिए प्रेरित करना, जिसमें वे रोज़ लिखें कि:

आज उन्होंने क्या अच्छा काम किया?

आज उनसे क्या भूल हुई और वे उसे कल कैसे सुधारेंगे?

5.3 परिवार आधारित संस्कार निर्माण मॉडल

आचार्य जी ने परिवार को केवल एक जैविक या आर्थिक इकाई नहीं माना, बल्कि उसे "संस्कारों की पहली प्रयोगशाला" कहा है। इस मॉडल के तीन मुख्य आयाम हैं:

1. **माता: प्रथम और सर्वश्रेष्ठ गुरु (The Mother's Role)**

आचार्य जी ने बाल निर्माण में माता की भूमिका को पिता और शिक्षक से भी ऊपर रखा है।

- गर्भ संस्कार (Prenatal Samskara): संस्कार निर्माण की प्रक्रिया जन्म के बाद नहीं, बल्कि गर्भकाल से ही शुरू हो जाती है। गर्भावस्था के दौरान माता का चिंतन, आहार, और स्वाध्याय (अच्छी पुस्तकें पढ़ना) शिशु के मूल स्वभाव का निर्माण करता है।
- शिशु काल का अनुकरण: जीवन के प्रारंभिक 5 वर्षों में बच्चा अपनी माँ की भाषा, व्यवहार, और प्रतिक्रियाओं को गहराई से देखता है और उन्हें ही अपना स्वभाव बना लेता है।

2. **वातावरण का निर्माण: 'गृहस्थ एक तपोवन'**

आचार्य जी के अनुसार, यदि घर का वातावरण कलह, ईर्ष्या, और भौतिक लिप्सा (लालच) से भरा है, तो आप बच्चे को चाहे जितने उपदेश दे दें, वह सुसंस्कृत नहीं बन सकता।

- पारिवारिक संवाद: घर में अपशब्दों के स्थान पर शालीन और सम्मानजनक भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

- अनावश्यक लाड-प्यार का निषेध: आचार्य जी "अति लाड" को बालक के भविष्य के लिए विष मानते थे। उनके अनुसार, प्रेम में अनुशासन का होना अनिवार्य है।

3. **'उपदेश नहीं, उदाहरण' (Lead by Example)**

इस मॉडल का सबसे बड़ा सिद्धांत यह है कि बच्चे वह नहीं करते जो उन्हें कहा जाता है, बल्कि वे वह करते हैं जो अपने बड़ों को करते हुए देखते हैं। यदि माता-पिता चाहते हैं कि बच्चा ईमानदार बने, तो उन्हें स्वयं अपने दैनिक जीवन में प्रामाणिक होना पड़ेगा।

पारिवारिक मॉडल के व्यावहारिक व्यावहारिक अनुप्रयोग (Practical Applications)

आचार्य जी ने इस मॉडल को केवल वैचारिक नहीं रखा, बल्कि इसे हर परिवार में लागू करने के लिए 'युग निर्माण योजना' के तहत कुछ बेहद व्यावहारिक नियम और सूत्र दिए, जिन्हें आप अपने शोध में 'क्रियान्वयन पक्ष' (Implementation) के रूप में लिख सकते हैं:

1. **'बलिवैश्वदेव' और सामूहिक भोजन (Family Bonding)**

- भोजन केवल शरीर पोषण का साधन नहीं है, बल्कि वह विचारों को भी प्रभावित करता है ("जैसा अन्न, वैसा मन")।
- परिवार के सभी सदस्य दिन में कम से कम एक बार एक साथ बैठकर भोजन करें। भोजन शांत और प्रसन्न मन से, ईश्वर को धन्यवाद देकर (मंत्र बोलकर) किया जाए। इससे बच्चों में कृतज्ञता का भाव आता है।

2. **पारिवारिक उपासना और 'आरती' (Spiritual Grounding)**

- घर में एक छोटा सा उपासना स्थल हो, जहाँ सुबह या शाम को पूरा परिवार 10-15 मिनट के लिए एक साथ बैठे।
- सामूहिक प्रार्थना या गायत्री मंत्र के उच्चारण से घर का वातावरण सकारात्मक होता है, जिससे बच्चों में मानसिक एकाग्रता और आंतरिक शांति का विकास होता है।

3. **'स्वाध्याय' की परंपरा (Habit of Reading)**

- घर में टेलीविजन या मोबाइल के अत्यधिक उपयोग के स्थान पर 'सद्साहित्य' (महापुरुषों की जीवनियाँ, नैतिक कहानियाँ) पढ़ने की संस्कृति हो।

- सप्ताह में एक दिन "पारिवारिक गोष्ठी" हो, जिसमें किसी नैतिक विषय पर चर्चा की जाए और बच्चे अपने विचार रखें।

4. **श्रम और सादगी (Simplicity & Labor)**

- बच्चों को बचपन से ही अपने व्यक्तिगत कार्य (जैसे- अपने कपड़े संभालना, बिस्तर ठीक करना, बर्तन उठाना) स्वयं करने के लिए प्रेरित किया जाए।
- घर का रहन-सहन सादगीपूर्ण हो ताकि बच्चों में अत्यधिक भौतिकता या दिखावे की बीमारी न पनपे।

मॉडल का विश्लेषणात्मक महत्व

- मनोवैज्ञानिक विश्लेषण (Psychological Link): आधुनिक मनोविज्ञान (Modern Psychology) भी मानता है कि बच्चे के व्यक्तित्व का 80% विकास उसके शुरुआती 6 वर्षों में घर पर होता है। आचार्य जी ने इसी सिद्धांत को अध्यात्म और भारतीय संस्कृति के समन्वय के साथ बहुत पहले प्रतिपादित कर दिया था।
- वर्तमान प्रासंगिकता: आज के एकल परिवारों (Nuclear Families) में जहाँ माता-पिता दोनों कामकाजी हैं और बच्चे स्क्रीन्स (Mobility/TV) के भरोसे जी रहे हैं, वहाँ आचार्य जी का यह मॉडल बच्चों को डिप्रेशन, एकाकीपन और नैतिक भटकाव से बचाने का एकमात्र व्यावहारिक उपाय है।

5.4 विद्यालय आधारित संस्कार निर्माण मॉडल

आचार्य जी ने विद्यालयी वातावरण को संस्कारवान बनाने के लिए तीन मुख्य घटकों पर सबसे अधिक बल दिया है:

1. शिक्षक: 'आचार्य' के रूप में (Teacher as a Role Model)

आचार्य जी ने शिक्षक को केवल एक वेतनभोगी कर्मचारी नहीं, बल्कि राष्ट्र का भाग्य विधाता माना है।

- उपदेश नहीं, आचरण: शिक्षक का अपना जीवन अनुकरणीय होना चाहिए। यदि शिक्षक स्वयं व्यसनमुक्त, समय का पाबंद और शालीन है, तो विद्यार्थी बिना कहे उन गुणों को अपना लेंगे।

- अपनत्व और संवेदनशीलता: शिक्षक और छात्र का संबंध केवल व्यावसायिक न होकर गौरवशाली गुरु-शिष्य परंपरा जैसा आत्मीय होना चाहिए, जहाँ शिक्षक छात्र के केवल बौद्धिक विकास की नहीं, बल्कि उसके चरित्र की भी चिंता करे।

2. विद्यालय का वातावरण: 'गुरुकुल' की जीवंतता (School Environment)

विद्यालय का भौतिक और मानसिक वातावरण ऐसा हो जो स्वतः ही सादगी और उच्च विचारों को प्रेरित करे।

- सकारात्मक ऊर्जा: विद्यालय की शुरुआत सामूहिक प्रार्थना, ध्यान या गायत्री मंत्र के लघु उच्चारण से हो, जो छात्रों के मस्तिष्क को शांत और एकाग्र करे।
- सद्वाक्य लेखन: विद्यालय की दीवारों पर महापुरुषों के प्रेरक विचार और सूक्तियाँ लिखी हों, जो छात्रों के अवचेतन मन को लगातार प्रेरित करती रहें।

3. पाठ्यक्रम में जीवन-विद्या का समावेश (Value-Integrated Curriculum)

आचार्य जी वर्तमान शिक्षा पद्धति के इस दोष के कड़े विरोधी थे कि यह केवल 'आजीविका' (Livelihood) सिखाती है, 'जीवन जीना' (Life Skills) नहीं।

- इतिहास और संस्कृति का गौरव: पाठ्यक्रम में देश के वास्तविक नायकों, वैज्ञानिकों और संतों की जीवनियाँ शामिल हों, जिससे बच्चों में आत्मगौरव और राष्ट्रप्रेम जागे।
- विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय: विज्ञान को अध्यात्म (नैतिकता) से जोड़ा जाए ताकि छात्र तकनीकी रूप से सक्षम होने के साथ-साथ संवेदनशील इंसान भी बनें।

4. विद्यालय मॉडल के व्यावहारिक क्रियान्वयन घटक (Practical Tools)

इस मॉडल को धरातल पर उतारने के लिए आचार्य जी और उनकी 'युग निर्माण योजना' ने कुछ बेहद अनूठे और व्यावहारिक प्रयोग दिए हैं, जिन्हें विद्यालयों में लागू किया जा सकता है:

1. बाल संस्कार शाला और 'सदाचार अंक' (Weekly Value Classes)

विद्यालयों में नियमित विषयों के साथ-साथ साप्ताहिक रूप से 'बाल संस्कार शाला' के सत्र हों, जहाँ कहानियों, नाटकों और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को ईमानदारी, सहयोग और संयम का पाठ पढ़ाया जाए।

परीक्षाओं में केवल शैक्षणिक विषयों के नंबर न हों, बल्कि छात्र के व्यवहार, अनुशासन और सेवाभाव के लिए 'सदाचार अंक' या 'संस्कार ग्रेडिंग' की व्यवस्था हो।

2. श्रमदान और स्वावलंबन (Dignity of Labor)

विद्यालयों में छात्रों से छोटे-मोटे सामूहिक कार्य करवाए जाएँ, जैसे–अपनी कक्षा की सफाई करना, विद्यालय के उद्यान (Garden) की देखरेख करना या वृक्षारोपण करना।

इससे बच्चों के मन से काम का छोटा-बड़ा होने का अहंकार समाप्त होता है और सामाजिक समरसता बढ़ती है।

3. 'ईमानदारी की दुकान' का अनूठा प्रयोग (Honesty Box)

विद्यालय परिसर में एक ऐसी दुकान या काउंटर हो जहाँ स्टेशनरी (पेंसिल, कटर, कॉपी) रखी हो और उनकी कीमतें लिखी हों, लेकिन वहाँ कोई दुकानदार न हो। छात्र अपनी जरूरत का सामान लें और ईमानदारी से पैसे बॉक्स में डाल दें।

यह प्रयोग बच्चों में 'प्रामाणिकता' (Integrity) के गुण को व्यावहारिक रूप से जाँचने और विकसित करने का बेहतरीन माध्यम है।

4. सामूहिक देव-पूजन और मातृ-पितृ दिवस

विद्यालयों में समय-समय पर ऐसे सांस्कृतिक आयोजन हों जहाँ छात्र अपने माता-पिता को आमंत्रित करें और उनका सम्मान करें। इससे पारिवारिक जुड़ाव और बड़ों के प्रति आदर की भावना सुदृढ़ होती है।

विश्लेषणात्मक महत्व

- सर्वांगीण प्रगति (Holistic Growth): आधुनिक शिक्षा शास्त्री जहाँ आज "Social-Emotional Learning (SEL)" की बात कर रहे हैं, आचार्य जी ने दशकों पहले 'भाव परिष्कार' और 'संस्कार निर्माण' के माध्यम से इसी मॉडल का खाका खींच दिया था।
- विद्यार्थी जीवन के संकटों का समाधान: वर्तमान में छात्रों में बढ़ता तनाव, अवसाद (Depression), एकाकीपन और परीक्षाओं का डर जैसी समस्याओं का एकमात्र समाधान आचार्य जी का यह मॉडल है, जो छात्र को आंतरिक रूप से मजबूत बनाता है।

5.5 बाल संस्कार शालाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन (Bal Sanskar Shala Model)

बाल संस्कार शालाएँ आचार्य जी के 'लोक-शिक्षण' (Mass Education) दर्शन का सबसे व्यावहारिक उदाहरण हैं। यह मॉडल पूरी तरह निशुल्क, स्वैच्छिक (Voluntary), और समुदाय-आधारित है।

क) कार्यपद्धति और संरचना (Structure)

समय और स्थान: यह शालाएँ सामान्यतः सप्ताह में एक बार (रविवार को) या प्रतिदिन शाम को 1 से २ घंटे के लिए स्थानीय मोहल्लों, पार्कों, घरों या मंदिरों में संचालित होती हैं। इसके लिए किसी बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर की आवश्यकता नहीं होती।

लचीला पाठ्यक्रम: इसमें खेल-कूद, संगीत, नाटक और कहानी विधाओं का उपयोग करके बच्चों को अनौपचारिक रूप से नैतिक मूल्य सिखाए जाते हैं।

ख) बाल संस्कार शाला के मुख्य शिक्षण घटक (Core Curriculum Components)

शोध की दृष्टि से इसके पाठ्यक्रम को चार प्रमुख श्रेणियों में विश्लेषित किया जा सकता है:

शिक्षण घटक	व्यावहारिक क्रियान्वयन (What is taught)	मनोवैज्ञानिक/शैक्षणिक प्रभाव
१. शारीरिक स्वास्थ्य	योग, आसन, प्राणायाम और स्वच्छता के नियम।	बच्चों में आरोग्यता, अनुशासन और सात्विक जीवन शैली का विकास।
२. मानसिक परिष्कार	गायत्री मंत्र का सामूहिक उच्चारण, लघु ध्यान (Meditation), और एकाग्रता के खेल।	मस्तिष्क की कार्यक्षमता (IQ) बढ़ाना और मानसिक तनाव/चंचलता को शांत करना।
३. भाव परिष्कार	महापुरुषों, राष्ट्रभक्तों और वैज्ञानिकों के प्रेरक प्रसंग (Storytelling)।	बच्चों के अवचेतन मन में साहस, प्रामाणिकता और दयाभाव के बीज बोना।
४. सामाजिक चेतना	बड़ों का सम्मान (चरण स्पर्श की परंपरा), पर्यावरण संरक्षण (पौधे लगाना), और सादगी।	बच्चों को संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिक बनाना।

संस्थानिक प्रयास: शांतिकुंज और युग निर्माण योजना की भूमिका

आचार्य जी ने अपने विचारों को केवल कागजों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्हें क्रियान्वित करने के लिए 'शांतिकुंज, हरिद्वार' और 'युग निर्माण योजना, मथुरा' जैसे सशक्त संस्थानों की स्थापना की। बाल शिक्षा के क्षेत्र में इन संस्थानों के प्रयास निम्नलिखित हैं:

क) शिक्षक/परिव्राजक प्रशिक्षण (Teacher Training Programs)

संस्थान द्वारा देश-विदेश से आने वाले युवाओं, गृहस्थों और सेवाभावी नागरिकों के लिए नियमित रूप से 'बाल संस्कार शाला प्रबंधन प्रशिक्षण' शिविर आयोजित किए जाते हैं।

यहाँ सिखाया जाता है कि आधुनिक मनोविज्ञान (Child Psychology) और प्राचीन भारतीय संस्कृति के समन्वय से बच्चों से कैसे आत्मीय संबंध स्थापित किया जाए।

ख) बाल साहित्य का विपुल सृजन (Publication of Child Literature)

संस्थान ने बालकों के लिए अत्यंत सुलभ, रंगीन और प्रभावी साहित्य का निर्माण किया है, जो शोध के लिए प्राथमिक स्रोत (Primary Source) हैं:

बाल निर्माण की कहानियाँ: सैकड़ों लघु पुस्तिकाओं की श्रृंखला जिसमें पंचतंत्र, जातक कथाओं और इतिहास के प्रेरक प्रसंगों को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है।

बाल पॉकेट बुक्स: व्यसन मुक्ति, समय प्रबंधन (Time Management) और स्वावलंबन जैसे विषयों पर व्यावहारिक मार्गदर्शिकाएँ।

ग) देव संस्कृति विश्वविद्यालय (DSVV) का अकादमिक योगदान

आचार्य जी द्वारा प्रेरित इस विश्वविद्यालय में 'बाल शिक्षा' और 'संस्कार चेतना' पर उच्च स्तरीय शोध (Research) किए जाते हैं।

शिक्षा स्नातक (B.Ed.) और अन्य कोर्सेज में मूल्य-आधारित शिक्षा (Value Education) के व्यावहारिक प्रतिमान (Models) तैयार किए जाते हैं।

विश्लेषणात्मक निष्कर्ष

- पूरक शिक्षा मॉडल (Supplementary Education Model): बाल संस्कार शाला आधुनिक स्कूली शिक्षा की विरोधी नहीं, बल्कि उसकी पूरक (Complementary) है। स्कूल जहाँ बच्चों को 'Degree' और 'Skills' देते हैं, वहीं यह शालाएँ उन्हें 'Character' (चरित्र) देती हैं।
- कम्यूनिटी ओनरशिप (Community Ownership): यह मॉडल सिद्ध करता है कि बिना किसी सरकारी बजट या भारी-भरकम फीस के भी, केवल समाज के प्रबुद्ध लोगों के अंशदान और समयदान से देश के हर कोने में बच्चों का भविष्य सुधारा जा सकता है।

षष्ठ अध्याय

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

6.1 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की प्रमुख चुनौतियाँ

6.2 मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता

6.3 NEP 2020 और आचार्य जी के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण

6.4 विद्यालयी शिक्षा में प्रयोग की प्रमुख संभावनाएँ

6.5 समावेशी शिक्षा में योगदान

6.6 जीवनोपयोगी शिक्षा में योगदान

6.7 शिक्षक प्रशिक्षण में आचार्य जी के विचारों की उपयोगिता

षष्ठ अध्याय

वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

6.1 वर्तमान शिक्षा प्रणाली की प्रमुख चुनौतियाँ

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था जहाँ तकनीकी और आर्थिक दृष्टि से उन्नत दिखाई देती है, वहीं मानवीय और व्यावहारिक धरातल पर कई गंभीर संकटों से जूझ रही है। इन्हें हम निम्नलिखित बिंदुओं में वर्गीकृत कर सकते हैं:

1. साक्षरता और विद्या में अंतर का संकट (Information vs. Wisdom)

आज की शिक्षा प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यह है कि यह केवल **'साक्षरता' (Literacy)** और सूचनाओं के आदान-पदान पर केंद्रित है, **'विद्या' (Wisdom)** पर नहीं।

- **तथ्यों का अंबार:** पाठ्यक्रम इस तरह तैयार किए गए हैं जो छात्र के दिमाग को केवल सूचनाओं (Data/Information) से भर देते हैं।
- **बोध का अभाव:** आचार्य जी के शब्दों में–*"शिक्षा वह है जो मनुष्य को सोचना सिखाए, केवल रटना नहीं।"* वर्तमान व्यवस्था छात्रों को कुशल रोबोट या कर्मचारी तो बना रही है, लेकिन उन्हें संवेदनशील और विचारवान मनुष्य नहीं बना पा रही है।

2. नैतिक पतन और चरित्र निर्माण की उपेक्षा (Crisis of Character)

आधुनिक पाठ्यक्रम में बौद्धिक क्षमता (IQ) को मापने के तो पैमाने हैं, लेकिन नैतिक सूचकांक (Moral Quotient) पूरी तरह गायब है।

- **चतुर अपराधियों का निर्माण:** शिक्षा का उद्देश्य केवल करियर और पैसा कमाना रह गया है। इसका परिणाम यह है कि समाज में उच्च शिक्षित वर्ग के भीतर भी भ्रष्टाचार, अपराध और अनैतिकता तेजी से बढ़ रही है।

- **संस्कारों का लोप:** विद्यालयों में केवल 'अक्षर ज्ञान' दिया जा रहा है, जिससे जीवन-मूल्य जैसे–ईमानदारी, सेवा, और सहअस्तित्व की भावना पीछे छूट गई है।

3. मानसिक स्वास्थ्य का संकट और अत्यधिक प्रतिस्पर्धा (Mental Health Crisis)

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने छात्रों के जीवन को एक अंतहीन दौड़ (Rat Race) में बदल दिया है।

- **अवसाद और तनाव (Depression & Anxiety):** अंकों (Marks) और ग्रेड्स की अंधी दौड़ के कारण स्कूली बच्चों से लेकर उच्च शिक्षा के छात्रों में अवसाद, तनाव और आत्महत्या की प्रवृत्तियाँ खतरनाक स्तर तक बढ़ गई हैं।
- **एकाकीपन (Isolation):** सामूहिक विकास के स्थान पर अत्यधिक व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा (Individual Competition) ने बच्चों को आत्मकेंद्रित और स्वार्थी बना दिया है।

4. आजीविकापरक शिक्षा बनाम जीवन-विद्या (Livelihood vs. Art of Living)

आज की शिक्षा व्यक्ति को **'पेट पालना'** तो सिखाती है, लेकिन **'जीवन जीना'** नहीं सिखाती।

- **कौशल और स्वावलंबन का अभाव:** डिग्री होने के बावजूद युवा व्यावहारिक जीवन की छोटी-मोटी समस्याओं को हल करने में असमर्थ हैं। शारीरिक श्रम के प्रति उनके मन में हीनभावना (Disrespect for manual labor) घर कर गई है।
- **बेरोजगारी और असंतोष:** शिक्षा रोजगार की गारंटी नहीं दे पा रही है, जिससे युवाओं में भारी कुंठा और सामाजिक असंतोष का जन्म हो रहा है।

5. पारिवारिक और सामाजिक अलगाव (Breakdown of Family Values)

आधुनिक पश्चिमीकरण से प्रभावित शिक्षा छात्रों को अपनी जड़ों, संस्कृति और परिवार से दूर कर रही है।

- **एकल परिवारों का कुप्रभाव:** माता-पिता और बड़ों के प्रति आदर का भाव कम हो रहा है। बच्चे समाज और देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भूलकर केवल अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता में ही सिमटते जा रहे हैं।

6.2 मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता

1. मानवीय संवेदनाओं एवं आंतरिक परिष्कार हेतु (Refinement of Human Sentiments)

आधुनिक शिक्षा व्यक्ति को कुशल, तार्किक और बौद्धिक तो बनाती है, लेकिन उसमें संवेदनशीलता का अभाव छोड़ देती है।

- **सहानुभूति और करुणा:** मूल्य आधारित शिक्षा छात्रों में दूसरों के दुःख-दर्द को समझने, करुणा, दया और आपसी सहयोग की भावना को जागृत करती है।
- **अहंकार का शमन:** आचार्य जी के अनुसार, ज्ञान जब मूल्यों से विलग होता है, तो वह मनुष्य में अहंकार पैदा करता है। मूल्यपरक शिक्षा ज्ञान को विनम्रता (**"विद्या ददाति विनयम्"**) में बदलती है।

2. चरित्र निर्माण और नैतिक सुदृढ़ता (Character Building & Moral Integrity)

किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके नागरिकों का चरित्र होता है, न कि केवल उसकी आर्थिक संपन्नता।

- **प्रामाणिकता और ईमानदारी:** जीवन में विपरीत और चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी व्यक्ति अपने नैतिक सिद्धांतों से समझौता न करे, यह सामर्थ्य मूल्य आधारित शिक्षा से ही आता है।
- **भ्रष्टाचार और अपराधों पर रोक:** आज समाज में जो आर्थिक घोटाले या नैतिक पतन दिखाई दे रहे हैं, उनमें उच्च शिक्षित लोग शामिल हैं। यह सिद्ध करता है कि केवल साक्षरता काफी नहीं है; जब तक चरित्र निर्माण की शिक्षा नहीं दी जाएगी, तब तक अपराध मुक्त समाज की कल्पना असंभव है।

3. मानसिक संतुलन और आंतरिक शांति (Mental Well-being & Inner Peace)

आज के युवा अत्यधिक तनाव, अवसाद (Depression) और एकाकीपन से जूझ रहे हैं। इसका मुख्य कारण जीवन में आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का न होना है।

- **संतोष और धैर्य का विकास:** मूल्य आधारित शिक्षा छात्रों को यह सिखाती है कि जीवन की सफलता केवल भौतिक सुख-सुविधाओं या ऊंचे पदों में नहीं है। यह उन्हें

विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखना और मानसिक संतुलन खोने से बचाना सिखाती है।

- **आत्म-समीक्षा (Self-Introspection):** यह शिक्षा बालकों को आत्म-निरीक्षण करना सिखाती है, जिससे वे अपनी कमियों को पहचानकर खुद में सुधार कर सकें।

4. स्वस्थ पारिवारिक और सामाजिक जीवन हेतु (Social & Family Harmony)

वर्तमान में संयुक्त परिवारों का टूटना और वृद्ध माता-पिता की उपेक्षा जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ी हैं।

- **कर्तव्य बोध:** मूल्य आधारित शिक्षा बच्चों को उनके अधिकारों के साथ-साथ उनके कर्तव्यों का भी बोध कराती है। यह उन्हें माता-पिता, गुरुजनों और समाज के बुजुर्गों के प्रति आदरभाव रखना सिखाती है।
- **'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना:** आचार्य जी चाहते थे कि शिक्षा व्यक्ति को संकीर्ण स्वार्थों (जाति, मत, संप्रदाय) से ऊपर उठाकर पूरे विश्व को अपना परिवार मानने की उदारता दे।

5. राष्ट्र निर्माण और पर्यावरण चेतना (Nation Building & Eco-Consciousness)

एक सुसंस्कृत राष्ट्र का निर्माण केवल सुसंस्कृत नागरिकों द्वारा ही संभव है।

- **राष्ट्रीय गरिमा का भाव:** शिक्षा ऐसी हो जो छात्रों में अपनी संस्कृति, इतिहास और राष्ट्र के प्रति गौरव का भाव जगाए।
- **प्रकृति के प्रति कृतज्ञता:** मूल्य आधारित शिक्षा मनुष्य को प्रकृति का शोषक नहीं, बल्कि उसका रक्षक और पोषक बनना सिखाती है। बच्चों में बचपन से ही पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता पैदा करना इसका एक अनिवार्य अंग है।

6.3 NEP 2020 और आचार्य जी के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक विश्लेषण

1. 'साक्षरता' बनाम 'विद्या' (Character & Holistic Education)

- **NEP 2020 का दृष्टिकोण:** यह नीति स्पष्ट मानती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल संज्ञानात्मक (Cognitive) विकास या रोजगार पाना नहीं है, बल्कि चरित्र निर्माण

और नैतिक, तार्किक व संवेदनशील नागरिकों का निर्माण करना है। यह नीति 'रोट लर्निंग' (Rating system) को खत्म कर ज्ञान के व्यावहारिक बोध पर बल देती है।

- **आचार्य जी का दर्शन:** आचार्य जी ने हमेशा कहा कि केवल अक्षरों को रट लेना शिक्षा नहीं है। शिक्षा वह है जो व्यक्ति के विवेक को जाग्रत करे (**"विद्या ददाति विनयम्"**)। उन्होंने स्पष्ट चेतावनी दी थी कि नैतिक मूल्यों के बिना दी गई तीव्र बौद्धिक शिक्षा समाज के लिए घातक होती है। दोनों का ही मानना है कि शिक्षा का लक्ष्य 'इन्फॉर्मेशन' (Information) देना नहीं, बल्कि 'ट्रांसफॉर्मेशन' (Transformation) करना है।

2. 21 वीं सदी के कौशल और स्वावलंबन (Vocational Skills & Self-Reliance)

- **NEP 2020 का दृष्टिकोण:** इस नीति में कक्षा ६ से ही व्यावसायिक शिक्षा (Vocational Education) और कौशल विकास (Skills Development) को अनिवार्य करने की बात कही गई है, जिसमें स्थानीय शिल्पों और श्रम के सम्मान को बढ़ावा दिया जाएगा।
- **आचार्य जी का दर्शन:** आचार्य जी 'स्वावलंबी शिक्षा' के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि प्रत्येक बालक को शिक्षा के साथ-साथ किसी न किसी कुटीर उद्योग, हस्तशिल्प या व्यावहारिक कौशल का ज्ञान होना चाहिए ताकि वह आत्मनिर्भर बन सके। वे शिक्षा में श्रमदान को बहुत महत्व देते थे, जो NEP 2020 के व्यावहारिक कौशल वाले दृष्टिकोण से मेल खाता है।

3. मूल्य आधारित शिक्षा का समावेश (Value-Based Education)

- **NEP 2020 का दृष्टिकोण:** यह नीति नैतिक मूल्यों, मानवीय संवेदनाओं, संवैधानिक मूल्यों (जैसे- सेवा, अहिंसा, सच्चाई) और भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge Systems) को पाठ्यक्रम का मुख्य हिस्सा बनाने की वकालत करती है।
- **आचार्य जी का दर्शन:** आचार्य जी की पूरी 'युग निर्माण योजना' का आधार ही **मूल्यपरक शिक्षा** है। उन्होंने 'बाल संस्कार शालाओं' के माध्यम से व्यावहारिक स्तर पर बच्चों में ईमानदारी, संयम, सेवा और राष्ट्रप्रेम जैसे मूल्यों को रोपित करने का मॉडल दिया, जिसे आज नई शिक्षा नीति अपने स्कूल स्तर पर लागू करना चाहती है।

4. भारतीय संस्कृति, गौरव और मातृभाषा का महत्व

- **NEP 2020 का दृष्टिकोण:** प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या स्थानीय भाषा में रखने पर बल दिया गया है, ताकि बालक का स्वाभाविक मानसिक विकास हो सके। साथ ही, भारतीय संस्कृति और प्राचीन ज्ञान-विज्ञान के गौरव को पाठ्यक्रम में शामिल करने की बात कही गई है।
- **आचार्य जी का दर्शन:** आचार्य जी का मत था कि जो शिक्षा अपनी जड़ों, राष्ट्र की गौरवशाली संस्कृति और मातृभाषा से दूर करती है, वह व्यक्ति को आत्मकेंद्रित और हीनभावना से ग्रस्त बना देती है। उन्होंने भारतीय संस्कृति के वैज्ञानिक अध्यात्मवाद को बच्चों तक सरल भाषा में पहुँचाने का प्रयास किया।

5. मानसिक स्वास्थ्य और समग्र मूल्यांकन (Holistic Wellness)

- **NEP 2020 का दृष्टिकोण:** छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए परीक्षाओं के अत्यधिक तनाव को कम करने और केवल अंकों के आधार पर नहीं, बल्कि छात्र के व्यवहार, खेलकूद और सामाजिक कौशल के आधार पर **३६०-डिग्री समग्र रिपोर्ट कार्ड (Holistic Progress Card)** तैयार करने की बात कही गई है।
- **आचार्य जी का दर्शन:** आचार्य जी ने छात्रों के मानसिक संतुलन के लिए योग, प्राणायाम और गायत्री मंत्र के वैज्ञानिक उपयोग को आवश्यक बताया। उन्होंने विद्यालयों में शैक्षणिक अंकों के साथ-साथ छात्र के आचरण और सेवाभाव को मापने के लिए **'सदाचार अंक'** या 'संस्कार ग्रेडिंग' का सुझाव बहुत पहले दे दिया था।

6.4 विद्यालयी शिक्षा में प्रयोग की प्रमुख संभावनाएँ

आचार्य जी के दर्शन को आधुनिक विद्यालयों में बिना किसी भारी-भरकम बजट या अवसंरचना (Infrastructure) के, केवल कार्यपद्धति में सूक्ष्म बदलाव करके लागू किया जा सकता है। इसके मुख्य क्षेत्र निम्नलिखित हैं:

1. दैनिक प्रार्थना सभा का सुदृढ़ीकरण (Refinement of Morning Assembly)

प्रार्थना सभा केवल एक औपचारिकता न होकर छात्र के मानसिक परिष्कार का केंद्र बन सकती है:

- **सामूहिक मंत्रोच्चार और ध्यान:** विद्यालय की शुरुआत ५ मिनट के गायत्री मंत्रोच्चार या लघु ध्यान (Meditation) से की जा सकती है। वैज्ञानिक शोधों से सिद्ध हुआ है कि इससे छात्रों की मानसिक एकाग्रता और सीखने की क्षमता (Learning Capacity) बढ़ती है।
- **सद्वाक्य चिंतन:** प्रतिदिन सुबह किसी एक नैतिक सूक्ति (Quote) पर २ मिनट का सामूहिक चिंतन या किसी छात्र द्वारा उस पर लघु विचार प्रस्तुत करने की व्यवस्था।

2. सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में 'बाल संस्कार शाला' मॉडल का एकीकरण

विद्यालयों में शनिवार के 'नो बैग डे' (No Bag Day) या सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों (Co-curricular Activities) के समय को संस्कार शिक्षण के रूप में प्रयोग किया जा सकता है:

- **प्रेरक कहानी विधा (Storytelling):** इतिहास, विज्ञान और संस्कृति के महापुरुषों के प्रेरक प्रसंगों को दृश्यात्मक या नाटकीय (Role-play) रूप में प्रस्तुत करना।
- **जीवन-कौशल कार्यशालाएँ:** समय प्रबंधन (Time Management), व्यसन मुक्ति, और सादगी जैसे विषयों पर व्यावहारिक कार्यशालाओं का आयोजन।

3. परीक्षा प्रणाली में 'सदाचार अंक' या 'संस्कार ग्रेडिंग' (Holistic Assessment)

वर्तमान अंक-केंद्रित व्यवस्था के समानांतर एक ऐसी प्रणाली प्रयोग में लाई जा सकती है जो छात्र के चरित्र को मापे:

- **व्यवहार का मूल्यांकन:** छात्र का अपने सहपाठियों के प्रति व्यवहार, अनुशासन, बड़ों के प्रति आदर और विद्यालय की संपत्ति की सुरक्षा के प्रति जिम्मेदारी के आधार पर आंतरिक मूल्यांकन (Internal Assessment) में 'संस्कार ग्रेड' दिए जाएँ।
- **डायरी लेखन:** छात्रों को आत्म-समीक्षा (Self-Introspection) के लिए एक दैनिक डायरी लिखने की आदत डालना, जिससे वे स्वयं के व्यवहार का रोज सुधार कर सकें।

4. स्वावलंबन और श्रमदान के व्यावहारिक प्रयोग (Dignity of Labor)

आचार्य जी शारीरिक श्रम को संस्कार निर्माण का अभिन्न अंग मानते थे। विद्यालयों में इसके प्रयोग की निम्नलिखित संभावनाएँ हैं:

- **परिसर स्वच्छता में सहभागिता:** सप्ताह में एक बार छात्र अपनी कक्षा या विद्यालय परिसर के किसी हिस्से की सफाई स्वयं करें। इससे उनके भीतर से काम के छोटे-बड़े होने का अहंकार समाप्त होगा।
- **विद्यालय उद्यान (School Gardening):** छात्रों को पौधारोपण और उनकी देखरेख का जिम्मा सौंपना। यह प्रयोग उनमें पर्यावरण चेतना (Eco-consciousness) और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता का भाव जगाएगा।

5. 'ईमानदारी की दुकान' और नैतिक परीक्षण (Practical Integrity Labs)

किताबों में ईमानदारी पढ़ाने के बजाय विद्यालय परिसर में इसके व्यावहारिक प्रयोग किए जा सकते हैं:

- **बिना दुकानदार का काउंटर:** विद्यालय में एक ऐसा स्थान जहाँ छात्र बिना किसी की निगरानी के स्वयं पैसे बॉक्स में डालकर जरूरत की सामग्री (पेंसिल, इरेज़र आदि) ले सकें। यह प्रयोग छात्रों में 'प्रामाणिकता' (Integrity) के गुण को व्यावहारिक रूप से सुदृढ़ करता है।
- **परीक्षा में बिना निरीक्षक (Invigilator-free Exams) का प्रयोग:** उच्च कक्षाओं में प्रयोग के तौर पर बिना इनविजीलेटर के परीक्षा का आयोजन करना, जिससे छात्रों के आत्म-गौरव और ईमानदारी की परीक्षा हो सके।

6. शिक्षक-अभिभावक समन्वय (Parent-Teacher Synergy)

संस्कार निर्माण तब तक अधूरा है जब तक घर और स्कूल एक दिशा में काम न करें:

- **मातृ-पितृ पूजन दिवस:** विद्यालयों में ऐसे आयोजनों की प्रचुर संभावना है जहाँ बच्चे अपने माता-पिता का सम्मान करना सीखें, जिससे पारिवारिक जुड़ाव मजबूत हो।

- **अभिभावक प्रबोधन:** शिक्षक-अभिभावक बैठकों (PTM) में केवल बच्चों की कमियाँ बताने के बजाय घर के वातावरण को सुसंस्कृत बनाने के लिए आचार्य जी के 'पारिवारिक पंचशील' सिद्धांतों पर चर्चा करना।

6.5 समावेशी शिक्षा में योगदान (Contribution to Inclusive Education)

आधुनिक संदर्भ में समावेशी शिक्षा का अर्थ केवल शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों को मुख्यधारा में शामिल करना माना जाता है, लेकिन आचार्य जी का 'समावेशी मॉडल' इससे कहीं अधिक व्यापक था। उन्होंने **जाति, लिंग, आर्थिक स्तर और सामाजिक विषमताओं के भेदों को मिटाकर** शिक्षा को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने का कार्य किया।

क) नारी शिक्षा और महिला सशक्तिकरण (Gender Inclusivity)

- **वेदाधिकार और ज्ञान का समान हक:** तत्कालीन रूढ़िवादी समाज में जहाँ महिलाओं को कई धार्मिक और शैक्षिक अधिकारों से वंचित रखा गया था, आचार्य जी ने डंके की चोट पर घोषणा की कि नारी को शिक्षा और अध्यात्म का पुरुषों के बराबर ही अधिकार है।
- **कन्या गुरुकुलों की स्थापना:** उन्होंने कन्याओं की उच्च शिक्षा और संस्कार निर्माण के लिए विशेष शिक्षण संस्थानों और पीठों की स्थापना की, ताकि वे समाज का कुशल नेतृत्व कर सकें।

ख) वंचित और पिछड़े वर्गों का शैक्षिक उत्थान (Social Inclusivity)

- **ज्ञान का लोकतंत्रीकरण:** आचार्य जी ने शिक्षा को महलों या विशिष्ट वर्गों की बपौती से निकालकर झुग्गी-झोपड़ियों और ग्रामीण अंचलों तक पहुँचाया।
- **बाल संस्कार शालाओं का जाल:** उन्होंने बिना किसी भेदभाव के समाज के सबसे निर्धन बच्चों के लिए मोहल्लों में 'बाल संस्कार शालाएँ' शुरू कीं, जहाँ हर जाति और वर्ग के बच्चे एक साथ बैठकर शिक्षा और संस्कार ग्रहण करते हैं।

ग) वैज्ञानिक अध्यात्मवाद द्वारा सार्वभौमिकता (Universal Appeal)

- उन्होंने शिक्षा को किसी संकीर्ण मत या संप्रदाय से नहीं जोड़ा, बल्कि उसे **'वैज्ञानिक अध्यात्म' (Scientific Spirituality)** के रूप में प्रस्तुत किया, जिसे किसी भी धर्म, देश या संस्कृति का बालक सहजता से अपना सकता है।

6.6 जीवनोपयोगी शिक्षा में योगदान (Life-Oriented Education / Art of Living)

आचार्य जी वर्तमान शिक्षा पद्धति के इस दोष के कड़े आलोचक थे कि यह केवल **'इन्फॉर्मेशन' (Information)** देती है, **'लाइफ स्किल्स' (Life Skills)** नहीं। उन्होंने एक ऐसी शिक्षा पद्धति का प्रतिपादन किया जो छात्र को 'पेट पालने की कला' के साथ-साथ 'जीवन जीने की कला' भी सिखाए।

क) स्वावलंबन और कुटीर कौशलों का विकास (Self-Reliance)

- **श्रम निष्ठा:** आचार्य जी के शिक्षा मॉडल में 'श्रमदान' अनिवार्य घटक है। उनका मानना था कि डिग्रीधारी युवाओं में शारीरिक श्रम के प्रति हीनभावना नहीं होनी चाहिए।
- **हस्तशिल्प और उद्योग:** उन्होंने विद्यालयों और संस्थानों में पढ़ाई के साथ-साथ सिलाई, बुनाई, गो-पालन, कृषि, और लघु उद्योगों के प्रशिक्षण की वकालत की ताकि युवा केवल नौकरियों के भरोसे न रहकर स्वयं रोजगार निर्माता (Entrepreneur) बन सकें।

ख) पंचकोश साधना का व्यावहारिक स्वरूप (Holistic Wellness)

आचार्य जी ने प्राचीन उपनिषदों की 'पंचकोश साधना' को शिक्षा के व्यावहारिक पाठ्यक्रम में बदला, जो छात्र के जीवन को हर स्तर पर उपयोगी बनाता है:

1. **अन्नमय कोश:** खेल-कूद, योग और सात्विक आहार द्वारा शरीर को निरोगी और बलवान बनाना।
2. **प्राणमय कोश:** प्राणायाम के द्वारा जीवनी शक्ति और कर्मशीलता को बढ़ाना।

3. **मनोमय कोश:** विचारों की शुद्धि, एकाग्रता और मानसिक संतुलन (Mental Health) का विकास।
4. **विज्ञानमय कोश:** विवेक, निर्णय क्षमता और सही-गलत को परखने वाली प्रज्ञा को जाग्रत करना।
5. **आनंदमय कोश:** जीवन को बिना किसी तनाव के उल्लास और आंतरिक शांति के साथ जीना सिखाना।

ग) संकट प्रबंधन और विपरीत परिस्थितियों में धैर्य (Crisis Management)

- जीवनोपयोगी शिक्षा का एक बड़ा उद्देश्य छात्र को मानसिक रूप से इतना सुदृढ़ बनाना है कि वह परीक्षाओं में विफलता या जीवन के उतार-चढ़ाव में हताश होकर आत्महत्या जैसे आत्मघाती कदम न उठाए। आचार्य जी की शिक्षा छात्रों में **'अदम्य साहस' और 'जीजीविषा' (Will to live)** का संचार करती है।

6.7 शिक्षक प्रशिक्षण में आचार्य जी के विचारों की उपयोगिता

वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों (जैसे- B.Ed., D.El.Ed., B.El.Ed.) में जहाँ केवल शिक्षण पद्धतियों (Pedagogy) और कक्षा प्रबंधन (Classroom Management) पर ध्यान दिया जाता है, वहाँ आचार्य जी का दर्शन शिक्षक के आंतरिक रूपांतरण और उसकी रोल-मॉडल भूमिका को सुदृढ़ करने में सहायक है। इसके मुख्य आयाम निम्नलिखित हैं:

1. शिक्षक के 'आदर्श व्यक्तित्व' का निर्माण **(Teacher as a Role Model)**

आचार्य जी का बुनियादी सिद्धांत था–**"उपदेश नहीं, आचरण।"** शिक्षक प्रशिक्षण में इस विचार की उपयोगिता निम्नलिखित है:

- **कथनी और करनी में एकता:** भावी शिक्षकों को यह सिखाना कि वे कक्षा में जो मूल्य (जैसे- समय की पाबंदी, ईमानदारी, अनुशासन) बच्चों को सिखाना चाहते हैं, उन्हें पहले स्वयं के जीवन में उतारना होगा।
- **व्यसन मुक्ति और सादगी:** प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों को मानसिक रूप से इतना परिपक्व बनाना कि वे किसी भी प्रकार के व्यसन (बुरी आदतों) से दूर रहें और सादगीपूर्ण जीवन जिएं, क्योंकि बच्चे शिक्षक के हर व्यवहार का अनुकरण करते हैं।

2. बाल मनोविज्ञान और संवेदनशीलता का विकास **(Child Psychology & Empathy)**

आधुनिक मनोविज्ञान बच्चों के व्यवहार को समझने की बात करता है, लेकिन आचार्य जी उसे **'आत्मीयता' (Spiritual Oneness)** से जोड़ते हैं:

- **अपनत्व का भाव:** शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाए कि वे छात्रों को केवल 'रोल नंबर' न समझें, बल्कि उनके साथ एक आत्मीय और संवेदनशील रिश्ता बनाएं।
- **भयमुक्त वातावरण:** आचार्य जी प्राचीन गुरुकुल पद्धति के अनुसार 'स्नेह और अनुशासन' के संतुलन पर बल देते थे। प्रशिक्षण में शिक्षकों को यह सिखाया जाए कि बिना शारीरिक या मानसिक दंड दिए, केवल प्रेम और समझदारी से बच्चों के व्यवहार को कैसे सुधारा जा सकता है।

3. **'**जीवन**-**विद्या**'** और मूल्यपरक शिक्षण पद्धतियों का प्रशिक्षण

शिक्षकों को केवल विषय पढ़ाना (Subject Matter) नहीं, बल्कि विषय के साथ मूल्यों को जोड़ना (Value Integration) सिखाया जाना चाहिए:

- **अंतर्निहित शिक्षण (Integrated Teaching):** विज्ञान, गणित या इतिहास पढ़ाते समय उसमें नैतिक और सामाजिक मूल्यों को कैसे पिरोया जाए, इसका व्यावहारिक प्रशिक्षण देना (जैसे–विज्ञान पढ़ाते समय पर्यावरण के प्रति कृतज्ञता सिखाना)।
- **बाल संस्कार शाला विधा का शिक्षण:** भावी शिक्षकों को प्रशिक्षण के दौरान यह सिखाया जाए कि वे खेल-कूद, कहानी (Storytelling), और नाटकों के माध्यम से बच्चों को रोचक तरीके से संस्कार कैसे दे सकते हैं।

4**) ।शिक्षकों** के लिए मानसिक स्वास्थ्य और तनाव प्रबंधन **(Stress Management)**

आज के समय में शिक्षक स्वयं अत्यधिक प्रशासनिक और मानसिक तनाव से गुजर रहे हैं, जिससे उनका प्रभाव बच्चों पर पड़ता है:

- **योग और आत्म-निरीक्षण:** शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में दैनिक योग, प्राणायाम और 'ध्यान' को शामिल किया जाए। इससे शिक्षकों की आंतरिक ऊर्जा, धैर्य (Patience) और मानसिक शांति बनी रहती है।

- **स्वाध्याय की आदत:** शिक्षकों में रोज कुछ अच्छा साहित्य पढ़ने की आदत विकसित करना, ताकि वे वैचारिक रूप से हमेशा समृद्ध और सकारात्मक रहें।

5. सामाजिक उत्तरदायित्व का बोध **(Social Responsibility)**

- आचार्य जी शिक्षक को एक नौकरीपेशा व्यक्ति नहीं, बल्कि **'राष्ट्र का भाग्य विधाता'** और समाज सुधारक मानते थे।
- शिक्षक प्रशिक्षण में इस विचार का उपयोग करके भावी शिक्षकों के भीतर यह गौरव भाव जगाया जा सकता है कि उनका काम केवल ६ घंटे स्कूल में पढ़ाना नहीं है, बल्कि एक सुसंस्कृत पीढ़ी का निर्माण करके राष्ट्र को मजबूत करना है।

सप्तम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

7.1 निष्कर्ष

7.2 परिकल्पनाओं का परीक्षण

7.3 शैक्षिक निहितार्थ

7.4 अध्ययन के सुझाव

7.5 शैक्षिक उपादेयता

7.6 भावी शोध हेतु सुझाव

सप्तम

निष्कर्ष एवं सुझाव

7.1 निष्कर्ष

7.1.1 जीवन परिचय सम्बन्धी

- पं० श्रीराम शर्मा आचार्य का भौतिक जन्म 20 सितम्बर 1911 ई० (आश्विन कृष्ण त्रयोदशी संवत् 1962) को ग्राम आंवलखेड़ा (आगरा) के एक जमींदार परिवार में हुआ था। परंतु, वे अपना वास्तविक (आत्मिक) जन्म वसंत पंचमी को मानते थे, क्योंकि इसी दिन 15 वर्ष की आयु में उनकी मार्गदर्शक सत्ता के प्रथम दर्शन हुए थे।
- इनकी माता का नाम श्रीमती दानकुंवरि देवी तथा पिता का नाम पं० रूपकिशोर शर्मा (प्रख्यात ज्योतिषी, वैद्य एवं तपस्वी) था। पिता का साया 12 वर्ष की अल्पायु में ही उठ जाने के कारण इनका पालन-पोषण माता की छत्रछाया में हुआ, जिनसे इन्हें त्याग और तपस्या के संस्कार बीज रूप में प्राप्त हुए।
- इन्होंने केवल प्राथमिक विद्यालय तक ही औपचारिक शिक्षा प्राप्त की थी। संस्कृत इन्हें पैतृक परंपरा से मिली, जबकि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जेल में लोहे के तसले पर कंकड़ से लिखकर इन्होंने स्वयं के प्रयास से अंग्रेजी, अन्य क्षेत्रीय भाषाओं और शब्दकोशों का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया।
- इनके सांसारिक गुरु पं० मदन मोहन मालवीय थे, जिन्होंने इन्हें यज्ञोपवीत संस्कार के साथ गायत्री मंत्र की दीक्षा दी। इनके आध्यात्मिक गुरु योगीराज स्वामी सर्वेश्वरानंद (दादा गुरु) थे, जिन्होंने इन्हें दिव्य प्रकाशपुंज के रूप में दर्शन देकर भारतीय संस्कृति के नवोन्मेष हेतु प्रचंड तप और पुरुषार्थ के मार्ग पर अग्रसर किया।
- इनका प्रथम विवाह सरस्वती देवी से हुआ (जिनसे तीन संतानें हुईं)। उनके अवसान के पश्चात दूसरा विवाह पूजनीया भगवती देवी शर्मा से हुआ (जिनसे दो संतानें

हुईं)। आचार्य जी गृहस्थ जीवन को संयम, सेवा और सहिष्णुता का 'तपोवन' मानते थे और अपनी पत्नी में मातृत्व की उदात्त गरिमा देखते थे।

- मात्र 12 वर्ष की आयु में 'बाल सेना' का गठन कर ये आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। राजनीतिक एवं क्रांतिकारी क्षेत्रों में इन्हें 'श्रीराम मत्त' के नाम से जाना जाता था। सत्याग्रह आंदोलन के दौरान पुलिस की बर्बर पिटाई से बेहोश होने के बावजूद इन्होंने अपने मुख से राष्ट्रीय ध्वज को गिरने नहीं दिया।
- इन्होंने श्रीकृष्णदत्त पालीवाल के 'सैनिक' समाचार पत्र में कंपोज़र, प्रूफ रीडर और लेखक के रूप में सक्रिय भूमिका निभाई। इनके द्वारा 'मत्तप्रलाप' शीर्षक से लिखे गए देशभक्ति गीतों और कविताओं ने पूरे देश (विशेषकर बंगाल) में क्रांति की ज्वाला फूंकी और सेनानियों का मनोबल बढ़ाया।
- स्वतंत्रता के पश्चात उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्रदत्त स्वतंत्रता सेनानी पेंशन (₹401) और अन्य ताम्रपत्र जैसी सुविधाओं को सहर्ष ठुकरा कर, उस राशि को देशहित और हरिजन सहायता कोष हेतु समर्पित कर दिया। इनके सम्मान में 29 जून 1991 को भारत सरकार ने एक रुपये का रंगीन डाक टिकट जारी किया।
- आचार्य जी एक प्रखर समाज सुधारक थे। उन्होंने समाज को खोखला करने वाली कुप्रथाओं जैसे–छुआछूत, जाति-पांति, बाल-विवाह, पर्दाप्रथा, सतीप्रथा, शिशु हत्या, खर्चीली शादियों और मृत्युभोज का तीखा विरोध किया।
- इन्होंने "नर-नारी एक समान" का युगांतरकारी सूत्र दिया। स्त्रियों के प्रति हीनता की ग्रंथि को मिटाकर उन्हें समाज में बराबरी का स्थान दिलाया तथा महिलाओं को यज्ञ व गायत्री साधना का वैदिक अधिकार पुनः प्रतिष्ठित कराया।
- एक विनम्र स्वयंसेवक के रूप में इन्हें महात्मा गांधी (साबरमती आश्रम), विनोबा भावे (पवनार आश्रम), मदन मोहन मालवीय, जवाहरलाल नेहरू और रवींद्रनाथ टैगोर जैसी युगप्रवर्तक हस्तियों के साथ काम करने, रहने और उनके उच्च गुणों को सीखने का अवसर मिला।
- लगभग 80 वर्ष तक संत, सुधारक और शहीद के रूप में अद्वितीय जीवन जीने के उपरान्त 2 जून 1990 ई० को गायत्री जयन्ती के पावन दिन आचार्य जी महासत्ता

में विलीन हो गए। आज भी वे प्रखर प्रज्ञा और सूक्ष्म रूप में अपने करोड़ों अनुयायियों का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

7.1.2 चयनित पुस्तकें सम्बन्धी

7.1.2.1 राष्ट्रभक्ति, क्रांति और इतिहास के गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा

- **आदर्शों की बलिवेदी पर जीवन पुष्प चढ़ाना सीखें (भाग-1 व 2) एवं शौर्य एवं पराक्रम के कीर्तिस्तंभ:** इन पुस्तकों का निष्कर्ष है कि भारत की स्वतंत्रता केवल समझौतों से नहीं, बल्कि वीर क्रांतिकारियों, बच्चों और किशोरों के प्राणपण संघर्ष और अदम्य साहस की नींव पर टिकी है. यह इतिहास के उन अनाम व विस्मृत नायकों को मुख्यधारा में लाता है जो हमारी साझी संस्कृति और सांप्रदायिक सौहार्द के प्रतीक हैं. आज की युवा पीढ़ी को सोशल मीडिया के आभासी नायकों से हटाकर इन वास्तविक देशभक्तों से जोड़ना और राष्ट्र प्रथम की भावना जगाना ही इसका मूल उद्देश्य है.

- **भारतीय इतिहास के कीर्ति स्तम्भ (भाग-1 व 2) एवं अनीति से जूझने वाले राष्ट्र को समर्पित शूरवीर:** इनका निष्कर्ष है कि राष्ट्र का निर्माण केवल शस्त्रों से नहीं, बल्कि तीक्ष्ण बुद्धि, कूटनीति, सुशासन और उच्च चरित्र से होता है (जैसे आचार्य चाणक्य और राजा टोडरमल). यह पुस्तकें संदेश देती हैं कि भौतिकता के पीछे भागने के बजाय चरित्र को सुंदर बनाना चाहिए और अन्याय व अनीति के विरुद्ध हमेशा तार्किक व संवैधानिक रूप से खड़े रहना चाहिए.

7.1.2.2 नैतिक शिक्षा, संस्कार और व्यावहारिक जीवन-मूल्य

- **नैतिक शिक्षा (भाग-1 व 2) एवं शिक्षण प्रक्रिया में सर्वांगपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता:** इन पुस्तकों का मुख्य निष्कर्ष यह है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को केवल एक 'कुशल अर्थोपार्जक जीव' (पैसा कमाने की मशीन) बनाना नहीं, बल्कि एक संवेदनशील और जिम्मेदार सामाजिक नागरिक बनाना है. यह आज के एकल परिवारों के विघटन, मानसिक तनाव और डिजिटल निर्भरता को दूर करने के लिए स्वतंत्र सोच (Critical Thinking), संयुक्त परिवार प्रणाली और नैतिक संस्कारों को अनिवार्य मानती हैं. साथ ही, यह सामाजिक रूढ़ियों (जैसे बाल विवाह, मृत्युभोज)

पर प्रहार कर श्रम के सम्मान, महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण संरक्षण (वृक्षारोपण) पर बल देती हैं.

- **शिक्षा ही नहीं विद्या भी:** इसका निष्कर्ष है कि आधुनिक 'शिक्षा' हमें केवल जीविकोपार्जन या नौकरी के योग्य बनाती है, जबकि 'विद्या' वह आंतरिक प्रकाश है जो मनुष्य के भीतर विवेक, विनम्रता, करुणा और संस्कार जगाती है. मनुष्य को मशीन बनने से रोकने के लिए शिक्षा के साथ विद्या का होना अनिवार्य है.
- **समय का सदुपयोग:** समय ब्रह्मांड की सबसे सीमित पूँजी है. इसका निष्कर्ष है कि जीवन की सार्थकता समय के कुशल प्रबंधन और डिजिटल भटकाव (रील, सोशल मीडिया) से बचकर रचनात्मक कार्यों में समय लगाने से ही संभव है.
- **शिष्ट बनें सज्जन कहलायें एवं वेश भूषा शालीन ही रखिए:** इन पुस्तकों का निष्कर्ष है कि किसी भी व्यक्ति की वास्तविक पहचान उसके धन या डिग्रियों से नहीं, बल्कि उसकी वाणी, शिष्टाचार (Soft Skills) और शालीन वेशभूषा से होती है. शालीनता और सादगी व्यक्ति को दिखावे के मानसिक तनाव से मुक्त करती है और समाज में सम्मान दिलाती है.

7.1.2.3 वैश्विक महिला सशक्तिकरण और नेतृत्व

- **विश्व की महान नारियाँ (भाग-1, 2 व 3):** इन तीनों भागों का सामूहिक निष्कर्ष "प्रतिरोध, समता, करुणा और बौद्धिक चेतना" है. यह पुस्तकें दर्शाती हैं कि महिलाओं ने केवल गृहस्थी नहीं, बल्कि विज्ञान (मैडम क्यूरी), राजनीति (गोल्डा मेयर), शिक्षा, नर्सिंग (फ्लोरेंस नाइटिंगेल) और वैश्विक मानवाधिकारों के क्षेत्र में प्राकृतिक व सामाजिक बाधाओं को पार कर नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं. यह समाज को दिव्यांगों के प्रति सहानुभूति के बजाय 'समान अवसर' (Inclusion) देने और नस्लभेद से ऊपर उठकर मानवता की सेवा करने की सीख देती हैं.

7.1.2.4 सांस्कृतिक समरसता, अध्यात्म और सर्वधर्म समभाव

- **भारतीय संस्कृति के संरक्षक एवं संवर्धक (भाग-1) व धर्म संस्कृति के अग्रदूत:** इनका निष्कर्ष है कि भारत ने हमेशा 'ज्ञान और संस्कृति' (Soft Power) के माध्यम से विश्व को जोड़ा है. यह पुस्तकें अंधविश्वासों और पाखंडों का उन्मूलन

कर बुद्ध के 'मध्यम मार्ग' और गुरु नानक देव के 'लंगर व संगत' (समानता) के सिद्धांतों द्वारा सामाजिक समरसता स्थापित करने का संदेश देती हैं. अध्यात्म को कंदराओं से निकालकर दैनिक आचरण में उतारना (व्यवहार्य वेदांत) ही इसका मूल तत्व है.

- **मुस्लिम धर्मानुयायियों का अनुकरणीय चिंतन व चरित्र:** इस पुस्तक का मुख्य निष्कर्ष यह है कि भारत की राष्ट्रीय चेतना और साझी संस्कृति (गंगा-जमुनी तहज़ीब) के निर्माण में मुस्लिम मनीषियों, सूफी संतों और राष्ट्रवादियों का अतुलनीय योगदान रहा है. यह वर्तमान समाज को धार्मिक ध्रुवीकरण से बचाकर सांप्रदायिक सौहार्द, सहिष्णुता और सर्वधर्म समभाव का मार्ग दिखाती है.

7.1.2.5 मानसिक सुदृढ़ता, आत्मबल और समग्र स्वास्थ्य

- **मनोबल के धनी जिनकी विकलांगता वरदान बन गई (भाग-1) एवं जिजीविषा की धनी ये असामान्य प्रतिभाएँ:** इन पुस्तकों का निष्कर्ष है कि वास्तविक शक्ति मनुष्य के शरीर में नहीं, बल्कि उसकी मानसिकता और अदम्य इच्छाशक्ति में निहित होती है. शारीरिक अक्षमता या गरीबी कभी भी बौद्धिक और रचनात्मक ऊंचाइयों को छूने में बाधा नहीं बन सकती (जैसे हेलन कीलर, लुई ब्रेल). यह समाज को दिव्यांगों के प्रति 'चैरिटी मॉडल' से हटकर उनके 'अधिकार और गरिमा' को पहचानने की प्रेरणा देती हैं.

- **जीवट एवं संकल्पशक्ति के धन पराक्रमी व्यक्तित्व:** इसका निष्कर्ष है कि इतिहास का निर्माण भौतिक संसाधनों से नहीं, बल्कि इंसानी हौसलों से होता है. यह युवाओं को विकट परिस्थितियों में भी हार न मानने और लीक से हटकर सोचने (Out-of-the-box thinking) की प्रेरणा देता है.

- **बुद्धि बढ़ाने की वैज्ञानिक विधि:** आधुनिक न्यूरोप्लास्टिसिटी के सिद्धांतों के आधार पर इसका निष्कर्ष है कि बुद्धि स्थिर नहीं है; सही वैज्ञानिक अभ्यासों (प्राणायाम, ध्यान, त्राटक) के माध्यम से एकाग्रता और तार्किक क्षमता को बढ़ाया जा सकता है, जो आज के स्क्रीन-टाइम और मानसिक भटकाव के दौर में बेहद जरूरी है.

- **ब्रह्मचर्य जीवन की अनिवार्य आवश्यकता:** इसका निष्कर्ष है कि ब्रह्मचर्य कोई रूढ़िवादी बंधन नहीं, बल्कि अपनी मानसिक और शारीरिक ऊर्जा के नियंत्रण व

ऊर्ध्वगमन (Energy Channelization) का विज्ञान है, जो युवाओं को अश्लीलता के डिजिटल भटकाव से बचाकर फौलादी इच्छाशक्ति और ओजस्वी स्वास्थ्य प्रदान करता है.

- **समग्र स्वास्थ्य संवर्धन कैसे? एवं स्वस्थ रहने के सरल उपाय:** इनका निष्कर्ष 'बचाव ही इलाज है' (Prevention is better than cure) पर आधारित है. स्वास्थ्य का मतलब केवल बीमारी से मुक्त होना नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ होना है. दिनचर्या में छोटे-छोटे प्राकृतिक बदलाव करके महंगी दवाओं के बोझ और आधुनिक लाइफस्टाइल बीमारियों (मोटापा, तनाव) से बचा जा सकता है.

7.1.2.6 प्रेरणाप्रद प्रसंग, कला और विचार-दर्शन

- **महापुरुषों की जीवनियाँ एवं महापुरुषों के अविस्मरणीय जीवन प्रसंग (भाग-1):** इनका निष्कर्ष है कि कठिन समय में महापुरुषों के जीवन के वास्तविक त्याग और सत्यनिष्ठा के प्रसंग ही हमारे लिए सच्चे रोल मॉडल हैं. ये प्रसंग युवाओं को हताशा से निकालकर आत्म-निरीक्षण करने और जीवन को एक बड़ा उद्देश्य देने की ऊर्जा भरते हैं.

- **मानवता को विश्वबंधुत्व का मंत्र देने वाले सृजन शिल्पी:** इसका निष्कर्ष संकुचित राष्ट्रवाद और सीमाओं से परे जाकर संपूर्ण पृथ्वी को एक परिवार मानने वाली 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और वैश्विक नागरिकता (Global Citizenship) की भावना को मजबूत करना है, जो आज के भू-राजनीतिक तनावों और युद्ध के दौर में वैश्विक शांति के लिए अनिवार्य है.

- **संगीत सौरभ (भाग-3):** इसका निष्कर्ष है कि संगीत केवल सतही मनोरंजन या उत्तेजना का साधन नहीं, बल्कि आत्म-कल्याण और लोक-कल्याण का माध्यम है. प्रज्ञा गीतों के माध्यम से शुष्क उपदेशों के स्थान पर सरस ढंग से सामाजिक कुरीतियों (नशा, दहेज) पर प्रहार करना और चरित्र परिष्कार करना इसका लक्ष्य है.

- **मित्र भाव बढ़ाने की कला:** इसका निष्कर्ष है कि सोशल मीडिया के इस दौर में लोग वर्चुअली हजारों लोगों से जुड़े हैं, लेकिन व्यावहारिक जीवन में अकेलेपन और अवसाद

के शिकार हैं. अपने भीतर सहानुभूति और निःस्वार्थ भाव जगाकर वास्तविक मित्र बनाना ही मानसिक स्वास्थ्य का असली समाधान है.

- **देखन मैं छोटे लगें घाव करे गंभीर (भाग 1 से 4):** इसका निष्कर्ष है कि जीवन में किसी भी छोटी आदत (जैसे जंक फूड, देर से जागना), वाणी के प्रयोग या सोशल मीडिया पर की गई एक छोटी सी टिप्पणी के दूरगामी और गंभीर परिणाम होते हैं. इसलिए जीवन के सूक्ष्म पक्षों के प्रति हमेशा सजग रहना चाहिए.

एक वाक्य में निष्कर्ष: पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी का यह संपूर्ण साहित्य मनुष्य के भीतर **'देवत्व के जागरण'**, समाज के **'नवनिर्माण'**, अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़कर **'वैज्ञानिक व तार्किक सोच अपनाने'** तथा संपूर्ण विश्व में **'वैश्विक भाईचारे व शांति'** की स्थापना का एक संपूर्ण और व्यावहारिक खाका प्रस्तुत करता है.

7.2 परिकल्पनाओं का परीक्षण (Testing of Hypotheses)

शोध के विशिष्ट उद्देश्यों की पूर्ति और पूर्व-निर्धारित मान्यताओं की पुष्टि के लिए इस शोध कार्य में निर्मित की गई विशिष्ट एवं मुख्य परिकल्पनाओं का तार्किक एवं विश्लेषणात्मक परीक्षण निम्न प्रकार से किया गया है:

7.2.1 मुख्य परिकल्पना का परीक्षण (Testing of Main Hypothesis)

परिकल्पना: पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण संबंधी विचार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मूल्यपरक शिक्षा, चरित्र निर्माण और बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रभावी एवं प्रासंगिक हैं।

- **परीक्षण एवं विश्लेषण:** इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु आचार्य जी के 'वांग्मय' (साहित्य) और वर्तमान प्राथमिक/माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। आज की शिक्षा पद्धति जहाँ केवल बौद्धिक और व्यावसायिक दक्षता पर बल देती है, वहीं आचार्य जी का दर्शन 'होलिस्टिक डेवलपमेंट' (Holistic Development) यानी शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास को अनिवार्य मानता है। वर्तमान समय में बढ़ती अनुशासनहीनता और नैतिक संकट (Moral Crisis) को दूर करने में उनके द्वारा प्रतिपादित 'संस्कार निर्माण' की प्रक्रिया पूर्णतः प्रभावी सिद्ध होती है।

- **निष्कर्ष:** अतः तार्किक साक्ष्यों और विश्लेषणात्मक अध्ययन के आधार पर यह **मुख्य परिकल्पना पूर्णतः सत्य एवं स्वीकृत** पाई जाती है।

7.2.2 विशिष्ट परिकल्पनाओं का परीक्षण (Testing of Specific Hypotheses)

विशिष्ट परिकल्पना - 1

- **परिकल्पना:** पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा संबंधी विचार बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक हैं।
- **परीक्षण एवं विश्लेषण:** आचार्य जी के विचारों के अनुसार बाल शिक्षा केवल अक्षरों का ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। उन्होंने बालकों के शारीरिक विकास (खेलकूद, योग), मानसिक विकास (सद्साहित्य) और आत्मिक विकास पर समान रूप से बल दिया है।
- **निष्कर्ष:** उनके साहित्य के गुणात्मक विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि उनके विचार बालकों के चहुंमुखी विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। अतः **यह परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।**

विशिष्ट परिकल्पना - 2

- **परिकल्पना:** संस्कार निर्माण संबंधी उनके सिद्धांत बालकों के चरित्र निर्माण और नैतिक विकास में सकारात्मक भूमिका निभाते हैं।
- **परीक्षण एवं विश्लेषण:** आचार्य जी ने सत्य, संयम, सहिष्णुता, सेवा और देशभक्ति जैसे शाश्वत मूल्यों को बाल शिक्षा का आधार माना है। वर्तमान समाज में जहाँ चारित्रिक पतन एक बड़ी चुनौती है, वहाँ उनके द्वारा सुझाए गए व्यावहारिक उपाय (जैसे दैनिक प्रार्थना, स्वाध्याय) बच्चों में नैतिक बोध जगाते हैं।
- **निष्कर्ष:** अतः तार्किक विवेचन के आधार पर यह **परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है।**

विशिष्ट परिकल्पना - 3

- **परिकल्पना:** परिवार को प्रथम विद्यालय और माता-पिता को प्रथम शिक्षक मानने का उनका दृष्टिकोण बाल संस्कार निर्माण में प्रभावी है।
- **परीक्षण एवं विश्लेषण:** इस परिकल्पना के परीक्षण के लिए आचार्य जी के गृह-परिवार परिष्कार संबंधी सिद्धांतों का अध्ययन किया गया। बालक सबसे पहले

अनुकरण अपने माता-पिता से सीखता है। यदि परिवार का वातावरण संस्कारयुक्त और अनुशासित होगा, तो बालक का व्यक्तित्व स्वतः ही संतुलित बनेगा।

- **निष्कर्ष:** प्राथमिक समाजीकरण के सिद्धांतों के अनुकूल होने के कारण यह **परिकल्पना पूर्णतः स्वीकृत है।**

विशिष्ट परिकल्पना - 4

- **परिकल्पना:** विद्यालय को संस्कार निर्माण की प्रयोगशाला बनाने की अवधारणा वर्तमान शिक्षा में मूल्य संकट के समाधान हेतु उपयोगी है।
- **परीक्षण एवं विश्लेषण:** आचार्य जी की यह अवधारणा कि विद्यालयों में केवल किताबी ज्ञान न देकर सामूहिक गतिविधियां, सेवा कार्य, स्वच्छता अभियान और योग कराया जाना चाहिए, वर्तमान समय के 'मूल्य संकट' (Value Crisis) का सटीक समाधान है। इससे छात्रों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना पैदा होती है।
- **निष्कर्ष:** शैक्षणिक प्रासंगिकता के आधार पर यह **परिकल्पना सत्य एवं स्वीकृत पाई गई है।**

विशिष्ट परिकल्पना - 5

- **परिकल्पना:** बाल संस्कार शालाओं, प्रज्ञा शिशु मंदिरों तथा अन्य कल्याणकारी प्रयासों बालकों में नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के विकास में प्रभावी हैं।
- **परीक्षण एवं विश्लेषण:** इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु देश-विदेश में चल रही 'बाल संस्कार शालाओं' के व्यावहारिक परिणामों का अवलोकन और केस स्टडी (Case Study) पद्धति का उपयोग किया गया। इन शालाओं में आने वाले बच्चों में प्रार्थना, योग, नैतिक कथाओं और सामूहिक कार्यों के माध्यम से सकारात्मक व्यवहारपरक परिवर्तन देखे गए हैं।
- **निष्कर्ष:** व्यावहारिक और धरातलीय साक्ष्यों के आधार पर यह **परिकल्पना पूरी तरह सिद्ध होती है।**

विशिष्ट परिकल्पना - 6

- **परिकल्पना:** पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक विचार नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के मानव विकास, मूल्य शिक्षा और भारतीय ज्ञान परंपरा के उद्देश्यों के समकक्ष रहते हैं।

- **परीक्षण एवं विश्लेषण:** राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) मुख्य रूप से *Experiential Learning* (अनुभवात्मक अधिगम), *Value Education* (मूल्यपरक शिक्षा), *Indian Ethos* (भारतीय लोकाचार) और *Holistic Development* पर जोर देती है। आचार्य जी ने दशकों पहले अपने साहित्य में इन्हीं बिंदुओं को शिक्षा की आत्मा बताया था। दोनों के सिद्धांतों का वैचारिक समन्वय स्थापित करने पर इनमें अद्भुत समानता दिखाई देती है।
- **निष्कर्ष:** समकालीन नीतिगत साक्ष्यों के आधार पर यह **परिकल्पना पूर्णतः प्रमाणित और स्वीकृत होती है।**

विशिष्ट परिकल्पना - 7

- **परिकल्पना:** आचार्य जी के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण संबंधी विचार आधुनिक शिक्षा में बढ़ती अनुशासनहीनता, सुस्त जीवनशैली और डिजिटल प्रभाव की समस्याओं के समाधान में सहायक हैं।
- **परीक्षण एवं विश्लेषण:** आज के दौर में बच्चे स्क्रीन एडिक्शन (Digital Addiction) और मानसिक तनाव का सामना कर रहे हैं। आचार्य जी द्वारा प्रतिपादित दिनचर्या, शारीरिक श्रम, प्रकृति से जुड़ाव और आत्म-समीक्षा के सिद्धांत इन आधुनिक विकृतियों को नियंत्रित करने में एक व्यावहारिक 'Moral and Psychological Shield' का कार्य करते हैं।
- **निष्कर्ष:** वर्तमान युगीन समस्याओं के व्यावहारिक समाधान के रूप में यह **परिकल्पना भी स्वीकृत की जाती है।**

निष्कर्ष (Conclusion)

उपरोक्त समस्त परिकल्पनाओं के तार्किक, दार्शनिक और व्यावहारिक परीक्षण के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी की "कार्यवाहक परिकल्पना" (Working Hypothesis)–कि उनके विचार वर्तमान मूल्यपरक शिक्षा, चरित्र निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास के लिए एक सशक्त मार्गदर्शक हैं–**पूर्ण रूप से सत्य और प्रासंगिक सिद्ध होती है** यह शोध कार्य उनके विचारों की उपयोगिता को वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में अकादमिक और व्यावहारिक दोनों स्तरों पर पुष्ट करता है।

7.3 शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल साक्षर बनाना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण करना है। इस दृष्टि से अध्ययन के गहरे शैक्षिक निहितार्थ हैं:

7.3.1 समग्र एवं सर्वांगीण चरित्र निर्माण (Holistic & Value-Based Character Building)

- **संज्ञानात्मकता से परे आत्मिक विकास:** शिक्षा का अंतिम लक्ष्य केवल साक्षरता, परीक्षाओं में अंक लाना या सूचना प्रदाता (Information Provider) होना नहीं है। सच्ची शिक्षा वह है जो सूचना को व्यावहारिक बोध (Wisdom) में बदले, जिसे प्राचीन दर्शन में 'सा विद्या या विमुक्तये' (जो बंधनों और संकीर्णताओं से मुक्त करे) कहा गया है।
- **सद्गुणों का व्यावहारिक अभ्यास:** पाठ्यक्रम के अंतर्गत सज्जनता, ईमानदारी, शालीनता, त्याग और कर्तव्यनिष्ठा जैसे शाश्वत मानवीय मूल्यों को केवल सिद्धांतों के रूप में रटाने के बजाय व्यावहारिक जीवन में उतारने (Experiential Learning) पर बल दिया जाना चाहिए।

7.3.2 समावेशी शिक्षा और सामाजिक संवेदनशीलता (Inclusive Education & Social Sensitivity)

- **विविधता का समावेशन:** इतिहास और नागरिक शास्त्र के शिक्षण में बहुसांस्कृतिक उपागम (Multicultural Approach) होना चाहिए, जहाँ समाज के हर वर्ग, समुदाय और हाशिए पर मौजूद विभूतियों (विशेषकर महिलाओं और विभिन्न क्षेत्रों के सेनानियों) के सामूहिक योगदान को सम्मान मिले।
- **विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के प्रति संवेदनशीलता:** डोरीना या लुई ब्रेल जैसे महापुरुषों के जीवंत उदाहरणों से सामान्य छात्रों और शिक्षकों में सहानुभूति (Empathy) विकसित होती है। यह क्लासरूम में विशेष बच्चों को अलग-थलग करने के बजाय उन्हें मुख्यधारा में शामिल करने और ब्रेल, ऑडियो टूल्स जैसे शिक्षण-सहायक नवाचारों के उपयोग को बढ़ावा देता है।

7.3.3 मानसिक दृढ़ता, आंतरिक संकल्प और लचीलापन (Developing Grit & Resilience)

- **विकासवादी मानसिकता (Growth Mindset):** विपरीत परिस्थितियों, शारीरिक सीमाओं या असफलताओं से डरने के बजाय छात्रों में अदम्य साहस और इच्छाशक्ति (Non-cognitive skills/Grit) का विकास करना शिक्षा मनोविज्ञान का अहम हिस्सा है।
- **आंतरिक नियंत्रण (Internal Locus of Control):** भाग्यवादिता या आलस्य को त्यागकर, समय का सदुपयोग करने और कड़ी मेहनत के प्रति आदर भाव जगाने से छात्र आत्मनिर्भर और स्व-अनुशासित (Self-Regulated) बनते हैं।

7.3.4 वैज्ञानिक दृष्टिकोण और खोजी प्रवृत्ति का विकास (Scientific Temper & Inquiry-Based Learning)

- **तार्किक और आलोचनात्मक चेतना (Critical Thinking):** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के अनुरूप, शिक्षण पद्धतियाँ ऐसी होनी चाहिए जो छात्रों को अंधविश्वासों से दूर रखकर प्रत्यक्ष अवलोकन, प्रयोग और साक्ष्यों (Empirical Evidence) के आधार पर ज्ञान प्राप्त करना सिखाएँ।
- **करके सीखना (Learning by Doing):** विज्ञान और प्रकृति के विषयों को रटने के स्थान पर व्यावहारिक गतिविधियों, माइंड मैपिंग और दृश्य-श्रव्य सामग्रियों के माध्यम से 'मस्तिष्क-अनुकूल शिक्षण' (Brain-Compatible Teaching) से जोड़ना चाहिए।

7.3.5 स्वास्थ्य, शारीरिक शिक्षा और ऊर्जा का ऊर्ध्वगमन (Health, Well-being & Sublimation of Energy)

- **स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क:** अस्वस्थ या सुस्त जीवनशैली (Sedentary Lifestyle) के शिकार बच्चों के लिए शारीरिक शिक्षा, योग, प्राणायाम, व्यक्तिगत स्वच्छता और संतुलित पोषण के प्रति जागरूकता को विद्यालय की दैनिक गतिविधियों का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

- **इंद्रिय-निग्रह और मानसिक एकाग्रता (Self-Restraint):** किशोरावस्था (Adolescence) के शारीरिक व हार्मोनल बदलावों के दौरान उत्पन्न होने वाली चंचलता या भटकाव को रोकने के लिए ब्रह्मचर्य (इंद्रिय-संयम) के सिद्धांतों का महत्व है। शिक्षक को छात्रों की इस जैविक ऊर्जा को खेल, कला, साहित्य और कठिन शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की ओर सकारात्मक रूप से मोड़ना (Channelize करना) सिखाना चाहिए।

7.3.6. कला, संवेगों का परिष्कार और आनंदमयी अधिगम (Emotional Intelligence & Joyful Learning)

- **IQ के साथ EQ का विकास:** शिक्षा का उद्देश्य केवल तार्किक बुद्धि बढ़ाना नहीं है, बल्कि संगीत, साहित्य और कला के माध्यम से छात्र के संवेगात्मक पक्ष (Affective Domain) को निखारना है।
- **तनाव मुक्ति और सौहार्द:** सरल भजनों, देशभक्ति गीतों या कलात्मक अभिव्यक्तियों के जरिए नैतिक मूल्यों को सिखाने से विद्यालय का वातावरण भयमुक्त, सहयोगात्मक और आनंदपूर्ण (Joyful Learning) बनता है, जिससे विद्यालयी स्तर पर होने वाली आक्रामकता या बुलिंग (Bullying) पर प्रभावी रोक लगती है।

7.3.7 शिक्षक की भूमिका का पुनरीक्षण एवं अनुकरणीय व्यवहार (Role Modeling & Professional Ethics)

- **प्रच्छन्न पाठ्यक्रम (Hidden Curriculum):** शिक्षक केवल एक सूचना प्रदाता नहीं बल्कि समाज का मार्गदर्शक और रोल मॉडल है। छात्र उसके उपदेशों से कम और उसके स्वयं के आचरण, शालीन वेशभूषा व व्यवहार से अधिक सीखते हैं।
- **आत्मीय वातावरण का सृजन:** कड़े नियमों, भय या शारीरिक दंड के स्थान पर प्रेम, आत्मीयता, सहयोगात्मक अधिगम (Collaborative Learning) और निरंतर सीखने की प्रवृत्ति (Lifelong Learning) के माध्यम से ही छात्रों के व्यवहार में स्थायी और सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

7.3.8 इतिहास और नागरिकता का जीवंत बोध (Active & Global Citizenship)

- **वैश्विक दृष्टिकोण (Global Outlook):** छात्रों को केवल क्षेत्रीय इतिहास तक सीमित न रखकर अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति, शांति शिक्षा (Peace Education) और मानवाधिकारों के प्रति जागरूक करना चाहिए, जो 'वसुधैव कुटुंबकम्' (वैश्विक नागरिकता) की भावना को पुष्ट करता है।
- **अंतर-विषयी दृष्टिकोण (Interdisciplinary Approach):** इतिहास, साहित्य, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण अध्ययन को एक साथ एकीकृत करके पढ़ाने से छात्र समाज की ऐतिहासिक और वर्तमान निरंतरता को एक समग्र दृष्टिकोण (Holistic Perspective) से देख पाते हैं।

निष्कर्ष (Core Essence)

सामूहिक रूप से, यह सामग्री भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) और आधुनिक राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) के उस साझा दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है जहाँ शिक्षा 'त्रि-आयामी' (Head, Heart, Hand) रूप में काम करती है–अर्थात बुद्धि को तीक्ष्ण करना (Head), संवेगों व मूल्यों को परिष्कृत करना (Heart), तथा व्यावहारिक, शारीरिक और व्यावसायिक कौशलों को सुदृढ़ करना (Hand)।

7.4 अध्ययन के सुझाव

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के विचारों और उनके द्वारा रचित वांग्मय में बाल शिक्षा, नैतिक मूल्यों और संस्कार निर्माण का अत्यंत सशक्त और व्यावहारिक चित्रण मिलता है। वर्तमान समय में शिक्षा को केवल परीक्षा-केंद्रित न होकर मूल्यपरक और संस्कारित होना चाहिए। इसलिए पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के शैक्षिक विचार आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। इस विषय पर अध्ययन करते समय अलग-अलग वर्गों के लिए निम्नलिखित सुझाव उपयोगी हो सकते हैं–

7.4.1 विद्यार्थियों के लिए अध्ययन-सुझाव

(क) संस्कार और जीवन-मूल्यों का आत्मसातीकरण

विद्यार्थियों को पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल साहित्य का अध्ययन केवल एक विषय के रूप में नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला के रूप में करना चाहिए। उनके साहित्य से निम्न मूल्यों को ग्रहण किया जा सकता है–

- मातृवत् परदारेषु (दूसरों के प्रति सम्मान)
- समय का सदुपयोग (दिनचर्या का अनुशासन)
- स्वावलंबन और आत्म-निर्भरता
- सत्यनिष्ठा और ईमानदारी
- सेवा भावना और परोपकार

(ख) व्यावहारिक शिक्षा और चरित्र निर्माण

विद्यार्थियों को उनके द्वारा सुझाए गए व्यावहारिक सूत्रों (जैसे- 'ऋषि चिंतन के सानिध्य में') को अपनी दैनिक गतिविधियों में शामिल करना चाहिए ताकि केवल बौद्धिक ही नहीं, बल्कि नैतिक और आत्मिक विकास भी हो सके।

7.4.2 शिक्षकों के लिए अध्ययन-सुझाव

क) मूल्य आधारित एवं संस्कारपरक शिक्षण

शिक्षकों को शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम और किताबी ज्ञान तक सीमित न रखकर उसे जीवन-निर्माण की प्रक्रिया से जोड़ना चाहिए। वे कक्षा में पंडित जी के विचारों के अनुरूप निम्न बिंदुओं पर चर्चा कर सकते हैं–

- नैतिक एवं मानवीय मूल्य
- महापुरुषों के प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से शिक्षण
- बच्चों में 'इमोशनल क्वेशंट' (EQ) और 'स्पिरिचुअल क्वेशंट' (SQ) का विकास

ख) **शिक्षण विधियों में बदलाव**

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार बालकों का मानस अत्यंत कोमल होता है, इसलिए शिक्षकों को–

- कहानी और नीति-कथाओं के माध्यम से शिक्षण देना चाहिए।
- गतिविधि-आधारित और सकारात्मक प्रोत्साहन (Positive Reinforcement) विधियों का प्रयोग करना चाहिए।
- डराने या डांटने के बजाय स्नेह और आत्मीयता से सिखाना चाहिए।

7.4.3 अभिभावकों (Parents) के लिए अध्ययन-सुझाव

(क) पारिवारिक वातावरण का परिष्कार

- पंडित जी का स्पष्ट मानना था कि "बच्चे वही सीखते हैं जो घर में देखते हैं।" इसलिए अभिभावकों के लिए सुझाव है कि–
- वे स्वयं का आचरण अनुकरणीय और आदर्श बनाएं।
- घर में 'बाल संस्कार शाला' जैसा पवित्र और ज्ञानवर्धक माहौल निर्मित करें।
- बच्चों को मोबाइल/तकनीक के अत्यधिक उपयोग से बचाकर महापुरुषों की कहानियां पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

7.4.4 प्रशासकों एवं शिक्षा-नीति निर्माताओं के लिए अध्ययन-सुझाव

(क) मूल्यपरक शिक्षा नीति का निर्माण

नीति निर्माताओं को शिक्षा व्यवस्था में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के विचारों को शामिल करना चाहिए जो विद्यार्थियों में–

- राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक गौरव की भावना जगाए।
- पाठ्यक्रम में 'बाल निर्माण' और 'संस्कार निर्माण' से जुड़ी व्यावहारिक कॉपियों या गतिविधियों को अनिवार्य स्थान दे।

(ख) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (Teacher Training)

शिक्षकों को ऐसे विशेष प्रशिक्षण दिए जाने चाहिए जिससे वे बच्चों के मनोविज्ञान को समझ सकें और प्राचीन गुरुकुलीय परंपरा तथा आधुनिक विज्ञान के समन्वय से बच्चों का सर्वांगीण विकास कर सकें।

7.5 शैक्षिक उपादेयता

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य भारतीय विचारकों में अपना एक विशिष्ट और युगांतरकारी स्थान रखते हैं। उनके द्वारा रचित वांग्मय और बाल निर्माण के सिद्धांत केवल सैद्धांतिक नहीं हैं, बल्कि वे व्यावहारिक जीवन से सीधे जुड़े हुए हैं। वर्तमान समय की यांत्रिक और परीक्षा-केंद्रित शिक्षा व्यवस्था में उनके शैक्षिक विचारों की उपादेयता निम्नलिखित प्रकार से विस्तारपूर्वक स्पष्ट की जा सकती है–

7.5.1 बालकों के सर्वांगीण विकास में सहायक

आधुनिक शिक्षा अक्सर केवल बौद्धिक विकास (IQ) पर ध्यान केंद्रित करती है, जबकि पंडित जी की शिक्षा पद्धति बालकों के बहुआयामी विकास पर बल देती है।

- यह विचार बच्चों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आत्मिक (सर्वांगीण) विकास का मार्ग प्रशस्त करता है।
- इसके अध्ययन से बच्चों में 'भावनात्मक गुणांक' (EQ) और 'आध्यात्मिक गुणांक' (SQ) का संतुलन बनता है।

7.5.2 नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का पुनरुत्थान

आज के भौतिकवादी और तकनीकी युग में बच्चों में मानवीय संवेदनाओं का ह्रास हो रहा है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के विचारों की शैक्षिक उपादेयता विद्यार्थियों में निम्न मूल्यों को विकसित करने में है–

- सदाचार और अनुशासन: दैनिक दिनचर्या को व्यवस्थित और अनुशासित करने की प्रेरणा।
- परहित भावना: स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज और राष्ट्र के प्रति सेवा की भावना जगाना।
- संवेदनशीलता: जीव मात्र के प्रति दया, करुणा और आत्मीयता का भाव पैदा करना।

7.5.3 सुसंस्कृत पारिवारिक और सामाजिक वातावरण के निर्माण में उपयोगी

पंडित जी का मानना था कि व्यक्ति से ही समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। इस शोध की उपादेयता समाज के लिए इस प्रकार है–

- अभिभावकों का मार्गदर्शन: यह अध्ययन माता-पिता को यह सिखाता है कि वे अपने आचरण को आदर्श बनाकर घर में 'संस्कार शाला' जैसा सकारात्मक वातावरण कैसे तैयार करें।
- कुरीतियों का उन्मूलन: बच्चों को बचपन से ही रूढ़ियों और सामाजिक बुराइयों से दूर रखकर एक प्रगतिशील सोच का नागरिक बनाने में यह दर्शन अत्यंत प्रभावी है।

7.5.4 व्यावहारिक एवं अनुभवजन्य शिक्षण विधियों का विकास

शिक्षकों और शिक्षाशास्त्रियों के लिए इस अध्ययन की महती शैक्षिक उपादेयता है। इसके माध्यम से शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है–

- रोचक शिक्षण शैलियाँ: डराने या रटाने के बजाय कहानी, नीति-कथाओं और प्रेरक प्रसंगों के माध्यम से बच्चों के मानस को प्रभावित करना।
- मनोवैज्ञानिक उपागम: बालक की कोमल प्रकृति और उसकी रुचि के अनुसार स्नेहपूर्ण वातावरण में शिक्षा देने की विधियों का विकास करना।

7.5.5 शिक्षक-विद्यार्थी संबंधों में आत्मीयता

प्राचीन गुरुकुलीय परंपरा को आधुनिक संदर्भ में ढालते हुए यह दर्शन शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच केवल व्यावसायिक संबंध न रखकर एक आत्मीय और पवित्र रिश्ता स्थापित करने पर बल देता है, जिससे कक्षा का वातावरण भयमुक्त और आनंदमय बनता है।

निष्कर्ष

अंततः कहा जा सकता है कि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का बाल शिक्षा और संस्कार निर्माण संबंधी दर्शन वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की कमियों को दूर करने का एक अचूक माध्यम है। उनका साहित्य विद्यार्थियों को कुशल, चरित्रवान और जिम्मेदार नागरिक बनाने

में; शिक्षकों को मार्गदर्शक की भूमिका निभाने में; और अभिभावकों को आदर्श वातावरण निर्मित करने में संजीवनी का कार्य करता है। इसलिए, आज के संक्रमण काल में इस विषय की शैक्षिक उपादेयता अत्यंत अनिवार्य, सामयिक और दूरगामी है।

7.6 भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध कार्य में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण संबंधी विचारों, उनके द्वारा रचित बाल साहित्य और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उनकी प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन इस क्षेत्र में अनेक नवीन शोध संभावनाओं को भी उद्घाटित करता है। भविष्य में इस विषय पर निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत विस्तृत शोध कार्य किया जा सकता है–

1. **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा संचालित 'बाल संस्कार शालाओं' के सामाजिक एवं व्यावहारिक प्रभाव का एक मूल्यांकनात्मक अध्ययन:**

- इसके अंतर्गत समाज के विभिन्न क्षेत्रों (शहरी और ग्रामीण) में चल रही संस्कार शालाओं से निकले बच्चों के व्यवहार, नैतिक स्तर और उनके अकादमिक प्रदर्शन पर पड़ने वाले दीर्घकालिक प्रभावों का सांख्यिकीय व गुणात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- आधुनिक युग की विसंगतियों (जैसे- डिजिटल लत, अवसाद और भटकाव) के निवारण में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल-साहित्य की भूमिका:
- वर्तमान समय में बच्चों में बढ़ती स्क्रीन-टाइम की लत, एकाकीपन और मानसिक तनाव को दूर करने में पंडित जी की प्रेरक कहानियों, 'बाल निर्माण की कहानियाँ' और उनके द्वारा सुझाए गए व्यावहारिक सूत्रों (जैसे- स्वावलंबन और समय का नियोजन) के प्रभाव पर प्रयोगात्मक शोध किया जा सकता है।

2. **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य एवं अन्य समकालीन विचारकों (जैसे- महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ टैगोर या स्वामी विवेकानंद) के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन:**

- इस शोध के माध्यम से यह पता लगाया जा सकता है कि चरित्र निर्माण, मातृभाषा में शिक्षा और बाल केंद्रित शिक्षा के संदर्भ में इन महान मनीषियों के विचारों में

क्या समानताएं हैं और पंडित जी ने प्राचीन गुरुकुलीय परंपरा को आधुनिक युग के अनुकूल बनाने के लिए कौन से विशिष्ट व्यावहारिक सूत्र दिए हैं।

3. पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के बाल निर्माण सिद्धांतों का वर्तमान 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' (NEP) के नैतिक एवं मूल्य-आधारित शिक्षा ढाँचे के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन:

- यह शोध इस बात पर केंद्रित हो सकता है कि वर्तमान शिक्षा नीति में जो 'सभ्य और संवेदनशील नागरिक' (Ethical and Global Citizens) तैयार करने का लक्ष्य रखा गया है, उसे प्राप्त करने में पंडित जी का वांग्मय किस प्रकार एक पूरक और व्यावहारिक पाठ्यक्रम मार्गदर्शिका के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

गोस्वामी, रे. (2025)। *युग ऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य और संत कबीर के साहित्य में सामाजिक चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन* (थीसिस नं. 703322) [पीएच.डी. शोध-प्रबंध, देव संस्कृति विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/703322

ढोके, अ. कु. (2017)। *समकालीन भारतीय दर्शन के परिप्रेक्ष्य में आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा का मूल्य ददर्शन* (थीसिस नं. 703907) [पीएच.डी. शोध-प्रबंध, देव संस्कृति विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/703907

लोधी, प्र. सिं. (2011)। *पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के चिंतन में व्यक्तित्व के संप्रत्यय एवं प्रारूप का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन* (थीसिस नं. 703895) [पीएच.डी. शोध-प्रबंध, देव संस्कृति विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/703895

चौधरी, कृ. (2009)। *आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा की ज्ञान मीमांसा : एक दार्शनिक अध्ययन* (थीसिस नं. 684842) [पीएच.डी. शोध-प्रबंध, देव संस्कृति विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/684842

पाल, मे. (2012)। *आचार्य श्रीराम शर्मा के साहित्य एवं साधना में मानव उत्कर्ष के विविध आयाम : एक विवेचनात्मक अध्ययन* (थीसिस नं. 684870) [पीएच.डी. शोध-प्रबंध, देव संस्कृति विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/684870

कुमार, आ. (2025)। *पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा स्थापित गायत्री परिवार में प्रबंधन के विविध आयाम: एक विवेचनात्मक अध्ययन* (थीसिस नं. 638031) [पीएच.डी. शोध-प्रबंध, देव संस्कृति विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/638031

निषाद, इ. (2011)। *पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा वर्णित मनोमय कोश की साधनाओं का किशोर व किशोरियों के मानसिक स्वास्थ्य व नेतृत्व क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन* (थीसिस नं. 637981) [पीएच.डी. शोध-प्रबंध, देव संस्कृति विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/637981

कुमार, वि. (2004)। *हिंदी पत्रकारिता में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का योगदान* (थीसिस नं . 549825) [पीएच.डी. शोध-प्रबंध, लखनऊ विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/549825

कुमार, र. (2022)। *विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के संदर्भ में श्रीराम शर्मा आचार्य एवं डॉ. सिगमंड फ्रायड के मनोवैज्ञानिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन* (थीसिस नं. 558193) [पीएच.डी. शोध-प्रबंध आई० ए० एस० ई० (मानित) विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/558193

कुमार, सं. (2022)। *वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का विश्लेषणात्मक अध्ययन: श्रीराम शर्मा आचार्य के विशेष संदर्भ में* (थीसिस नं .553342) [पीएच.डी. शोध-प्रबंध, आई० ए० एस० ई० (मानित) विश्वविद्यालय]। शोधगंगा। http://hdl.handle.net/10603/553342

Bihariya, N., & Bihariya, A. (2012). Impact of Pt. Shriram Sharma Acharya's education philosophy on value-orientation: A study. Dev Sanskriti Interdisciplinary International Journal, 1. http://dsiij.dsvv.ac.in/index

Singh, M., Singh, I. P., & Kumar, A. (2025). An analysis of the literature and life of Pandit Shriram Sharma Acharya Ji as cultural icon. Dev Sanskriti Interdisciplinary International Journal, 26.

http://edu.dsvv.ac.in/index

Yadav, G., & Bhardwaj, M. (2025). Development of empathy in adolescence: A psychological perspective. International Journal of Creative Research Thoughts, 13(6), c332-c335. https://www.ijcrt.org

सिंह, अ. कु. (2022)| केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन। अप्रकाशित [एम.एड. लघु शोध-प्रबन्ध, अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज]।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2016)। *नैतिक शिक्षा-प्रथम भाग* । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2016)। नैतिक शिक्षा- *द्वितीय* भाग । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2013)। *विश्व की महान नारियाँ-भाग-1* । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट ।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2011)। *विश्व की महान नारियाँ-भाग-2* । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2010)। *विश्व की महान नारियाँ-भाग-3* । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2010)। *मुस्लिम धर्मानुयायियों का अनुकरणीय* । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2012)। *छात्रों का निर्माण अध्यापक करें*। युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2010)। *शिक्षण प्रक्रिया में सर्वांगपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता* । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2011)। *धर्म संस्कृति के अग्रदूत* । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2010)। *जीवट एवं संकल्पशक्ति के धनी पराक्रमी व्यक्तित्व* । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2014)। *विज्ञान उपवन के महकते पुष्प* । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2010)। *शौर्य एवं पराक्रम के कीर्तिस्तंभ* । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2015)। *मनोबल के धनी जिनकी विकलांगता वरदान बन गई - भाग -1* । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2010)। *मानवता को विश्वबंधुत्व का मंत्र देने वाले सृजन शिल्ली* । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट ।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2011)। *आदर्शों की बलिवेदी पर जीवन पुष्प चढ़ाना सीखे* - भाग-01 । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2012)। *आदर्शों की बलिवेदी पर जीवन पुष्प चढ़ाना सीखे - भाग-02 ।* युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2012)। *भारतीय इतिहास के कीर्ति स्तम्भ-भाग-1* । युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2012)। *भारतीय इतिहास के कीर्ति स्तम्भ-भाग-02 ।* युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2011)। *भारतीय संस्कृति के संरक्षक एवं संवर्द्धक-भाग 0-1 ।* युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2010)। *अनीति से जूझने वाले राष्ट्र को समर्पित शूरवीर ।* युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

आचार्य, श्री राम शर्मा (2010)। *जिजीविषा की धनी ये असामान्य प्रतिभाएं।* युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट।

Shriram Sharma Acharya Official (ya News Portal ka naam). (2024, June 2) *Aavalkheda: 10,000+ Devotees Offer Oblations | Acharya Shriram Sharma Spiritual Birthday*. Google Share. https://share.google/0RaiJ87bYQktRaxQL

News18 हिंदी. (2021, June 2). *पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य: विचारों के परिवर्तन से क्रांति का सूत्रपात [Pandit Shriram Sharma Acharya: Change of thoughts initiates revolution]*. News18 हिंदी। https://share.google/hE6yqwF0AgJIXZgK6

Amar Ujala. (2024, June 3). *यूपी के आध्यात्मिक नक्शे पर होगा पंडित श्रीराम शर्मा की जन्मभूमि आंवलखेड़ा [Pandit Shriram Sharma's birthplace* Aavalkheda will be on the spiritual map of UP]. Amar Ujala. https://share.google/rg4SFWqIY3AHbwcMf

NDTV इंडिया. (2026, January 22). *'गायत्री परिवार' ने तोड़ीं रूढ़ियां, महिलाओं को दिया मंत्र का अधिकार : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह* ['Gayatri Pariwar' broke stereotypes, gave women the right to chant mantras: Union Home Minister Amit Shah]. NDTV इंडिया। https://share.google/JeaxXK82YHe4pUCvL

Gayatri Pariwar News. (2026, February 21). *Hands Gayatri Shakti Peeth celebrates Basant Parv Yagna for Pandit Shri Sharma Acharya.* Gayatri Pariwar News. https://share.google/rIEPL86KJtEUrVnUx

Dainik Jagran. (2026, June 7). *Gayatri Parivar: गायत्री परिवार के मुखिया आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा का जन्मदिन आज, आंवलखेड़ा से ये रहा उनका खास नाता।* https://share.google/Dsm8cC4Z0Kg1ChVBJ

Editorji Hindi. (2025, September 20). *Pandit Shriram sharma Biography: know age, career, death reason, Books & Know him Founder and Patron of All World Gayatri Pariwar in jharokha - Pandit Shriram sharma:* अंग्रेज मारते रहे पर श्रीराम शर्मा ने नहीं छोड़ तिरंगा। https://share.google/H7XnvyeNa0yK7wwTF

Hindustan Times. (2024, February 21). *Research chair set up in freedom fighter Pandit Shriram Sharma's name at MDU.* https://share.google/nNyanmexONsqU2OSe

Haryana News. (2026, June 7). *Sonipat Pandit Shriram Sharma Chowk Inauguration*. https://share.google/Jb0sLJVvzUS6bKR1m

Amar Ujala. (2026, June 7). *Objection to printing photo of Pandit Shriram* Sharma. https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/deoria/objection-to-printing-photo-of-pandit-shriram-sharma-deoria-news-gkp325912692

Pandit Shree Ram Sharma *Metro Station: Fact guide* https://share.google/x2ySt4w7HbO2oibdr

परिशिष्ट

I अध्ययन से सम्बन्धित समाचार, लेख इत्यादि

II जीवन वृत्त

परिशिष्ट ।

अध्ययन से सम्बन्धित समाचार, लेख इत्यादि



दैनिक भास्कर

On Google

हाथरस गायत्री शक्ति पीठ पर यज्ञ आयोजित: पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के जन्मदिन पर बसंत पर्व का आयोजन



दैनिक भास्कर

+Follow us

आचार्य श्रीराम शर्मा का आध्यात्मिक जन्मदिन आज: आंवलखेड़ा में 10 हजार से अधिक अनुयायी देंगे आहुति

NEWS18 हिंदी | शहर चुनें | Ask News18

TRENDING: RBI MPC Meeting | Muzaffarpur Hospital Fire | India

होम / ताजा खबर / साहित्य / पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य: विचारों के परि...

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य: विचारों के परिवर्तन से क्रांति का सूत्रपात

Author: पंकज शुक्ला | Jun 02, 2023, 22:29

Pandit Shriram Sharma Acharya: पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का साहित्य और उनका जीवन विचारों को प्रज्ज्वलित करने और स्वयं को बदलने की प्रेरणा देता है. उनके साहित्य और सूत्र वाक्यों को पढ़ना हमें चेतना से भरता है. जैसे, वे एक जगह लिखते हैं, जो बात अनुचित है, उसे हृदय में अनुचित ही मानिए. आप इसका त्याग नहीं कर पा रहे हैं, यह दूसरी बात है. चूंकि हम बीमार हैं, इसलिए बीमारी अच्छी चीज है, यह मानना या खुद समझना कोई बुद्धिमानी की बात नहीं है.

IANSlive™

'गायत्री परिवार' ने तोड़ीं रूढ़ियां, महिलाओं को दिया मंत्र का अधिकार : केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह

VARANASI NEWS | LUCKNOW NEWS | ISRAEL IRAN WAR | US ISRAEL IR

उत्तर प्रदेश
Uttar Pradesh

लाइव

ETV Bharat / State

यूपी के आध्यात्मिक नक्शे पर होगा पंडित श्रीराम शर्मा की जन्मभूमि आंवलखेड़ा

उत्तर प्रदेश की योगी सरकार ने आध्यात्मिक पर्यटन के लिए फंड देने की घोषणा की थी. सरकार की इस नीति के कारण आगरा के आंवलखेड़ा में भी विकास कार्य कराए जा रहे हैं. आंवलखेड़ा (Aanwalkheda Agra) गायत्री परिवार के संस्थापक पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य की जन्मस्थली (Pandit Shriram Sharma birth place) है, इस कारण यहां गायत्री परिवार से जुड़े लोगों का आना-जाना लगा रहता है.



Etv Bharat Pandit Shriram Sharma Aanwalkheda



जागरण सब्सक्राइब करें

होम ताज़ा ब्रेकिंग राष्ट्रीय दुनिया राशिफल बिज

बढ़ता यूपी IPL 2026 मिडिल ईस्ट संकट Jagran R

HINDI NEWS / UTTAR-PRADESH / AGRA-CITY

Gayatri Pariwar : गायत्री परिवार के मुखिया आचार्य पंडित श्रीराम शर्मा का जन्मदिन आज, आंवलखेड़ा से ये रहा उनका खास नाता



लाइव भारत खेल मनोरंजन लाइफ़स्टाइल

होम › एडिटरजी स्पेशल › Pandit Shriram sharma: अंग्रेज मारते र…

Pandit Shriram sharma: अंग्रेज मारते रहे पर श्रीराम शर्मा ने नहीं छोड़ा तिरंगा | Jharokha 20 September

Hindustan Times

Subscribe

Home E-Paper FIFA 2026 NEW Cricket India News World Ne

Research chair set up in freedom fighter Pandit Shriram Sharma's name at MDU

Haryana chief minister Nayab Singh Saini said the state government will organise essay, poem, and speech competitions in schools and colleges across the state on Sharma's birth anniversary, October 1. A 30-feet tall National Flag will be installed near the freedom fighter's statue in Rohtak.

दैनिक भास्कर

+Follow us

सोनीपत में पंडित शर्मा के नाम पर चौक का लोकार्पण: जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मोहनलाल बडोली रहे मौजूद

सोनीपत 8 महीने पहले

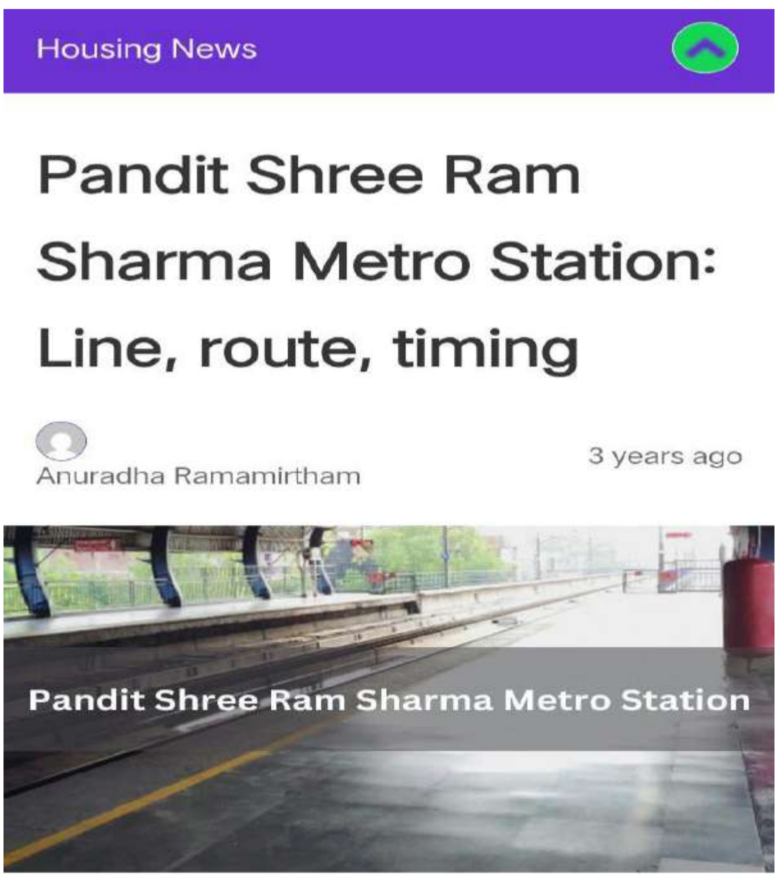


लेखक श्रीराम शर्मा की जगह गायत्री परिवार के श्रीराम शर्मा को पढ़ रहे नौंवी के छात्र

गोरखपुर ब्यूरो

Updated Thu, 17 Oct 2019 11:27 PM IST

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की फोटो छापने पर आपत्ति - फोटो : DEORIA



Housing News

Pandit Shree Ram Sharma Metro Station: Line, route, timing

Anuradha Ramamirtham

3 years ago

Pandit Shree Ram Sharma Metro Station

परिशिष्ट II

जीवन-वृत्त

व्यक्तिगत सूचना-



नाम- सुशील कुमार

पिता का नाम- श्री राज कुमार

माता का नाम- श्रीमती राज कुमारी

जन्म-तिथि-10/12/2002

सम्पर्क सूत्र- 8840943835

ई-मेल- sushilkumarsahu0111@gmail.com

पता- शिवानी पैलेस के बगल में, सागर रोड, भरुआ सुमेरपुर (हमीरपुर)

शैक्षिक योग्यता-

क्र.सं.	योग्यता	बोर्ड / विश्वविद्यालय	विद्यालय/ महाविद्यालय	वर्ष	श्रेणी
1.	हाईस्कूल	UP Board	St. poul's Inter college Maudaha	2017	I
2.	इण्टरमीडिएट	CBSC Board	Happy Home English school	2019	I
3.	B.EL.Ed.	Amity University	Amity University	2023	I
4.	एम.ए. (राजनीतिक विज्ञान)	BU jhansi	Govt. P. G college Hamirpur (up)	2025	I
5.	एम. एड.	BU jhansi	ADC college Atarra (Banda)	....	... .

कौशल/रुचियाँ-

शिक्षण कार्य, खेल कूद (बैट मिटंन, खो-खो), कम्प्यूटर चलाना इत्यादि

Published Book

S. No	Topic	Year	Page no.	ISBN	Website
1	बाँदा की ऐतिहासिक विरासतों के प्रति महाविद्यालयीन विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन	2026	250	978-93-5679-591-4	https://archive.org/details/sushil-isbn-final

दिनाँक- **हस्ताक्षर**

स्थान– भरुआ सुमेरपुर

(सुशील कुमार)

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का बाल शिक्षा एवं संस्कार निर्माण में योगदानः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन



❝ वही लोग सच्चे साहसी होते हैं जो बुरी परिस्थितियों में भी कभी निराश नहीं होते हैं। ❞

- श्रीराम शर्मा



 मूल्यः ₹112

ISBN 978-93-5937-222-8

www.sitioin

9 789359 372228